मोहिनी विद्या

अर्थात्

❀ मेसमेरिजम ❀

श्री गोपालराम गहमर निवासी

सङ्कलित ।

प्रथम वार
२००० प्रति

१९३६ ई०

मूल्य २)

पुस्तकें मिलने का पता:—

राजस्थान गहली

सम्पादक—
श्री गोपालराम गहमर
बनारस सिटी।

मुद्रक—
सहादुरराम
हितैषी प्रिंटिंग वर्क्स, बनारस।

मोहिनी विद्या

अर्थात्

मेसमेरिजम

अवतरणिका ।

अब हमारे देश में भी लोग इतने शिक्षित और समझदार हो गये हैं कि कोई धूर्त्त या ठग हाथ की सफ़ाई या और किसी लाग अथवा उपाय से कुछ अद्भुत कार्य्य करके अपनी करामात दिखला देता है तो उसे देखते ही लोग दूजा ईश्वर या सर्वजानता ऋषि मुनि समझ कर आस्मान से नहीं गिरते। बल्कि विचारने लगते हैं कि किस कारण ऐसा हुआ है। अब यह भी लोग जानने लगे हैं कि ईश्वरांश आत्मा में सब कुछ शक्ति है। आननरहित सकल रस भोगी, बिन बाणी वक्ता बड़ योगी, बिन पद चलै सुनै बिन काना, कर बिन कर्म्म करै विधि नाना ॥ तन बिन परस नयन बिन देखा। ग्रहै घ्राण बिन बास अशेषा ॥ यह सब विशेषण जिस जगत पिता परमात्मा के हैं उसकी खोज में न जाकर पहले अपनी आत्मा को जानने समझने और पहचानने पर ही उसके अनुपम बल और अतुलित शक्ति का पता चल जाता है। जो लोग आत्म शक्ति का अध्ययन करते और उसमें लगे रहते हैं वही स्वयम् इस आत्म-शक्ति के उज्ज्वल प्रमाण हैं। ऐसे खोजियों को जब आध्यात्म विद्या के निपुण आत्म शक्ति सम्पन्न महात्माओं का दर्शन मिल

जाता है तब उनके अलौकिक कार्य्य देख कर समझा जाता है कि आदमी इस विद्या से क्या नही कर सकता। जो लोग पुरातन ऋषि मुनियों की आत्म शक्ति और गवेषणा जानते हैं, योग विद्या और दर्शन शास्त्रों के अध्ययन में जिन्होने समय बिताया है, भगवान रामचन्द्र, योगिराज श्रीकृष्ण, पयगम्बर मुहम्मद, महात्मा बुद्ध आदि क्षमतावान महात्माओं की अलौकिक शक्तियों का विवरण जिन्होंने श्रद्धा भक्ति से पढ़ा है उनको बतलाना नही होगा कि आत्म शक्ति के पारङ्गत मनुष्य के लिये संसार मे कुछ भी असाध्य नहीं है। आदमी जो चाहे कर सकता है। बहुत दूर जाने की जरूरत नहीं है। प्राचीन समय के ऋषि मुनियों की भी बात छोड़ कर ग्रीक विद्वान सुकरात अरस्तू या फ्रेञ्च सेनापति नपोलियन वोनापार्ट की सफलता का मर्म्म इतिहास मे जो पढ़ चुके हैं। अमेरिका के एडिशन साहेब का वैज्ञानिक चमत्कार जो जानते है और आजकल हवाई जहाजो का प्रत्यक्ष कार्य्य जब बालक बृद्ध सब के सामने दिखाई देने लगा है तब मनुष्य की इच्छाशक्ति की सफलता पर व्यङ्ग करने या उपहास के बाण चलाने के दिन अब लद गये। इन्हीं सब कारणों से अब शिक्षित और अशिक्षित सब मे मनुष्य की आत्म शक्ति के चमत्कार और इस विद्या पर विश्वास बहुत बढ़ गया है।

आध्यात्मिक विद्या का चर्मोत्कर्ष एक दिन इसी देश मे हुआ था यह कहना नहीं पड़ेगा। इस विद्या के ज्ञाता भारत के ऋषि मुनि और फकीरोंका अलौकिक कार्य्य जो आज भी यहाँ के ज्ञानी मानी कर दिखाते हैं उसकी समता में अब भी किसी देश के स्पिरिच्युयलिस्ट नहीं ठहर सकते। इतना ही नहीं यूरप और अमेरिका के जो लोग इस विद्या मे पारङ्गत हैं वह भी यह स्वीकार करते हैं कि इस विद्या का जन्म स्थान भारतवर्ष ही है।

यूरप और अमेरिका में स्पिरिच्युयेलिजम वा प्रेत विद्या और मेसमेरजिम वा मोहिनी विद्या पर बहुत दिनों से चर्चा और आलोचना हो रही है यद्यपि पहले उन देशों मे लोग इस विद्या को पागलपन और ठगपना कह कर हँसी मे उड़ा देते थे जैसा इस देश मे अब भी कभी कभी हुआ करता है। लेकिन सत्य की आग कितने ही तह कपड़े मे रखी जाय वह बहुत समय तक दबी नही रह सकती। जो लोग निष्कपट और सत्य से इसकी खोज मे लगे उन्होंने इसके सत्य पर विश्वास किया और इसका प्रचार इतना हुआ कि अब किसी देशमे इस विद्या पर शिक्षित और समझदारों मे अविश्वास नही रहा। लेकिन ढोगी और हाथ की सफाई से धोखे का काम कर दिखाने और ऐसी ही थोथी लागों से जनता का समय और धन खराब करने वाले अपनी नीच करनी से इस विद्या से लोगो की श्रद्धा हटाने मे भी कुछ कसर नही रखते तौ भी जो असल मेसमेरजिम है वह जानने मानने और सीखने समझने की वस्तु है इसमे कुछ भी सन्देह नही है। हमने हिन्दी वङ्गला गुजराती आदि भाषाओं में इसके साहित्य पढ़े हैं और सदा पढ़ा करते है। साथ ही इस विद्या के पण्डितो का काम भी देखा है। उनकी सङ्गति में समय बिताया है। उनके तरीके और नियमों का भी अध्ययन और पालन किया है। इस पुस्तक में जो कुछ हम लिख रहे है उसी अध्ययन और सङ्गति का प्रसाद है। जो लोग श्रद्धा और बिश्वास से इसके नियम पर चल कर सावधानी से सीखेंगे उनकी मनसा अवश्य पूरी होगी लेकिन साथ ही शर्त्त यह है कि यह विद्या थोड़े दिनो के साधारण या हँसी खेल और मनोरञ्जन के लिये सीखने की वस्तु नहीं है न इस तरह कुछ लाभ ही हो सकता है। जो अटूट श्रद्धा और दृढ़ विश्वास से लगातार कार्य्य

करते रहेंगे वह अवश्य सफल होंगे यह बिलकुल सत्य है। जो सफल न होवें उनको निराश होकर साधन छोड़ बैठना नहीं चाहिये न इस विद्या पर श्रद्धा घटाना चाहिये। ऐसे हतसफल साधकों को समझना चाहिये कि जरूर उनसे क्रिया या साधना मे कहीं भूल हुई है। उन्हें फिर नये उत्साह से अपनी भूल भटक का संशोधन करना और क्रिया साधना में लग जाना चाहिये। अवश्य वह सफल होंगे। और ज्यों ज्यों सफल होते जायेंगे उनका मन आप ही आप प्रसन्न होता हुआ कार्य्य साधन मे आगे बढ़ता जायगा। इतना जरूर है कि किसी सिद्ध हस्त मेसमेराइजर को गुरु मान कर उसके सामने क्रिया करना चाहिये।
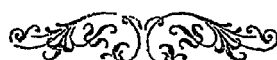
ग्रन्थारम्भ

जिस मेसमेरिजम का नाम लेकर आज कल बहुतेरे ढोंग धतूरा साजने वाले भानमती का पेटारा लिये फिरते हैं। उनकी करामात पहचानना इन दिनों बड़ा कठिन हो रहा है उन ठग धूर्तों की बात छोड़ देने पर यह कहना कुछ अनुचित नहीं होगा कि मेसमेरिजम योग या आत्म शक्ति का एक प्रभुतावान अङ्ग है। किन्तु वह मेसमेरिजम जो वस्तुतः मेसमेरिजम हो। जिसकी आड़ मे बहुतेरे ठग इन दिनो खेल तमाशे और हाथ की सफाई से अनेक काम ऐसे दिखलाया करते हैं कि सीधे सादे आदमी उनको देख कर दिखलाने वाले को जादूगर, मेसमेराइजर या योगिराज योगीश्वर आदि अपनी समझ के अनुसार अनेक नामों से पुकारा करते हैं। सीधेही सादे नही बड़े बड़े वैज्ञानिक, बड़े बड़े प्रोफेसर बुद्धिजीवी, दर्शन शास्त्री ज्ञानवान तक धोखे मे आकर अनेक अवसर पर बहुतेरे ठग और धूर्तों को मेसमेराइजर और योगी या पराक्रमशाली सिद्ध समझने लगते हैं। वस्तुतः यह सब ढोंग बाजी और हाथ की सफाई के खेल ऐसी ही योग्यता के होते है कि वहाँ बुद्धि काम नही देती। समझ का दिनदहाड़े देवाला निकल जाता है और चकमे में आकर चतुर आदमी भी इन ठगों को मेस मेराइजर या योगिराज सिद्ध मान बैठते हैं। ऐसे लोगो के चक्कर मे हम भी कई बार बेतरह पड़ चुके हैं यहाँ तक कि जब तक स्वयम् करामात दिखाने वाले ने अपने मुँह से यह नहीं कह दिया कि यह हाथ की सफाई या लाग है। तब तक हमारी समझ मे भी असल बात नहीं आयी। कई बार ऐसा भी हुआ कि खेल की सफाई देख कर हमको इतना अभिभूत हो जाना पड़ा कि जब तक

खेल करने वाले ने मैत्रीभाव से एकान्त मे अपनी करामात मे ढिलाई करके पकड़ाई नहीं दिया तब तक हमारा भ्रम नहीं गया। आज उसी प्रकृत मेसमेरिजम को सीखने समझने और परखने के लिये यह छोटी सी पुस्तक लिखी गयी है। हमने बहुत दिनों से इस पुस्तक के लिये सूचना दे रखी थी अभिप्राय केवल इतना ही जानना था कि इस विषय की पुस्तक के चाहने वाले ग्राहक हिन्दी मे कितने हैं ?

उस सूचना से जो नतीजा हुआ उसको देखकर कहना पड़ता है कि इस विद्या के समझने सीखने की रुचि लोगों में खूब है। नवयुवक इसके जानने समझने और सीखने की उत्सुकता रखते हैं। लेकिन ऐसे गुरु नही मिलते जिनसे शिक्षार्थी अपनी मनोवांछा पूरी कर सकें। और जहाँ कही इस विद्या के ज्ञाता हैं वह अपने क्लास खोलकर सैकड़ों रुपये फीस लेकर सिखलाने की घोषणा किये हुए हैं। नहीं जानते ये धन के रोजगारी इतनी कड़ी फीस लेकर साधारण श्रेणी के नवयुवकों की कामना कहाँ तक पूरी करते हैं।

इच्छा शक्ति Will Power नाम की पुस्तक तैयार करके हमने तीन वर्ष हुए प्रकाशित किया था जो मेसमेरिजम की पहली सीढ़ी थी। उसको लोगों ने अपनाया। लेकिन उसके नियमों पर चलकर उसकी साधना से कितने लोगों ने लाभ उठाया इसका हमको कुछ पता नहीं है तौ भी इतना हम कहेंगे कि उसकी साधना से हमने बहुत लाभ पाया। और जो लोग मङ्गल कामना करके शुद्ध चित्त होकर सत्य मार्ग पर चलते हुए उसकी साधना करेंगे वह अवश्य सफल परिश्रम होंगे वह जरूर इसका उत्तम फल पायेंगे।

अब यह मोहिनी विद्या अर्थात् मेसमेरिजम की पुस्तक

प्रकाशित की जाती है। इच्छा शक्ति से कुछ बल जिन साधकों का बढ़ा है उनको आगे बढ़कर इस पुस्तक के द्वारा अभ्यास करना चाहिये लेकिन किसी मेसमेराइजर के सामने या उसको गुरु मानकर उसके उपदेश से कार्य करना ही उत्तम है।

याद रखना चाहिये कि योग साधन अपने शरीर से अकेले बैठकर किया जाता है। लेकिन जो क्रिया दूसरे के शरीर से करायी जाती है उसको मेसमेरिजम कहते है।

प्राचीन काल मे आर्य्य ऋषि मुनियों मे इस विद्या का बहुत प्रचार था। इन दिनों मे अनेक साधु संन्यासियो मे इसका परिचय पाया जाता है। हमने स्वयम् छोटी उम्र मे इस विद्या के पारंगत अपने गॉव (गहमर) मे देखे थे। *

एक समय इस मोहिनी विद्या का भारतवर्ष मे इतना अधिक प्रचार था कि सर्वसाधारण मे इसकी बड़ी चर्चा थी। और थोड़ा बहुत इस विद्या को सीखकर लोग हित अनहित के काम बहुत किया करते थे।† जिसका फल यह हुआ कि साधु असाधु सब लोग इसको सीखकर या इसमे शक्ति पाकर बहुतेरे अपनी रुचि के अनुसार लोगों का उपकार अपकार करके तरह तरह के अत्याचार और उपद्रव भी करने लगे क्योंकि इस विद्या से शक्ति पाकर जैसे उपकार किया जा सकता है वैसेही अनिष्ट साधन भी

---

* एक का नाम कुञ्जविहारी पाडे था। गहमरवाले उनके चमत्कार और अद्भुत कार्य देखकर इन्द्रजाली पाडे कहा करते थे। वह गहमर में उस समय के प्रसिद्ध वैयाकरण श्रीजानकीरामजी के यहाँ रहते थे।

† इसीका बचाखुचा अश इस देश में झाड फूक और टोनाटमना है साँप बिच्छू के काटे हुए की मंत्र से झाड़फूंक कर दवा करना,कटोरा चलाना, पीठ पर थाली चिपकाना इत्यादि काम आज भी लोग किया करते हैं।

होता है। इसी कारण सज्जन और सन्तों ने इस विद्या वा इसकी शक्ति को गुप्त ही नहीं रखा अनेक प्रकार से इसको बन्द करने का भी सदुद्योग किया। उन्हीं के उद्योग से यह विद्या एक तरह से लुप्त सी हो गयी। और केवल थोड़े से समर्थवान ऋषि मुनियो में ही सीमित रह गयी। यो तो ढोंग और ठगपने के लिये आज भी डोम चमार आदि में बहुतों के कपार पर देवी दुर्गा काली आदि आया करती हैं और उन्हीं के प्रसाद से उन सब की अच्छी पूजा भी हुआ करती है।

आज भी पुरातन विधि से व्याह के अवसर पर भिन्न भिन्न प्रान्तों में हाथ या उँगलियों से वरण करना। लव मिलाना आदि स्त्रियों मे किया जाता है। इसमें भी गुप्त रूप से उस मेसमेरिजम का बीज मौजूद है। तन्त्र शास्त्रों के मुद्रादि करन्यास प्रक्रिया भी इसी मेसमेरिजम या वश्यतंत्र के मूल पर है।*

यह विद्या केवल भारतवर्ष ही मे नहीं और देशों में भी थोड़ा बहुत इसका प्रचार था। प्राचीन इतिहास देखने से जाना जाता है कि ६ सौ वर्ष इस्वी सन् से पहले मनुष्य के हाथ से निकली हुई बिजली की अद्भुत शक्ति की बात ग्रीक विद्वान् सोलन (Solan) कहते हैं कि दवा दारू से जो दैहिक पीड़ा नहीं दूर हो सकती वह हाथ के सञ्चालन † (Stroking with the hands) मात्र से बहुत जल्द दूर हो सकती है। इसके सौ वर्ष बाद अर्थात् सन् ईस्वी से ५०० वर्ष पहले नील नदी के तट पर जीयस नाम के

---

* कुछ लोगों का कहना है कि तीन चार हजार वर्ष पहले भारतवर्ष और मिस्र देश के धर्म्मयाजकों में यह विद्या एकहथ हो गयी थी। वह लोग इसे गुप्त विद्या कहकर किसी को सिखलाते नही थे।

† Stroking Pass का विवरण आगे दिया गया है।

एक मेगनेटाइज़र रहते थे। वह हाथ से छूकर या सुहराकर प्राणी मात्र के रोग दूर कर देते थे। सन्-ईस्वी से ३६१ वर्ष पहले सुविख्यात डाक्टर हियोक्रेटस कह गये हैः—

मनुष्य के हाथ से जो उत्ताप वा तेज (Heat) निकलता है उसका पीड़ित शरीर में प्रयोग करने से तुरत शान्ति मिलती है। जब मै अपने रोगी के शरीर की तकलीफ दूर करने के लिये हाथ या हाथ की उँगली बढ़ाता हूँ तब जान पड़ता है कि मेरे हाथ या उँगली की नोक से ऐसी कोई शक्ति निकलती है जो रोगी का दुःख खीच कर दूर फेंक रही है। इसके सिवाय दूसरे ग्रीक विद्वान एसक्लिपियेडिस हाथ की रगड़ * (Friction) से ही निद्रित करके उन्माद रोग दूर करते थे। रोम देश के पुरोहित लोग हाथ से पास (Pass) देकर रोगी को निद्रित (वा अभिभूत) करके उसकी तकलीफ दूर कर देते थे। ऐसे बहुतेरे प्रमाणो से समझा जा सकता है कि यह विद्या प्राचीन काल में सब देशों मे जारी थी। अति प्राचीन मिश्र देशीय धर्म्म याजको (Egyptions) मे यह विद्या विशेष रूप से प्रचलित थी इसका प्रमाण इतिहास मे बहुत मिलता है। ‡

खीष्ट धर्म्म प्रचारक यीशू भी इस विद्या मे पारदर्शी थे। मोजेस (Moses) और यीशू (Jasus) दोनो ने ही मिश्र देशी धर्म्मयाजकों से यह विद्या सीखी थी। और इसी के प्रभाव से खीष्टीय धर्म्म पुस्तक मे (Scripture) लिखित अलौकिक

* छूकर पास करने की विधि—(Magnetic Friction) पास के अध्याय मे देखिये।

‡ कुछ लोगों का कहना है कि मिश्र देशीय धर्म्मयाजक यहीं से यह विद्या सीख गये थे।

कार्य्य दिखला कर शिष्य मण्डली को उन्होंने आश्चर्य चकित करके अपने आयत्त किया था। चाहे किसी तरह का रोगी हो उसको हाथ से छूते ही तुरत आरोग्य कर देते थे। कहते हैं कि एक बार एक कुष्ट रोगी योशू के पास जाकर बोला कि हे प्रभु! तुम चाहो तो हमको रोग से छुड़ा सकते हो। इतना सुनते ही उन्होने उसको हाथ से छूकर कहा मैं चाहता हूँ कि तुम रोग मुक्त हो जाव!" इतना ही कहने पर उसका रोग दूर होगया। †

खृष्टीय जन्म के कोई १७०० वर्ष बाद भी इस विद्या के दो एक पारङ्गत पुरुषों का पता मिलता है। सन् १६५८ ई० मे ग्रीट्रेक्स (Greatrakes) नामक एक आइरिश (आयलैंण्ड निवासी) ने जो मेजिष्ट्रेट थे अपनी अद्भुत मैगनेटिक शक्ति से बहुतेरे कठिन रोगियो को नीरोग किया था। उन्होने देश विदेश घूम कर अनेक रोगियो को नीरोग, कितने ही अन्धों को आँख, कितने ही लँगड़ो को चलने मे समर्थ दान किया था। इसके लिये उनकी संसार मे बड़ी वाहवाही हुई थी। फिर तो यह विद्या एक तरह से लुप्त हो गयी। और अट्ठारहवीं सदी के अन्तिम भाग में मेसमर साहब ने इसका फिर उद्धार करके जगत मे प्रकाश कराया।

मेसमेरिजम क्या चीज है और कहाँ से इसकी उत्पत्ति हुई यह संक्षेप मे कहा जा चुका। अब यह बतलाना है कि किस तरह और क्यो कर इससे अलौकिक कार्य्य किस आदमी से हो सकते हैं।

जीव शरीर के जिस तड़ित शक्ति की बात पहले कह आये हैं। इच्छा, स्पर्श और दृष्टि (Will Touch and Look) यही

---

† The leper said—"Lord, if thau wilt thou canst make me clean" Jesus then put forth his hand and touched him and said will be thou clean and his leperous was cleaned.

तीन उस बिजली के चलाने मे प्रधान प्रवर्त्तक हैं। मेरे शरीर की बिजली निकल कर दूसरे जीव की देह मे या किसी जड़ प्रदार्थ मे प्रवेश करे इसी तरह की इच्छा मन में दृढ़ करके छूने और देखने से वह कार्य्य सिद्ध होता है इसी तरह की क्रिया से मेसमेराइजर वा क्रिया साधक अपने अवजेक्ट (Object) वा पात्र अर्थात जिस मनुष्य या वस्तु पर शक्ति चलाता है उस आदमी या वस्तु को थोड़ी ही देर मे ऐसा आयत्त अर्थात् वश में कर सकता है कि पात्र सजीव हो तो उसका अपना अस्तित्व ज्ञान लोप हो जाता है और अपना सदासद विवेक खोकर क्रिया साधक के इच्छानुसार कार्य्य करने लगता है और पात्र निर्जीव वा जड़ हो तो वह क्रिया साधक के इच्छानुसार गुण सम्पन्न हो जाता है। इससे साधक के साथ पात्र का ऐसा ऐक्य भाव हो जाता है कि साधक जो खाय वा पीवे वह सब पात्र भी उसका पूरा पूरा अनुभव करता है *

दृढ़ इच्छा शक्ति के प्रभाव से ही हमारे ऋषि मुनिगण भी केवल छूकर या फूँककर रोगियों को नीरोग, जन्मान्ध को चक्षुदान, लँगड़े को चलनशक्ति सम्पन्न और दुर्बल को वलवान बना देते थे और इन्ही कार्यों से जगत् का उपकार करते थे। वहुत दिनो की वात नहीं है अभी वहुत आदमी उनके देखनेवाले यहाँ मोजूद हैं कि थियोसोफिकल सोसाइटी के एक प्रधान नेता कर्नल आलकट ऐसे वहुतेरे अलौकिक कार्य्य करके लोगो को आश्चर्य चकित और स्तम्भित कर देते थे।

इच्छा शक्ति से केवल मनुष्य और जड़ पदार्थ ही को नहीं आयत्त किया जाता इसके प्रभाव से पशु पक्षी कीट पतङ्गादि जगत

---

* मेसमेरिजम द्वारा वशीभूत होने पर मनुष्य या जड पदार्थ से क्या क्या काम हो सकते और होते हैं इनका वयान आगे दिया गया है।

के सब जीवों को इसी तरह वश मे किया जा सकता है। इसी शक्ति से ऋषि मुनिगण जङ्गलो में रह कर भी बाघ हुँड़ार आदि सब जीव घाती हिंस्रक जानवरों को वश में करके वेखटके विचरते रहते थे।

ईस्वी सन् से ५०० वर्ष पहले यूनान के सुप्रसिद्ध पण्डित पिथागोरस (Pythagoras) इस देश में पधारे थे उन्होंने अपनी मेगनेटिक शक्ति से एक जङ्गली ऋच्छ को थोड़े ही समय मे अपने वश में कर लिया था। हाथ के इशारे से आकाश में उड़ते हुए पक्षी को वहीं रोक देना वा उसका फेंके हुए ढेले की तरह गिर पड़ना, फन उठाये हुए विषधर साँप को निस्तेज वा मूर्छित कर देना। ऐसी आश्चर्य घटनाओं का उल्लेख बहुत मिलता है इसी कारण इस शक्ति को मोहिनी विद्या कहते हैं।

मेसमेरिजम विद्या को साधारणतः दो भागों में बाँटा जाता है। पहला क्यूरेटिव (Curative) अर्थात् रोग प्रतिविधायक और दूसरा फेनामेनल (Phenomenal) अर्थात् अलौकिक कार्य साधक। इन दोनों में परस्पर बड़ा विचित्र सम्बन्ध है। एक विभाग में पारदर्शिता लाभ होने के लिये दूसरे में भी उपयुक्त ज्ञान रहना जरूरी है। बात यह कि एक में पारदर्शिता होने से दूसरे मे आपही आप बहुत कुछ अभिज्ञता हो जाती है। लेकिन एक विचित्र बात यह कि एक विषय में जिसको जितना ही शक्ति अधिक प्राप्त होती है उसको दूसरे में उतनाही कम क्षमता होगी। तात्पर्य यह कि जो रोग दूर करने में अधिक सक्षम और शक्तिमान हैं वह अद्भुत और अलौकिक कार्य्य दिखाने की शक्ति उतनी नहीं पा सकते। और जो अलौकिक कर्य्य कर दिखलाने मे विशेषपटु और समर्थवान हैं उनको रोग दूर करने की उतनी क्षमता नहीं होगी यह साधारण नियम है लेकिन इस नियम से

विशेष क्षमतावान आदमी को उतनी रुकावट नहीं हो सकती। आदमी दृढ़ इच्छा रहने पर दोनो मे पूरी शक्ति उपार्जन कर सकता है। डाक्टर मेसमर साहब का लक्ष रोग आरोग्य करने पर ही था। वह संसार का उपकार करना ही अपना कर्त्तव्य समझते थे। उनको अपनी करामात दिखाकर आसपास या दूसरे लोगों मे वाहवाही बटोरना नही था। इस विद्या को सीखकर कुछ मान मर्य्यादा अथवा धन लाभ का प्रलोभन उचित नहीं है न ऐसी रुचि रखनेवाले सदा मान मर्य्यादा वा धन सम्पति पा सकते है। जो ऐसा चाहते हैं वह तो इस विद्या के सीखने की योग्यता ही नही रखते लेकिन जो और जोड़ तोड़ या दृढ़ आस्था आदि गुणों से कभी इस विद्या मे कुछ दखल पा जाते हैं वह आगे चलकर अपनी प्रभुता खो बैठते हैं। यहाँ हम प्रसंगवश एक घटना का उल्लेख कर देना चाहते हैं।

-- दानापुर (पटना) में गङ्गातट पर जहाँ खेयाघाट है उसी घाट पर एक नाव यात्रियों को लेकर पार जा रही थी नाव पर वृद्ध युवा सब सवार थे। आकाश मे सन्नाटा था। हवा मानों नहीं चल रही थी। चारो ओर से गर्म हवा का अनुभव हो रहा था। लोगों को पसीना भी चल रहा था। डाँड़ खेने वालों के कपड़े पसीने से बिलकुल भींग गये थे आकाश मे मटमैले बादल उमड़ रहे थे। देखते ही देखते बड़े जोर की हवा चली भयङ्कर बवण्डर आया। यात्रियो मे एक स्त्री गोद में बरस दिन का बच्चा लिये स्तन पान करा रही थी। उसकी दशा देख कर लोगों को तरस आने लगा। प्रचण्ड हवा का ऐसा प्रबल बेग आया कि नाव पर के सवार सावन के वृन्दावनी झूले का अनुभव करने लगे। नाव हवा के झोंके से बहुत नीचे और ऊपर आने लगी पानी के हलोरे से यात्रियो की देह ही नहीं भीग गयी बल्कि सबके पेट के चावल

उछलने लगे। लोगों ने यही समझा कि अब नाव उलटती है और जान जाने में अब देर नहीं है। एक चिमटा लिये जटाधारी बाबा भी उसमें बैठे थे सब लोग आतुरता से उनका मुँह ताकने और यह आशा करने लगे कि बाबा से कुछ आश्वासन बचन मिले। लेकिन बाबा तो अपने में इतने संलग्न थे कि उन्हें किसी की कुछ परवा या चिन्ता ही नहीं। ऐसी दशा में नाव गङ्गा के बीच धार में पहुँच गयी। यात्रियों के मन में यह बात आयी कि बड़ी भयङ्कर स्थिति है। न आगे बढ़ने की हिम्मत होती है न पीछे ही लौट सकते हैं क्योंकि दोनों मंजिल बराबर ही हैं। बड़ी विकट स्थिति में नाव यात्रियों से लदी थी। सबके चेहरे पर हवाइयाँ छूट रही थी। सबको अपनी जान के लाले पड़ रहे थे। स्त्री बेचारी गोद के बच्चे की दशा बिचार कर सिहर उठी। उसके आँसू नहीं थम्हे। जोर से आर्त्तनाद करके चिल्ला उठी। उसके मुंह से बेतहाशा निकल गया हे भगवान्! मेरी जान ले लो लेकिन मेरे बच्चे को बचाओ हे नाथ!

इतना उसके मुँह से निकलना था कि जो हवा नाव को मानो आसमान में उड़ाये लिये जाती थी वह एक दम शान्त हो गयी जैसे दौड़ता हुआ एक्का एक दम खड़ा हो जाय। लोगों ने देखा तो नाव पास के किनारे से पचीस गज के अन्तर पर पहुँच गयी है। सामने वाले टीले पर एक जटा जूट वाले लंगोटी लगाये आसन मारे बैठे हैं। ठीक जैसे प्राणायाम कर रहे हों। हवा के झोंके से सब गर्द गुब्बार निखर गया है। यात्रियों में बैठे सन्त ने भी आसन छोड़ कर आँखें खोलीं तो चारों ओर अकचका कर देखा और जोर से "ओ...ओ...फ़" करके चुप हो रहे।

बात की बात में मल्लाहों ने नाव तट पर लगा दी। लोग उकता कर नाव से किनारे को कूदने लगे। सन्त बड़ी संजीदगी

से नाव छोड़कर उतर पड़े। सब यात्रियों ने अपना अपना रास्ता लिया लेकिन सन्त सीधे सामने वाले टीले पर बैठे हुए जटाधारी के पास पहुँच कर बोले—"जा! आज तो तुमने अपना सब खो दिया।"

वह सन्त अकचका कर इनका मुँह ताकने लगे। उनकी बोलती बन्द रही लेकिन आँखें मानो पूछ रही थीं कि क्या बात है?

खड़े सन्त ने बड़ी डाँट से कहा—"ताकता क्या है! तुमने सामने की घटना देख कर ही हवा का वेग अपनी इच्छा शक्ति से रोका। हम मानते हैं कि उस गोद के बच्चे पर तुमको तरस आयी और अपनी शक्ति भर तुमने मनोबल खर्च करके उसकी जान बचा ली लेकिन तुमको यह नहीं मालूम है कि यह हवा उस सिरजनहार की प्रबल प्रेरणा थी जो सारे जगत को हस्तामलकवत देखता और सबके पालन पोषण की सुधि रखता है मैंने आसन पर बैठे ही देखा एक जनहीन अगम्य टापू मे एक बड़ा जहाज रेत पर चढ़ गया है। उसके यात्री खान पान की सामग्री चुक जाने से भूख प्यास के मारे तड़प रहे हैं। बड़ी कोशिश करके उसको पानी मे नहीं ला सकने के कारण निराशा के आँसू बहा रहे थे। उन्हीं की प्राणरक्षा के लिये यह इतनी प्रचण्ड वेग की हवा चली थी लेकिन तुमने अपने मनोबल से इसे रोक कर उस स्त्री की गोद के बच्चे का प्राण बचाया लेकिन उस जहाज के हजारों सवारों के प्राण की परवा नहीं की अब तुम्हारी बल शक्ति यहीं समाप्त हो गयी यह याद रखना।"

इतना सुनते ही टीले पर के साधु बहुत डरे और आसन से उठकर उनके पाँव पकड़ने चले थे कि फिर डाँट कर वह बोले—"बस अलग रहो! नहीं जानते तुम्हारे ऐसे डरपोक को इतनी शक्ति

कैसे मिली थी। अच्छा तुमने अज्ञानवश सहज ही यह काम किया है। लेकिन किया है परोपकार की धुन मे इस कारण अपने किये पर पश्चाताप करके आशा दृढ़ लेकर फिर साधना कर चलो। सफल प्ररिश्रम होगे" यही कहते चिमटा घुमाते हुए आगे बढ़ गये।

तात्पर्य्य कहने का यह कि साधना मे क्षमता प्राप्त करने पर भी बड़े संयम से उसका उपयोग करना चाहिये और गोपन भाव से उसकी रक्षा करके सदा उसकी वृद्धि के लिये ध्ययन मनन करते रहना चाहिये।

यहाँ सबका यह जानने की इच्छा होगी कि इस तरह की इच्छा शक्ति प्राप्त करने का क्या उपाय है।

इसका उत्तर यही कि उपाय है केवल साधना। साधना, निर्विघ्न साधना, दृढ़ इच्छा सहित सफल होने की भरपूर कामना लिये हुए साधना ही इसकी प्राप्ति का उपाय है। इस साधना का अर्थ है मन का संयम अर्थात् एकाग्रता का अभ्यास। मन को एकाग्र करके सदा संयम सहित साधना करने से इच्छा शक्ति प्रबल होती है उसके बल से आदमी जो चाहे कर सकता है और इस एकाग्रता के अभ्यास करने का नाम ही साधना है।

इच्छा को सदा एक विषय पर लगाये रखने के लिये मन को नियत एकाग्र रखना जरूरी है लेकिन ऐसा एकाग्र भाव बहुत देर तक बनाये रखना सहज नहीं है। अगर साधक को अपनी क्षमता पर सम्पूर्ण प्रत्यय हो तो ऐसा एकाग्र भाव रखने में विशेष कष्ट या कठिनता नही होती। जैसे एक आदमी ने एक निर्दिष्ट स्थान पर जाने का सङ्कल्प किया। अब वहाँ पहुँचने में जो जो बाधा विघ्न पड़ेगे उनको पार करना होगा और कैसे पार करना होगा यह सब उपाय अध्ययन करके ही उस आदमी को कदम बढ़ाना

होगा इसका ध्यान रख कर चलने में उसको अपने अभीष्ट स्थान पर पहुँचने मे बहुत परिश्रम या कठिनता नहीं होगी। क्योंकि जिस तरह जाने से वह बेखटके पहुँच सकेगा उसको पहले ही वह स्थिर कर लेता है और वहाँ वह पहुँच सकेगा इसमे उसको कुछ भी खटका नही रहता।

एक बात और ध्यान में रखने की है कि मेसमेराइज करने की क्षमता सब आदमियों मे होने पर भी सब में यह शक्ति समान नहीं होती। जिस तरह लोगों की शारीरिक और मानसिक शक्ति कम बेश होती है वैसे ही इस शक्ति की भी दशा है। यही कारण है कि किसी की स्वभावतः मेसमेरिक शक्ति दूसरे की अपेक्षा बहुत बढ़ी हुई होती है। और कभी कभी तो इस विद्या के ऐसे शक्ति सम्पन्न लोग देखे जाते हैं कि उनको कोशिश करके अपनी शक्ति को संयत रखना होता है।

काशी मे अमेरिकन यात्री भी बहुत आया करते हैं। उनमें एक ऐसे खर नजर वाले यहाँ आये थे जो अपनी एक आँख सदा पट्टी से बन्द रखा करते थे। यहाँ मेरे एक परिचित प्रोफेसर से उनकी भेट हो गयी जो इस विद्या का कुछ अभ्यास रखते हैं और हिप्नोटिजम और दिव्य दृष्टि मे उनको अच्छी योग्यता है। मेरे मित्र से उन अमेरिकन महाशय की इस विद्या के सम्बन्ध मे बहुत सी बातें हुई। अमेरिकन साहब ने कहा—मेरी इस आँख मे बड़ी शक्ति है इसीसे इस पर पट्टी रखता हूँ। अगर इसको खोल दूँ तो बड़ी आफत आवे। मेरे मित्र को यह बात विश्वास मे नहीं बैठी तब भाव से ताड़ कर उन्होने एक छोटा सा आईना मँगाया। प्रोफेसर जी ने मुँह देखने का दर्पण ला दिया। साहब ने कहा— "अगर यह टूट कर बेकाम हो जायगा तो आप नाराज नहीं होंगे।" मित्र ने कहा कुछ हरज नहीं।

तब साहब ने अपनी आँख से पट्टी हटा कर आइने की ओर देखना आरम्भ किया। मिनट नहीं बीता था कि शीशा तड़ाक से टूट गया। साहब ने माफ़ी माँग कर फिर आँख पर पट्टी चढ़ाते हुए कहा—इसीसे मैं अपनी यह आँख बन्द रखता हूँ ठीक जैसे शिव जी का तीसरा नेत्र संयत रहा करता है।

अब समझने की बात है कि आँख की ऐसी शक्ति बिरले ही मनुष्यों की होती है जिसको इस तरह संयत करके रखना पड़ता है। यह सब शक्तियाँ चर्चा और प्रयोग द्वारा वह मनुष्य प्राप्त कर सकता है जिसकी अटूट दृढ़ वासना और अपनी क्षमता पर पूरा विश्वास होता है। जब एक बार ऐसी शक्ति प्राप्त हो जाती है तब सहज ही उसका सफलता पूर्वक प्रयोग हो सकता है।

यह शक्ति स्त्री और पुरुष दोनों में समभाव से मौजूद है और स्त्री को मेसमेराइज करना हो तो यह कार्य्य स्त्री द्वारा ही होना उचित है। इसके बहुतेरे कारण हैं जिनका यहाँ वर्णन करना अनावश्यक है।

सात वर्ष से ऊपर उम्र के बालक और लड़कियाँ भी यह सब क्रिया देखते रहने पर सीख कर मेसमेराइज कर सकती हैं। यह बात सही है कि इस उम्र के बच्चे केवल देखा देखी काम करते हैं लेकिन एक बात उनमें सफलता के लिये बहुत ही प्रबल है कि उनके मन में संशय का लेश मात्र भी नहीं होता। इसी कारण स्थिर और अटूट इच्छा से वह बिना प्रयास इस कार्य में सिद्धि पा सकते हैं। सन्देहादि विघ्नो से उनका मन विचलित नहीं होता जिस बात को समझा कर कह दिया जाय उसी पर उनकी आस्था बैठ जाती है और उसीके अनुसार वह काम करने लगते हैं। वह लोग बड़ी सुगमता से साधारण तकलीफ़ दूर कर सकते हैं। ऐसी उम्र के लड़के जिस पर अधिक स्नेह रखते हैं उनके दुख दर्द दूर करने

की इच्छा मात्र से उनका कष्ट बड़ी सुगमता से हरण कर सकते हैं। उनको प्रक्रिया बतला देने से ही कार्य्य सिद्धि हो सकती है लेकिन इसमे एक विघ्न होना सम्भव है। वह यह कि ऐसा करने से उनके स्वास्थ्य पर धक्का लगने का खतरा रहता है। इस कारण ऐसा काम करने से उनको रोक देना चाहिये।

कुछ लोगों को ऐसा ख्याल है कि साधक अर्थात जो मेस-मेराइज करते हैं उनको जिस तरह आत्मशक्ति पर दृढ़ विश्वास रहना जरूरी है वैसा ही पात्र अर्थात् जिस पर मेसमेराइज्ञ करना है उसको इस शक्ति पर दृढ़ विश्वास नहीं रहने से उस पर मेसमेराइज्ञ नहीं किया जा सकता या उन पर मेसमेराइज करना कठिन वा कष्टसाध्य है। मेसमेरिजम के विषय में बहुतों की भूल धारणायें होती हैं वैसी यह भी भ्रम मात्र है। क्षमतावान मेस मेराइजर जिसको चाहे मेस मेराइज कर सकता है। केवल पात्र को उस काम मे साधक पर सम्पूर्ण भाव से आत्म समर्पण कर देना चाहिये। पात्र को साधक पर इच्छुक भाव और विश्वास दोनो का होना जरूरी है इसीसे शीघ्र सफलता मिल सकती है।

कुछ लोग मेसमेराइज करके बहुत थक जाते हैं। और कुछ ऐसे भी देखे जाते हैं जो इस कार्य्य से कुछ भी क्लान्त नही होते बात यों है कि मेसमेरिजम की प्रकिया में जो अङ्ग सञ्चालन करना पड़ता है उससे यह थकावट नही होती। मेसमेरिक शक्ति की कमी या संयत भाव से शक्ति चलाने मे अक्षमता ही इस तरह की क्लान्ति का प्रधान कारण होती है। बार बार चर्च्चा और प्रयोग द्वारा यह क्लान्ति बोध घट कर एक दम लोप हो जाता है। फिर तो विशेष रूप से मेसमेराइज करने की शक्ति इतनी हो जाती है कि बहुत समय तक प्रक्रिया करने पर भी कुछ कष्ट का अनुभव नही होता।

चेतावनी

किसी का कौतूहल मिटाने के लिये अपनी क्षमता या प्रभुता और बड़प्पन दिखाने के लिये अथवा अलौकिक काम करके आमोद प्रमोद के वास्ते तथा अविश्वासी का विश्वास पैदा करने के लिये कभी मेसमेराइज नहीं करना चाहिये। जो केवल तमाशा के लिये मेसमेरिजम देखना चाहते हैं और जानते नहीं कि मेसमेरिजम क्या वस्तु है उनको दिखाने या प्रबोध देने के लिये कभी इसकी क्रिया नहीं करना चाहिये। विद्या का सन्मान रख कर ही चलना चाहिये।
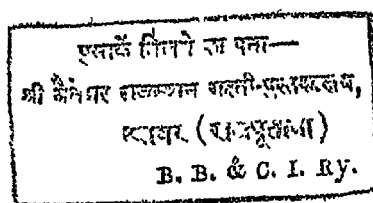
मोहिनी विद्या

अर्थात्

मेसमेरिजम

मेसमेरिजम सीखने की इच्छा बहुतों को होने पर भी सब लोग इस विद्या को नहीं सीख सकते। यहाँ उसके सीखने वाले को कौन कौन क्षमता होना चाहिये उसका विवरण पहले दिया जाता है:—

(१) मेसमेरिजम सीखने के लिये मनुष्य को सत्य प्रेमी होना चाहिये। झूठ बोल कर अपना मतलब साधने वाले वा छल कपट से मकर फरेब करके संसार चरने वाले मेसमेराइजर भी देखे गये हैं किन्तु उनमें मेसमेरिजम की असल क्षमता बहुत ही कम होती है बहुत से ढोंग धतूरा साज कर कुछ काम मेसमेरिजम

का भी करते हैं जिनकी आड़ में उनके छल कपटाचरण भी छिप जाया करते हैं लेकिन ऐसे मेसमेराइजर जगत का कुछ उपकार नहीं कर सकते न वह आदर्श चरित हो सकते हैं उनकी क्षमता क्षण भङ्गुर और नगण्य होती है।

(२) जो मनुष्य अपनी इच्छा शक्ति पर दृढ़ विश्वास रखता है वही इस विद्या को सीखे जो अपनी इच्छा शक्ति पर दृढ़ बिश्वास नहीं रखता जिसको हो या न हो का सन्दिग्ध भाव दबाये रहता है वह मेसमेरिजम सीखने का विफल प्रयास कभी न करे। अर्थात् मेसमेरिजम सीखने के लिये यह बहुत जरूरी है कि वह अपनी इच्छा शक्ति * पर पूरा भरोसा करे।

अभिप्राय यह कि इच्छा शक्ति जिनको कुछ नहीं मालूम है या जो इच्छा शक्ति की साधना नहीं किये हुए हैं उनका मेसमेरिजम सीखने का यत्न करना उसमे समय खोना है।

जो आशावादी है जिसकी आशा दृढ़ है जो इच्छा शक्ति का उपासक है वह मेसमेरिजम में पारङ्गत हो सकता है। क्योंकि आशा मे ही सब सफलता धरी हुई है मतलब यो है कि आशा ही सफलता है क्यो कि आशा उसी की होती है जो होने वाला है लेकिन जब आशा निर्मल और दृढ़ होवै। आशा में निराशा और सन्देह उसकी सफलता की जड़ काटने वाले दुमूहे कुल्हाड़े होते हैं इनसे पाक जो आशा है वही दृढ़ आशा है वह सदा सफल है। वही इच्छा के कल्प वृक्ष का अमर फल है। उसके विना मेसमेरिजम सीखना झख मारना है।

---

* इच्छा शक्ति बढ़ाने अथवा उसे दृढ़ करने का साधन १) वाली इच्छा शक्ति हमसे मंगा कर लीजिये—मैनेजर जासूस बनारस।

(३) जो मन को संयत कर सकता है और जितना ही अधिक समय तक मन को संयत करने मे दक्ष होता है वह उतना ही ज्यादा सफल मेसमेराइजर हो सकता है।

(४) जो अपने स्वार्थ मे लीन है। परोपकार की कामना जिसको छू नही गयी है जो पराये दुःख से दुखी नही होता या पराये कष्ट को दूर करने का आग्रह नही रखता वह मेसमेरिजम सीखने की रुचि छोड़ कर उससे नमस्कार कर ले।

(५) जो मन का चञ्चल हो अर्थात् जो दुःखी, रोगी या शिथोत्साही की किसी शङ्का आदि से विचलित वा अधीर हो जाता हो वह मेसमेरिजम सीखने का पात्र नहीं है। मेसमेरिज़म सीखने वाले को मन की दृढ़ता चाहिये किसी भी शंका जनक तर्क से उसको विचलित नही होना चाहिये। धीर भाव से जिज्ञासु का समाधान करना उसका ध्येय होना चाहिये।

(६) जो आदमी अध्यवसायी है जो अधिक समय तक वतलाये हुए क्रिया साधन मे या क्रिया करते समय उपस्थित विघ्न से कभी अधीर नही हो या क्रिया की सफलता मे विलम्ब होने से अपने साधन की त्रुटि समझ कर उसे दूर करने की आशा सदा रखे वह मेसमेरिजम का सफल विद्यार्थी होता है।

(७) निःस्वार्थ भाव से कार्य्य करने का अभ्यास और पराये स्वार्थ के लिये अपनी हानि की चिन्ता नहीं करना वल्कि अपना स्वार्थ विसार देना अपने आश्रय में आये हुए के हित में पूरी तौर से लीन रहना जिसको आता है वह मेसमेरिजम के योग्य पात्र है।

(८) जो अपनी क्षमता, वखानने मे अपना गौरव समझे वह मेसमेरिजम के लायक नहीं है। जो सफलता पाकर मन की

खुशी भीतर रखने की जगह उसे जहाँ तहाँ बहकने में मन लगाता है वह मेसमेरिजम के योग्य नहीं है।

(९) जो कुछ सीख कर या जानकर लोगों में तमाशा करने और वाहवाही लेने या पैसा कमाने की लालसा रखता है वह मेसमेरिजम सीखने में समय न लगावे।

(१०) किसी तरह की मान मर्य्यादा या अर्थ लिप्सा के लिये तमाशे की तरह जो कुछ दिखलाया जाता है वह मेसमेरिजम नहीं है। उसमें जरूर ठगपने और छल कपट का ही प्राधान्य है। यह मेसमेरिजम सीखनेवालो के लिये परख सदा याद रखना चाहिये।

और गुण

ऊपर लिखे दस मानसिक शक्तियों के सिवाय कुछ शारीरिक बल की भी जरूरत है जो मेसमेरिजम सीखने वालों में होना चाहिये।

जिसका स्वास्थ्य अच्छा नहीं है जो बिलकुल नीरोग नहीं जिसकी देह में कोई भी रोग हो वह इस विद्या के सीखने का प्रयास न करे। शारीरिक बल होना शिक्षार्थी को बहुत जरूरी है लेकिन वह बल बोझा ढोने या भारी चीज घुमाने फिराने का नहीं वह बल मानसिक चाहिये जिसका होना या न होना या उसकी कमी या अधिकता स्वयम् अनुभव होती है। उसकी परीक्षा दूसरे आदमी का काम नही है।

मेसमेरिजम या एनिमल मेगनेरिजन (Animalmagnetism) से कैसे कैसे अद्भुत कार्य्य किये जा सकते हैं और उन कार्य्यों के लिये कौन कौन सी क्रिया करना चाहिये इसके विषय मे पूरा पूरा विवरण देने से पहले हम यहाँ यह बतलाते हैं कि

मेसमेरिजम या एनिमल मेगनेटिजम क्या चीज़ है। और इसकी उत्पत्ति कहाँ से हुई है। और किस तरह कैसे पात्र से यह कार्य्य उत्तमता पूर्वक हो सकता है।

मनुष्य जिस शक्ति से मेसमेरिक कार्य कर सकता है उसको अङ्गरेज़ी मे विलपावर (Will Power) अर्थात् इच्छा शक्ति कहते हैं। इसी इच्छा शक्ति का उत्कर्ष साधन और उस शक्ति को चलाने की विद्या को मेसमेरिजम कहते हैं। और इच्छा शक्ति कैसे दृढ़ और आयत्त होती है। इसका सुगम उपाय इच्छा शक्ति * नामक पुस्तक में बतलाया जा चुका है। इसी कारण इच्छा शक्ति को मेसमेरिजम सीखने की हम सीढी कहते हैं।

जीव शरीर मात्र मे एक प्रकार का तड़ित पदार्थ मौजूद है जिसको अङ्गरेज़ी में एनिमल मेग्नेटिजम अर्थात् जीव देह की चौम्बक शक्ति कहते हैं। इच्छा शक्ति से उसको संयत भाव पर चलाया जा सकता है। और इसी इच्छा शक्ति के प्रभाव से अपनी देह का तड़ित पदार्थ दूसरे सजीव वा जड़ पदार्थ मे डाल कर उसे अभिभूत कर सकने का नाम मेसमेराइज्ज करना कहलाता है।

मेजमेरिजम योग विद्या का एक अङ्ग है इसको वशीकरण या मोहिनी विद्या भी कह सकते हैं। इसको अङ्गरेजी मे एनिमल मेग्नेटिजम, विटल मेग्नेटिजम, मेंटल इलेक्ट्रिसिटी आदि कई नामों से पुकारा जाता है। इन नामों का साधारण अर्थ है प्राणी देहज बिजली की शक्ति चालना करने की विद्या। अतएव इच्छाशक्ति और उस वैद्युतिक शक्ति की एक ही पदार्थ के रूप मे गणना होती है।

---

* इच्छाशक्ति हमसे मंगाकर पढ़ सकते हैं। मैनेजर जासूस बनारस।

सन् १७७४ ईस्वी में जर्मनी में फादरहेल नाम का पण्डित था जिसने पहले पहल इस विद्या से रोग दूर करके प्राणीमात्र को नीरोग करने का रास्ता निकाला लेकिन वह अपने उद्योग मे उतने कामयाब नहीं हो सके इस कारण उनकी ओर किसी की उतनी नजर नहीं गयी। उनके कुछ दिनों बाद सन १७७८ ई० मे डाक्टर मेसमर नाम के एक फ्रांस देशीय पण्डित उन्हीं फादर हेल के बतलाये रास्ते पर चलकर इसकी उन्नति में खूब लग गये। और सब बाधा विघ्न और लोगों के उपहास की कुछ परवा न करके अपने लगातार परिश्रम से इस विद्या में उन्होंने बड़ी सफलता उपार्जन किया और अपने काम से लोगों का उपकार करके सर्व साधारण का विश्वास भाजन बनने में समर्थ हुए थे तभी से यह विद्या मेस्मेरिजम कहलाने लगी।

कहने का मतलब यह कि इस विद्या की चर्चा बहुत प्राचीन काल से चली आती है बीच में कुछ समय तक अनेक कारणों से इसका लोप सा हो गया था इसलिये यह मेसमर साहब का निकाला हुआ (आविष्कार) कहलाने पर भी वह इन दिनों इसके उद्दार कर्त्ता ही हैं आविष्कारक नहीं। भारतवासी इस विद्या मे बड़े पारङ्गत थे महाभारत आदि में भी इसके बहुतेरे प्रमाण मिलते हैं। *

---

* वश्यतंत्र वा मोहिनी विद्या की कुछ प्रक्रियाओं का वर्णन योग शास्त्र की अणिमादिक अष्ट सिद्धि के वशित्व नामक सिद्धि में मिलता है यद्यपि वह ग्रन्थ इस समय अप्राप्त है। इसके सिवाय महाभारतादि प्राचीन ग्रन्थों में भी कई जगह इस विद्या का उल्लेख है।

शिक्षारम्भ

आरम्भिक परिभाषा—जो आदमी अपने शरीर से या दूसरे आदमी से साधन करता या कराता है उसको इस पुस्तक में हम साधक या सिद्ध कह कर पुकारेंगे और जिस किसी दूसरे के द्वारा साधन करता कराता है उसको क्रिया साधक या क्रिया पात्र कहेगे।

अपने शरीर से जो साधन किया जाता है उसको योग साधन और दूसरे के शरीर से जो साधन किया अर्थात् कराया जाता है उसको मेसमेरजिम कहते हैं यह हम कह आये हैं।

मेसमेरजिम सीखने के पहले साधक को अपनी शक्ति बढ़ाने, इच्छा शक्ति प्रबल और दृष्टिशक्ति स्थिर करने के लिये कुछ योग साधन करना बहुत जरूरी है। हम यहाँ पहले उस साधन क्रिया का विवरण बतलाते हैं।

पहले पहल साधक को जो क्रिया करना चाहिये उसको आत्मसंयम कहते है इसको शिथिलीकरण भी कह सकते हैं।

वह शिथिलीकरण इस तरह कि खुले प्रकाश और स्वच्छ वायु के आगमन योग्य स्थान पर अकेले एकान्त मे आसन पर बैठ जाना चाहिये। यह स्थान अपने स्वच्छ मकान की ऊपरी छत या छतवाली किसी खिड़की जँगले की हवादार कोठरी मे हो या नगर के कलकल और कोलाहल से दूर हरे भरे स्थान के एकान्त मैदान मे हो। जहाँ कोई पहुँच कर साधन मे खलल न कर सके।

निश्चिन्त होकर एक आसन पर इस तरह शान्त बैठना चाहिये कि शरीर का कोई भी अङ्ग हिले नही। यहाँ तक कि मुँह के

भीतर दाँतोंमें बसने वाली जीभ में भी कुछ हरकत न होने पावे। इसी तरह बिना हिले डुले चुपचाप आँखें बन्द करके ही बैठे। इस तरह शान्त होकर रोज़ सबेरे चार बजे शौच्यादि से निवृत्त होकर बैठने का अभ्यास बढ़ाते जाना चाहिये।

पहले इस काम में कुछ अंडस होगा लेकिन बराबर अभ्यास करने से यह काम बहुत ही सुगम हो जायगा। यह अभ्यास रोज बढ़ाते हुए पाँच मिनट, दस मिनट फिर आधा घंटा और एक घंटे तक जरूर ले जाना चाहिये।

जब यह साधन पक्का हो जाय तब उसी तरह बैठे बैठे एक से हजार तक गिनना और फिर लौटकर एक तक गिनती उतारना चाहिये।

इस तरह शान्त बैठने में जब शरीर सज जाय तब एक सफेद साधारण कागज जो बहुत चिकना नहीं न बहुत रुखड़ा हो एक फुट लम्बा और उतना ही चौड़ा लेकर उसके बीच में एक रुपये भर गोल काला दाग़ बनाकर दफ्ती पर लगाना और सामने दीवार पर या और किसी तरह लटका देना चाहिये जो हिलने नहीं पावे। सामने ही आसन पर पलत्थी मारकर इतनी दूर बैठना कि दो हाथ से अधिक दूर न हो। आँखों के ठीक सामने वह काला निशान हो अर्थात् सिर ऊँचा करना नहीं पड़े न नीचे करना ही उचित है। ठीक सामने बैठकर अपनी आँखें खोलकर उस निशान को इकटक निहारना चाहिये। पलकें एक दम पूरी खुली रहे। आँखें झपकें नहीं न कोई अङ्ग हिले। इस तरह टकटकी लगाकर देखने का अभ्यास रोज बढ़ाते जाकर एक घंटा तक करना चाहिये। इस साधन से दृष्टि स्थिर और पुष्ट होगी।

इस साधन के समय घी दूध बराबर खाना चाहिये। मसालेदार कोई भी चीज या मांस मछली मद्यादि हरगिज़

नही छूना या खाना चाहिये । * सिर में आँवले का तेल लगाना उत्तम है।

इस साधन में पहले काले दाग के चारो ओर सफेदी थिरकती हुई दीख पड़ेगी फिर कुछ दिनों के साधन पर स्थिर होकर बिलकुल दाग काले से स्वेत आलोकमय हो जायगा।

यह साधन प्रति दिन तीसरे पहर करना चाहिये और सबेरे चार साढ़े चार बजे सोने से उठते ही एक साधन करना होगा जो इस प्रकार है।

सोते से उठते ही आसन पर पलहत्थी लगाकर बैठ जाना और आँखे बन्द करके मन मे निर्मल आकाश का ध्यान लगाना चाहिये। जब सुन्दर नीला आस्मान दिखाई देने लगे तब एकाग्र होकर उसी का ध्यान दस मिनट तक करते रहना चाहिये कम से कम पन्द्रह दिन तक सबेरे इस साधन को करते जाना चाहिये सोलहवे दिन जब आस्मान स्वच्छ दिखाई देने लगे उसमे तारे भी चिकचिकाने लगें तब अपने ध्यान मे आकाश की जगह अपने किसी पात्र या मित्र की चिन्तना करना चाहिये। उसका मुँह नाक आँखें ठुड्ढी गाल सब ज्यो के त्यो दीखने लगेंगे। फिर जब वही आदमी आँख बन्द करने पर भी सामने खड़ा दीख पड़े तब परिश्रम सफल समझ कर अपनी शक्तिकी परीक्षा करना शुरू कर देना चाहिये।

इन साधनो मे गर्मी बढ़ेगी इस कारण साधारण तरल पदार्थों

---

* योग या मेसमेरिजम के सिद्ध साधक या क्रिया पात्र को सदा शुद्ध सात्विक भोजन दूध घी आदि खाना चाहिये मासादि तामसी नहीं।

का सेवन और स्नेह तैल (तिल का तेल) शरीर में मलना चाहिये। गरम मसालेदार चीज या नशे की कोई चीज हरगिज़ नहीं खाना चाहिये।

यह साधन बड़ा प्रभावशाली है। जो इस साधन में पक्का उतरेगा वह आगे चलकर बड़ी ही अद्भुत शक्तिवाला मेस मेराजर होगा।

सफलता की परीक्षा।

(१) धरती पर एक बड़ी वृत्ताकार लकीर खींचकर उसमें चींटी या और कोई छोटा कीड़ा छोड़ देना चाहिये या मक्खी बैठ जाय तो अपनी एकटक दृष्टि उस पर लगाकर मन में यही जोर लगाना चाहिये कि उस घेरे मे से वह जबतक नहीं कहें बाहर नहीं निकल सकती। खूब कड़े दिल से सब शक्ति लगाकर दृढ़ इच्छा से यही मन में होना चाहिये।

(२) चुपचाप आँखें बन्द करके मन में किसी परिचित का जो वही थोड़ी दूर पर हो ध्यान करना चाहिये। जब वह सामने आ खड़ा हो मनही में कहना कि आज तीन बजे (या और कोई समय) हमसे भेट करो।

(३) किसी खड़े आदमी की पीठ की ओर खड़े होकर उसकी पिछली गर्दन पर नजर जमाना और मन में कहना चाहिये कि हमारी ओर देखो।

जब तीनों काम इच्छानुसार हो चुके, तो अपने तईं पास हुआ समझो। फेल होने की स्वप्न में भी भावना नहीं करना चाहिये फिर भी फेल हो जायें तो फिर दूनी शक्ति से साधना

करके जरूर पास करलें तब आगे बढ़ना चाहिये। यह सब काम ठीक जैसे इच्छा होने से अपनी आँखें खुलती हैं। हाथ काम करता है। पाँव चलता है। मुँह खाने लगता है वैसे ही होंगे मनमें जैसे इन कामों को करने की इच्छा होते ही सब होने लगते हैं। वैसे ही यह सब काम भी होंगे। संसार में सब के सब आदमी के मनके अधीन काम करने को प्रकृत तैयार है। सबके लिये वैसे ही आज्ञा देना और सफल कार्य्य होते चलना चाहिये जैसे और सब काम मन के अधीन हुआ करते हैं। इच्छानुसार सब करने को सारी प्रकृति कमर कसे तैयार है। हुक्म की देर है। इसमें अविचलित धारणा और अटूट अचूक विश्वास से काम लेना चाहिये। जरा भी हिचक या पशोपेश नही लाना चाहिये यही हिचक, अविश्वास और हो या न हो का संशयित भाव सब चौपट करने वाला है उससे इच्छा बिलकुल पाक और साफ होना चाहिये।

ऊपर जो कुछ साधन कहा गया है वह योग का ही साधन है। इन साधनो के बाद साधक अर्थात् जिसकी सिद्ध संज्ञा हम कहेंगे उसको गहरी साँसका व्यायाम हर रोज करना चाहिये। साधक को सात्विक भोजन शुद्धाचार के सिवाय सत्य बोलना अपना दैनिक व्रत रखना चाहिये। यहाँ सत्य बोलने का नाम सुनते ही बहुत लोग कहेंगे कि सत्य पर चलने से काम ही नही चल सकता ऐसा बहुतो को कहते हमने सुना है लेकिन ऐसा कहने वाले को हम कादर और झूठा कहने का जो साहस कर रहे है इसके लिये वे लोग क्षमा करें। जिनको इसका अनुभव नही है वही आलसी इस तरह सत्य से विमुख होकर बहाना बनाते हैं हमने भी ऐसे बहाने अपने काव्यगुरु पं० प्रतापनारायण मिश्र से बनाये थे* लेकिन कहना यह है कि जो लोग ऐसा कहकर

* पण्डित प्रतापनारायण मिश्र कानपुर से प्रकाशित होने वाले ब्राह्मण

झूठ बोलने का रास्ता निकालते हैं वह स्वयम् धोखा खाते हुए औरो को भी धोखे में पड़ने का मार्ग बतलाते हैं। और बिना

पत्र के सम्पादक प्रसिद्ध कवि और सत्यवादी थे। उन्होंने एक बार इन पंक्तियों के लेखक से कहा था—बच्चा मेरे पास एक अनमोल वस्तु है। जिसे मैंने बेदाम पाया है। लेकिन संसार की सब सम्पति एक ओर पलड़े में रख दी जाय तो उसकी तुलना में वह हलका होकर उठ जायगी। सुनते ही आश्चर्य्य से मेरी आँखें ऊपर चढ़ गयीं। इसका अनुभव करके वह फिर बोले—"जो चाहे उसको भी मैं बेदाम देने को तैयार हूँ लेकिन कोई लेने वाला नहीं मिलता।" इतना सुनने पर तो और मानो आसमान से गिर कर मैंने कहा "पण्डित जी! वह क्या चीज है मैं भी तो सुनूँ।" उन्होंने फिर कहा—"नहीं बच्चा यों मैं नहीं सुनाता अगर तुमको श्रद्धाभक्ति हो तो उसे लो और बेदाम लो जब तैयार हो जाव तब मैं बतलाऊँगा कि वह क्या है?" मैंने जब बिना जाने समझे ऐसी मूल्यवान वस्तु के लिये भार वहन करने की स्वीकृति से अपनी असमर्थता प्रकट की तब उन्होंने निडर करके कहा—"कोई ऐसी वजनदार चीज वह नहीं है। जिससे तुम पिस जाने को डरते हो।" मैंने कहा—"अगर ऐसा हो तो मै उस बेदाम चीज को लेने के लिये पीछे नहीं हटूँगा आप बतलाइये।" पण्डित जी ने कहा लो मैं बतलाए देता हूँ सम्हालो। वह है सत्यभाषण। मैंतो सुनते ही कुछ समय तक सन्नाटे में आ गया। फिर कहा "पण्डित जी! मैं दिन रात झूठ बोला करता हूँ मुझसे सत्य भाषण कैसे बनेगा। उन्होंने कहा—इसका रास्ता तो मैं बतला देता हूँ। वह बहुत सुगम है। उसमें कुस कांटे कुछ नहीं हैं। ऐसा करे कि जब झूठ बोले तब गिनती लिखता जावे और सन्ध्या को रोज देखे कि कितना झूठ बोला है। गुरु जी के बतलाए हुए इस गुरु से चलने पर रोज संख्या घटती जायगी और अन्त को भूल से कहीं एक दो रह गयी तो वह भी अभ्यास से जाती रहेगी।

समझे बूझे अर्थात् इस मार्ग में कदम बढ़ाकर परीक्षा किये बिना ही सत्य से विमुख होते हैं जो सत्य बोलने को ऐसा कठिन संकट मय बतलाकर झूठ बोलना संसार यात्रा के लिये इतना आवश्यक कहते हैं उनकी बात छोड़ देने पर भी देखा जाता है कि लोग बिना काम के झूठ बोलना चना चबेना की तरह खुराक और ओढ़न डासन बनाये रहते हैं। यहाँ प्रसङ्ग बाहर बात होने पर भी झूठ की जरूरत और कारण पर हम यहाँ कुछ कह देना उचित और जरूरी समझकर लिख देते है। प्रायः देखा जाता है कि आदमी जिससे झूठ बोलता है अगर उससे कुछ धोखा देकर माल मारना नही है तो केवल इसलिये झूठ बोलता है कि वह रञ्ज न हो। लेकिन बाबा कबीर ने बहुत ठीक कहा है कि—

साँच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप।
जाके हृदय साँच है वाके हृदय आप॥

गोसाईं तुलसी दास जी कहते हैं नहिं असत्य सम पातक दूजा। गिरि सम होहिं कि कोटिक गुञ्जा॥ केवल किसी के रञ्ज होने के भय से जो झूठ बोलता है वह इतना भी नहीं समझता कि किसी परिचित या और प्राणी को खुश करने के लिये वह झूठ बोल रहा है लेकिन जो सत्य संसार का सिर मौर है जिसकी सत्ता सर्वोपरि है उससे विमुख होकर उसके रञ्ज होने की परवा न करके किसी प्राणी को प्रसन्न करने के लिये या कोई अपना अविनश्वर स्वार्थ साधन के लिये झूठ बोल कर कितना महान अनर्थ कर रहा है।

तात्पर्य्य कहने का यह है कि सच बोलना इतना महान इतना मान्य और महिमावान होने पर भी उतना कठिन अथवा असाध्य नही है जितना झूठ बोलने वाले उसको बतलाया करते हैं। एक सज्जन ने ठीक कहा था कि मैं सत्यवक्ता या संसार में सच्चा-

बनने का दावा नहीं करता न सत्य का मित्र होने की शक्ति रखने का ढोल ही पीटता हूँ लेकिन झूठ का शत्रु होने की सामर्थ्य मुझ में है।

यहाँ हमारा निवेदन यह है कि साधक या सिद्ध को सत्य भाषी होना जरूर चाहिये। ऊपर जो अनेक साधन बतलाये गये हैं उनमे परिश्रम करके आदमी जैसे समर्थवान हो सकता है सत्यभाषी होना उससे सुगम है किन्तु यह साधन सबसे अधिक प्रभुतावान और बलशाली है।

अब प्रसङ्ग बाहर बात कह देने के कारण क्षमा चाहते हुए कहना चाहते हैं कि साधक को गहरी साँस का अभ्यास जो रोज़ करना चाहिये उसकी विधि यों हैं—प्रकाश और वायु के बे रोक आने योग्य स्थान में समथर भूमि पर चित लेट कर धोती ढीली करके सारा शरीर ढील देना चाहिये कोई अवयव तनने नहीं पाये। फिर नाक से पहले धीरे धीरे फिर तेजी से साँस भीतर खींचना चाहिये यहाँ तक कि अब और हवा भीतर लेने को स्थान नहीं रहे तब ज्योंही भर जाय त्योंही * मुँह से, साँस जैसे भरा था वैसी ही गति से बाहर निकालना अर्थात् पूरक और रेचक करना चाहिये। इस तरह १५ से बीस मिनट तक रोज करना चाहिये। इससे शरीर मे कोई रोग नहीं होगा। और साधक सदा नीरोग रहेगा।

इसको प्राणायाम नही स्वास प्रस्वास क्रिया या योगी की

---

* स्वास भीतर भर लेने के बाद ही बाहर करने की क्रिया इस गहरी साँस में करना चाहिये। यदि स्वास भरने पीछे शक्ति भर भीतर रोक लिया जाय तो उसे भीतर कुम्भक और बाहर फेंकने पर शक्ति भर स्वास बाहर रोकने को बाह्य कुम्भक कहते हैं इसको भी साथ ही करने से प्राणायाम कहलाता है।

गहरी साँस कहते है। साँस सदा नाक से भीतर लेना और मुँह से वाहर निकालना चाहिये। मुँह से वाहर निकालते समय मुख को वैसा ही करना चाहिये जैसा सीटी बजाने में आदमी करता है। साथ हीं इस क्रिया के समय खाँसी छींक या अपान वायु का वेग नहीं आवे तो उत्तम है। इस क्रिया को प्रातः काल सोते से उठ कर ही आरम्भ करना चाहिये। क्रिया कर चुकने के बाद आकाश मे अरुणाई आवे और सूर्य्योदय होवे तव उत्तम है। और क्रिया करने से पहले शौच्य आदि से निपट कर सह्य हो सके और अभ्यास हो जाय तो स्नान कर लेना नहीं तो आँख, कनपटी, कन्धा, उरुस्थान, केहुनी, घुठना और पॉव धोकर क्रिया करना जरूरी है। माथे पर भी जल छिड़क लेना चाहिये।

जो लोग प्राणायाम नहीं कर सकते उनके ही लिये यह गहरी साँस की क्रिया (प्राणायाम नही प्राणायाम का बच्चा) करना उत्तम और आरोग्य वर्द्धक है इससे कोई रोग नही होगा वल्कि कुछ रोग हुआ रहेगा वह भी कुछ दिनों के वाद अवश्य दूर हो जायगा।

तड़ित शक्ति की परीक्षा और साधना

जिनकी परीक्षा करना है उनको सामने करके उनका एक एक करके हाथ अपने वायें हाथ से लेना और दहने हाथ की उङ्गलियो को कुछ ऊपर इस तरह किये हुए कि उनकी नोक उसके शरीर मे न लगे कंधे के पास पहुँचे पर से नीचे की ओर धीरे धीरे ले जाना उँगलियों को चाहे आपस मे सटा के भी रखा जा सकता है या एक के ऊपर दूसरी इस तरह भी रखा जा सकता है इस

तरह कई बार ऊपर से नीचे धीरे धीरे ले जाने पर यह मालूम हो जायगा कि कोई कोई अपने शरीर में एक विशेष आकर्षण अनुभव कर रहा है। यह भाव सब का एक तरह का नहीं होता। किसी किसी को थोड़ी सी गरमी मालूम होगी, किसी को कुछ ठंढक जान पड़ेगी। किसी को कुछ चुनचुनाहट होगी किसी की देह में कुट्टी सी कटेगी। किसी को झिनझिनी छूटेगी उन आदमियों मे जिनको यह भाव खूब साफ तौर से मालूम हो उनको अलग लेकर अपना काम शुरू करना चाहिये। यह सब काम करने वाले को सिद्ध और जिसके ऊपर किया जाय उसको साधक पात्र कहेंगे। इस तरह के भाव खूब स्पष्ट जिस साधक को जान पड़े उसको अलग करके उसकी आँख पर पट्टी बाँध देना और फिर उसी तरह से पहुँचे पर से उँगलियों को हाथ पर नीचे को ले जाना इस क्रिया को भी पास देना कहते हैं। पास और भी कई तरह के होते हैं जिनका आगे बयान किया जायगा। अब आँख पर पट्टी होने पर भी वह साधक ठीक ठीक बतलावेगा कि पास दिया जा रहा है या नहीं दिया जाता। लेकिन इस तरह आँख पर पट्टी देने से किसी किसी की एकाग्रता में विचलित भाव भी होने लगता है और वह आदमी ठीक ठीक बतलाने मे गोलमाल करता है डाक्टर ग्रेगरी* का कहना है कि इस तरह बहुत बार करके उन्होंने देखा है। रायकेन वक* आदि इस क्रिया के जानने वालों ने भी इसका विस्तार से वर्णन करके समर्थन किया है।

इस तरह परीक्षा करके जब कोई एक अच्छा अनुभव शील आदमी मिल जाय तब उस पर पास देकर परीक्षा करना चाहिये वह पास इस तरह कि दोनों हाथों की उँगलियो को उसी तरह

---

* यह लोग यूरप में इस विद्या के अच्छे जानकार हो गये हैं।

कुछ ऊपर किये हुए कि उनकी नोक शरीर से न लगे इस तरह शरीर को छुए बिना ही लेकिन शरीर से बहुत निकट करके सिर की चाँद से नीचे को ले जाना शुरू करे यह पास उस आदमी के सामने से भी किया जाता है और बगल से भी किया जा सकता है। सामने से करने से चेहरे पर से होकर हाथ पेट तक या पाँव तक हाथ ले जा सकते हैं और बगल से देना हो तो बाँह के ऊपर पहुँचे से होकर नीचे ले जाना होगा। हाथ उस साधक के शरीर से न छुए इसका ध्यान रखना चाहिये लेकिन शरीर से दूर भी न हो जितना ही निकट रहे उतना ही अच्छा है।

इस क्रिया के करते समय (Mesmeriser) का मन एक दम से स्थिर और दृढ़ इच्छा पूर्ण होना चाहिये। और साधक अर्थात् क्रिया पात्र जिसको अङ्गरेजी में सबजेक्ट (Sabject) कहते हैं अर्थात जिस पर यह क्रिया की जाती है उसका मन भी पूरा पूरा सिद्ध में अप्रतिकारक और सहिष्णु तथा आज्ञाकारिता का होना चाहिये किसी दूसरी ओर मन को नही ले जाना न सिद्ध की ओर से विरोध भाव होना चाहिये। उसका खूब अनुगत कर्म्मकारी होकर ही रहना चाहिये। इसके सिवाय वह स्थान होना चाहिये जहाँ और कुछ किसी तरह का शब्द या कोलाहल होकर शान्ति भङ्ग की सम्भावना न होवे। क्रिया पात्र सिद्ध की ओर टकटकी लगाकर देखता रहे और सिद्ध भी स्थिर दृष्टि से साधक की ओर देखे। इस तरह कुछ समय तक पास देने का अभ्यास जारी रखने से पात्र को अपनी शक्ति के अनुसार गर्म ठंढा, झिनझिनी झुनझुनाहट होगी या सुरसुरी जान पड़ेगी। जिस पात्र मे यह भाव खूब साफ और सुगमता से मालूम हो जानना कि वह पात्र उसका उपयुक्त साधक वा मीडियम हो सकता है। बलवान नीरोग और शक्ति सम्पन सिद्ध धीरज और अध्यवसाय

से सबको इस तरह वश मे कर सकता है। ऐसा भी हो सकता है कि इस तरह क्रिया करने में पहले ही सफलता नहीं मिले या कभी मिल भी जाय। कभी कई बार क्रिया करने पर भी सफलता नहीं मिलती लेकिन अभ्यास लगातार जारी रखने से जब वह क्रिया पात्र आयत्त हो जाता है तब खूब अच्छी तरह हो जाता और अव्वल दरजे का मीडियम होता है इस कारण सिद्ध को कभी हताश नहीं होना चाहिये बराबर दृढ़ आशा से ही लगातार काम करते जाना चाहिये। कभी कभी ऐसे पात्र भी मिल जाते हैं जो दो ही चार मिनट मे अच्छी तरह बड़ी उत्तमता से आयत्त हो जाते है।

अब एक और सहज तरीका यहाँ बतलाते हैं। किसी किसी अवसर पर इससे अच्छा काम होता है। क्रिया पात्र के सामने पास ही बैठकर उसके दोनों अङ्गूठे अपने दोनों हाथ से अलग अलग लेकर खूब नरमी से दबाओ और उसकी आँखों को टक लगा कर देखो। क्रिया पात्र को भी इसी तरह टकटकी लगा कर अपनी ओर ताकने को कहो। इस तरह एकाग्र भाव से परस्पर टकटकी लगा कर ताकने से बड़ा काम होता है। लेकिन अभ्यास नहीं होने से जैसे पास देने मे पहले कठिनाई आती है वैसे इसमे कठिनता नहीं होती। इस कारण सीखने वाले के लिये यह विधि उत्तम और सुगम साध्य है। लेकिन यह भी याद रखना चाहिये कि अभ्यास हो जाने पर लगातार सैकड़ों पास अनायास ही दिये जा सकते हैं। इसमें कौन दूसरे से अच्छा और सुगम साध्य है यह कहना कठिन है। इसको सिद्ध अर्थात् कार्य्य करने वाला ही चुन सकता है। क्योंकि कभी कभी दोनो मे से किसी से काम नही सधता और कभी दोनों से सध जाता है। इस कारण दोनों ही विधि से बारी बारी से साधना करना उचित है। और दोनो ही पात्र भेद से उपयोगी होते हैं।

यहाँ और बात कहने से पहले दो जरूरी बातों का समझा देना उचित है। पहली बात पात्र वा सबजेक्ट (Subject) की है उसके मन मे मेसमेरिजम के सम्बन्ध में विश्वास हो या न हो इससे कुछ आना जाना नहीं है लेकिन उसके मनमें इस विद्या पर श्रद्धा और इच्छा जरूर होना चाहिये। मनमे किसी और तरह की वेगवती चिन्ता न रहे। सिद्ध के क्रियाधीन होने मे पूरी इच्छा होवे। लेकिन जिस पात्र में ग्रहणशीलता *(Susceptibility) अर्थात् सहज ही किसी तरह बाहरी प्रभाव के वशीभूत वा अधीन होने मे प्रवणता हो उसके लिये यह सब कुछ भी दरकार नहीं है। दूसरी बात क्रिया करने वाले सिद्ध को प्रगाढ़ एकाग्रता चाहिये। ऐसी एकाग्रता ही के लिये स्थान निर्जन शान्त और चलनसार मार्ग से अलग होना चाहिये। आवाजाही का गोल माल, काना फूसी, वात चित, खांसना, छींकना यह सब एकाग्रता को तोड़ने वाले हो सकते हैं।

इस तरह की साधना में दो एक मिनट से दो एक घंटे लग सकते हैं। किन्तु एक वार करके दूसरी वार अर्थात् पुनरावृत्ति करने मे जितना ही आगे वढ़ेंगे उतना ही समय कम लगा करेगा।

केवल स्थिर मन से इकटक दृष्टि से ताकने मे खास करके सिद्ध और साधक दोनो के ऐसा करने से यह भाव उपजते देखा जाता है बहुत पास न बैठ कर कुछ अन्तर पर बैठने से भी ऐसा होता है।

ल्यूविस (Lewis) नाम के एक निग्रो मेसमेरिजम के एक सिद्ध अर्थात् क्रियावान थे वह ऐसी ही साधन प्रणाली से अर्थात्

---

* Susecptibility अभिभाव्यता जिसमें होती है उसको अभिभाव्य पात्र (Suseptible subject) कहते हैं।

कुछ दूर बैठ कर एकाग्र भाव से दृढ़ इच्छा सहित इकटक देख कर पाँच मिनट में सैकड़े बीस से पच्चीस आदमियों तक को ऊपर लिखे भावों से अधिक प्रभाववान भाव उपजा कर वशीभूत कर सकते थे। लेकिन उनको एकाग्र चित्त करने की बड़ी अनुपम शक्ति थी। जब वह क्रिया साधन करते थे तब उनके सब भाव भङ्गी से, और चेहरे से इस एकाग्रता का लक्षण ही दीप्तमान दिखलाई देता था।

फिर पात्र भी एकाग्र चित्त से इकटक ताक कर यह भाव उत्पन्न कर सकता है। डाक्टर डार्लिङ्ग (Darling) ने अपने हाथ मे लिये हुए छोटी सी चीज़ पर इसी तरह नजर स्थिर कराकर विलक्षण कृत कार्य्यता दिखलायी थी। और डाक्टर ब्रेड (Dr Braid) इसी तरह आँख के सामने कोई चीज़ रख कर उस पर लगातार नज़र लगवा कर हिप्नोटिजम (Hypnotism) वा मायानिद्रा उत्पन्न कराते थे लेकिन इस प्रक्रिया में एक विघ्न यह हो सकता है कि उसमे पात्र निद्रा अर्थात अभिभूतावस्था से और आगे जाकर बेहोशी मे चला जा सकता है उसमें पहुँचने पर उसे होश में लाना बहुत कठिन हो जाता है।

यहाँ हम निद्रा का भेद पूरा बतला देना उचित समझते हैं। मनुष्य का तीन प्रकार की निद्रा आती है। एक तो वही जिसमे सारा जगत विश्राम करता है। इसको तमोमयी तामसी निद्रा कहते हैं। दूसरा राजसी निद्रा इसी को रजोगुणी निद्रा अर्थात् मेसमेरिजम मे निद्राभिभूत कहते हैं।

तीसरी निद्रा सतोगुणी होती है इसको तुरीयावस्था अर्थात् सुषुप्त वा समाधि भी कहते हैं।

इन ऊपर लिखी क्रियाओं को ही अधिक समय तक निर्विघ्न समाप्त करने पर और बहुत सी चमत्कार पूर्ण घटना दिखाई देती

हैं। जिनका सविस्तर वर्णन यहाँ दिया जाता है। मेसमेरिजम की इन ऊपर लिखी प्रक्रियाओं में बड़ावल बड़ी अद्भुत शक्ति है।

निद्रा आने की बात ऐसी कि पहले तो आँखों की पलक पर स्पन्दन होकर आँखें ढकने लगती हैं जिनकी आँखें खुली रहती हैं। उनकी आँखों पर भी एक जाल सा आ पड़ता है। और क्रिया साधक अर्थात् सिद्ध का मुँह और अङ्ग धुंधला दिखला कर फिर दिखलाई नहीं देता। इसी समय एक प्रकार तन्द्रा का भाव आकर घेर लेता है और एक वयक वेहोशी सी हो जाती है। फिर जागने पर कितनी देर तक सोते रहे या सोते में क्या क्या घटना हुई है वह सब कहा नहीं जाता। सब समय मोह निद्रा मे ही बीत जाता है। और लम्बी साँस लेकर आदमी जाग उठता और कहता है अच्छी सुख निंदिया आयी रही। लेकिन पाँच मिनट सोता रहा है या पाँच घंटा सो नही कह सकता। इसी तरह की निद्रा को मेसमेरिक निद्रा या मोहिनी निद्रा तथा रजोगुणी निद्रा कहते हैं। अवस्था भेद से इसकी प्रगाढ़ता में कमी वेशी भी हुआ करती है यहाँ हम मेसमेरिक निद्रा का विषय विशेष रूप से वर्णन करेंगे।

पास देकर या इकटक ताक कर जो मेसमेराइज किया जाता है उसके विशेष फल मे सवसे पहले निद्रा ही मिलती है और ऊपर लिखे लक्षणो के वाद निद्रा ही अनेक अवसर पर मीडियम को मिला करती है इस कारण इसका विशेष वर्णन कर देना यहाँ वहुत जरूरी है।

वेहोशी होने से पहले सज्ञान अवस्था मे रहने पर भी इस विद्या से अनेक अच्छी अच्छी कार्य्यवाहियाँ हो सकती हैं लेकिन सज्ञान अवस्था मे इस विद्या की क्षमता से ऐसे कार्य्य करने मे कुछ विशेष साधना करने की जरूरत है। ऊपर किसी विधि से साधना करने पर निद्रा अवश्य आ जायगी लेकिन निद्रावस्था में

भी वैसे ही अद्भुत कार्य्य किये जा सकते हैं। अगर निद्रा आने से पहले ही ठीक निद्रा के पूर्वावस्था में पात्र रोका जा सके तो इन्हीं प्रक्रियाओं से यह सब काम पात्रके सज्ञानावस्था में सम्पादित हो सकते हैं। पहले हम निद्रा और निद्राकी सब घटना बतला कर पीछे सज्ञानावस्था मे किस तरह यह सब कार्य्य सम्पादित किये जा सकते है उसका वर्णन करेंगे।

पहले कहा जा चुका है कि निद्रागत पात्र जागने पर यह सब याद नहीं रख सकता कि निद्रावस्था में क्या क्या घटना हुई हैं लेकिन इससे ऐसा नहीं समझा जा सकता कि उसको अपने तईं उतना समय व्यर्थ गया जान पड़ता है। या इतने समय में वह पात्र जड़वत पड़ा था। साधारण जाग्रतावस्था की तुलना में उसका अज्ञान अवस्था में होना कहा जा मकता है लेकिन इतने समय तक वह तरह तरह की चिन्ता मे पड़ा था। नाना विषय की देख रेख मे था तरह तरह की बातें करता था। इन्हीं कारणों से इस तरह की निद्रा को ऐसी आश्चर्य घटना समझा जाता है। अब इस निद्रा मे जो विशेष विशेप लक्षण देखे जाते हैं उनकी एक एक करके यहाँ आलोचना करते हैं।

लक्षण

१ जाग्रत सुषुप्ति।

सोमनेम्बुलिजम (Somnanbulism) शब्द का अर्थ है स्वप्न भ्रमण अर्थात् निद्रावस्था में सचेतन की तरह भ्रमणादि करना। इस निद्रा को जाग्रत सुषुप्ति कहा जा सकता है।

मेसमेरिक निद्रा को गंभीर, प्रशान्त और अक्षुब्ध निद्रा कह

सकते हैं क्योंकि इस निद्रा में एक भी साधारण सज्ञानावस्था का क्षणिक विकाश भी नहीं होता और निद्रित पात्र को क्रिया साधक सिद्ध जब जो कुछ पूछता है उसका वह जवाब देता है और वह जवाब अप्रासङ्गिक वा बे हिसाब अलल टप्पू नहीं होता।

किसी समय किसी बात के लिये उसको सन्देह हो तो "मैं नही जानता" कहकर ही जवाब दे देता है। और जिस विषय मे उसकी निश्चित अवधारना नहीं है उसमे हाँ या ना कहना हरगिज़ नहीं चाहता। सिद्ध के कहने पर वह उठकर चला आता है और निद्रा की जिस अवस्था में रहता है उसी के अनुसार कम वा अधिक दृढ़ता के साथ चल सकता है। लेकिन तबतक उसकी आँखें बन्द रहती हैं या खुली होती हैं तौ भी उसकी उलटी ही गंगा बहा करती है। प्रकाश नहीं जानता। कुछ छू नहीं सकता अर्थात् आलोक स्पर्श बोध उसका नहीं रहता। अपने रास्ते मे कोई चीज़ है तो उसका ज्ञान उसको ऐसा रहता है जैसा साधारण अवस्था मे नहीं रहता।

यह सब उपाय, स्पर्श, श्रवण और गन्ध ज्ञान अति नैसर्गिक तीक्ष्णता द्वारा अथवा किसी तरह दैवी (Occult) अप्रकट अनुभव शक्ति से या दोनों से होता है या नही इसका विचार आगे किया जायगा। यहाँ इतना ही कह देते हैं कि यह सब भिन्न भिन्न घटनावली ऐसी होती हैं और एकही आदमी की भिन्न भिन्न अवस्था मे इनमे ऐसी विभिन्नता दिखलाई देती है कि दोनो ही इसके उत्पादक जान पड़ते है। कही कही निश्चित प्रमाण भी मिलता है कि वाह्यिक इन्द्रियाँ सब क्रिया विहीन हो गयी है।

आपही आप जिनको स्वप्न भ्रमण की अवस्था उत्पन्न होती है। उनका जैसा कुछ विवरण मिलता है। उससे जान पड़ता है कि उनकी भी यही दशा होती है। जिनको कभी स्वाभाविक स्वप्न

भ्रमण का दृष्टान्त सामने आया है वह अगर कृत्रिम उपाय से स्वप्न भ्रमण का दृष्टान्त देखने का अवसर आवे तो दोनों मे बिलकुल सादृश्य है यह बात वह उसी समय स्वीकार करेंगे।

डाक्टर ग्रेगरी का कहना है—"हमको कभी स्वाभाविक स्वप्न भ्रमणकारी को देखने का सौभाग्य नहीं हुआ है लेकिन जिन्होंने ऐसे केस (Case) ध्यान से देखे हैं उनसे जो विवरण मिला है और उनको जब मेसमेरिक स्वप्न सञ्चलन का दृष्टान्त सामने किया गया है उसी दम उन्होने दोनों को एक समान समझा और माना है।

२ श्रवण शक्ति की कमी बेशी।

किसी किसी अवसर पर निद्रितपात्र की श्रवण शक्ति ऐसी बढ़ जाती है कि देखकर बड़ा ही आश्चर्य्य होता है। लेकिन ऐसा सर्वत्र या सब अवस्था मे नहीं होता। अन्धे आदमी की तरह जान पड़ता है इनकी आँखो की भी कुछ क्रिया नहीं रह जाती उनसे आलोक स्पर्श का ज्ञान भी लोप हो जाता है। स्पर्श ज्ञान रसास्वादन और गन्धज्ञान सब अपनी अपनी निष्कर्म अवस्था में रहते है। इस कारण सब शक्तियाँ श्रवण शक्ति ही मे पहुँच कर एकत्र हो जाती हैं। स्वभाविक स्वप्न भ्रमण की अवस्था में श्रवणेन्द्रिय का ऐसा परिवर्त्तन होता है कि नही यह ठीक नहीं कहा जा सकता लेकिन अनुमान होता है कि मेसमेरिक निद्रा की अवस्था मे जैसा होता है वैसा ही इसमें भी कही कहीं सुन सकने की शक्ति बहुत बढ़ जाना या एक दम बन्द हो जाना सम्भव है। स्वप्न भ्रमण के ऐसे अनेक वर्णन मिलते हैं * जिनमे

* केतकी की शादी नामक पुस्तक ॥) पर मँगा कर इस स्वप्न सञ्चरण की भयङ्कर खून वाली घटना पढ़िये। मैनेजर जासूस बनारस।

भ्रमण करनेवाला किसी तरह का शब्द नहीं सुन सकता ऐसा भी सुना गया है कि अधिक जोर का शब्द होने से भ्रमण करने वाले की नीद टूट गयी है और वह बड़ी विपद मे पड़ गया है। कम आवाज्ञ करके देखा जा चुका है कि उससे निद्रा भङ्ग नही हुई।

मेसमेरिक निद्रा की अवस्था मे ऐसा होते बहुत देखा गया है कि और सब तरह के शब्दो के लिये पात्र को वज्र वधिरता हो जाती है। यहॉ तक कि उसके कान के पास पिस्तौल छोड़ने या घंटा बजाने की आवाज्ञ भी उसका निद्रा भङ्ग नही कर सकती। ऐसी वधिरता हर दशा मे निद्रा की एक अवस्था विशेष मे हो सकती है। और क्रिया साधक अर्थात् सिद्ध के इच्छानुसार सब दशा में उत्पन्न की जा सकती है।

३ भाव परिवर्त्तन

जब मेसमेरिक निद्रा से अभिभूत पात्र पूर्णरूप से प्रगाढ़ रजोगुणी निद्रामें हो जाता है अर्थात् विना जागे ही सब सवालो का जवाव बराबर दे सकता है तव यह देखा जाता है कि उसका चेहरा और भावभङ्गी तथा स्वर विलकुल वदला हुआ है। पहले जव यह निद्रा आती है तव आदमो ॲगुआये हुए की तरह मानो पिनक मे होता है लेकिन जव उसके वाद वह वात करने या जवाव देने लगता है तव एक दम भला चङ्गा होकर टन्नाका वोलने लगता है। उसकी ऑखे वन्द रहने पर भी वात चीत मे वह चैतन्य दिखाई देता है। उसका सब भाव भङ्गी दूसरे ही तरह का हो जाता है इस निद्रा की ऊँची अवस्था मे यह भाव परिवर्त्तन वहुत अधिक दिखाई देता है। यहॉ तक कि जागृत दशा का मिलान नही खाता। और कोई उन्नत प्रकृति का दूसरा ही आदमी सा नजर आने लगता है। ऐसा जान पड़ता है कि उसकी

अधम पाशविक वृत्ति दूर हो गयी है। और केवल बुद्धि वृत्ति और सब उत्कृष्ट भाव निकृष्ट भावों के ग्रहण से मानो उग्रह पाकर प्रदीप्त हो गये हैं। जो क्रिया स्वभाव से ही उन्नतमना और पवित्र भावापन्न हैं उनमें और ऐसे ही पवित्र भाव वाले पुरुषों में ऐसी घटना बहुत देखी जाती हैं। और साधारणतः कम बेष ऐसा हेर फेर सब मे होता है। कहने का मतलब यह कि मेसमेरिक निद्रा की ऊँची अवस्थाओं मे मुखश्री पर स्वर्गीय सौन्दर्य दिखलाई देता है वाणी और स्वर में भी वैसा ही परिवर्तन हो जाता है। ऐसी निद्रा में सबका स्वर जैसा साधारणतः देखा जाता है अर्थात् जिस ध्वनि मे वह बातें करता है उससे इसका स्वर और शब्द भिन्न हो जाता है। इसके स्वर में कोमलता और सुधीरता होती है। तात्पर्य मुखमण्डल पर जैसा स्वर्गीय सौन्दर्य्य आता है वैसे ही वाणी में भी कोमलता आ जाती है।

कभी कभी शोक सूचक कातर स्वर भी होते देखा जाता है। जहाँ निद्रित मनुष्य मृत आत्मीय बन्धु की बात करता रहता है वहाँ उसमे सर्वोच्च अवस्था पहुँचने पर स्वर और सौन्दर्य्य में नयी अवस्था आ जाती है। अर्थात् चेहरे पर स्वर्गीय ज्योति की अनुपम श्री और पवित्र मुग्धकारी हास्य छटा विराजमान होती है। कण्ठ स्वर भी उसीके अनुरूप अमृत बरसाने वाला हो जाता है। मेसमेरिक निद्रा मे पड़े हुए आदमी की जो संज्ञा है वह साधारण संज्ञा से एक दम परे है। वस्तुतः वह एक भिन्न व्यक्ति न होने पर भी जीवन की भिन्न अवस्था मे है वह अवस्था साधारण अवस्था से अनेक गुणा ऊँची है।

४ नवजीवन वा विभक्त संज्ञा

मेसमेरिक निद्रागत पात्र जो कुछ अनुभव करता है जो स्वाद चखता है सूँघता है; सुनता है या जो कुछ कहता करता है जागने

पर उसकी उसे कुछ भी याद नहीं रहती। असल बात यह कि इस निद्रावस्था में उसकी मानो एक नयी जिन्दगी हो आती है। उसका ज्ञान दो भागो मे विभक्त जान पड़ता है। साधारण अवस्था मे जैसे व्यक्ति भेद से स्मरण शक्ति कम या अधिक होती है मेसमेरिक नींद की दशा मे भी वैसा ही कुछ अन्तर दीख पड़ता है। लेकिन तौ भी उतना नही कम मात्रा मे।

मेसमेरिक निद्रा मे पड़ा हुआ पात्र साधारण अवस्था से एक दम भिन्न हो जाता हो यह बात नहीं है। जहाँ निद्रावस्था के कार्य्य और भावो का कुछ भी चिह्न जागने पर मनमे नहीं रहता वहाँ भी सम्पूर्ण रूप से विच्छिन्न नही कहा जा सकता। वल्कि ऐसा भी देखा जाता है कि मेसमेरिक निद्रा मे अनेक समय साधारण अवस्था के परिचित बिषयों की ठीक ठीक बातें करता है और एक विशेष लक्षण यह है कि किसी आदमी या किसी वस्तु विशेष का नाम कहने में अक्सर उसको रुकावट होती है या कभी ऐसा होता है कि उसका उच्चारण ही नही कर सकता किन्तु उस आदमी या वस्तु की व्याख्या कर देता है। उसका वर्णन करता है लेकिन अक्सर मौके पर उसका नाम नहीं लेता या नही ले सकता अगर कोई वह नाम कहे तो उसपर हाँ कर देगा लेकिन खुद वह नाम नही धरेगा। मेसमेरिक निद्रा में अनेक अवसर पर आत्म विस्मृति होते भी देखा जाता है। खुद अपना नाम नही बतलावेगा या दूसरे किसी का नाम बोल देना अक्सर वह क्रिया साधक अर्थात् सिद्ध का नाम कह देगा। कभी कभी वह सिद्ध का नाम भी गलत कहकर पुकारेगा लेकिन जिस आदमी को जिस नाम से कह चुका उसको उसी नाम से बराबर कहता रहेगा।

ऐसा भी होता है कि यह विभक्त संज्ञा आप ही आप हो

आती है। कोई कोई आदमी अक्सर बारी बारी से दो संज्ञाओं की अवस्था धारण करता है। एक संज्ञा में जो कुछ सीखा था दूसरी संज्ञा में वह सब भूल जाता है इस कारण उसको बालक की तरह फिर आरम्भ से सब सीखना पड़ता है। मेसमेरिजम में भी कहीं कहीं ऐसी घटना हुआ करती है। निद्रित आदमी साधारण दशा मे जो विषय अच्छी तरह जानता है या लिखना पढ़ना उसको मालूम है वह भी बालक की तरह क ख ग से नया शुरू करता है लेकिन ऐसी दशा विरले अवसर पर दिखाई देती है।

मेसमेरिजम की सब घटनाओं में यह विभक्त वा द्विरूप संज्ञा एक बड़ी ही आश्चर्य्य जनक और अति सुन्दर है। यह भी कहीं पूर्ण रूप से कहीं अपूर्ण रूप से हुआ करती है। निद्रित पात्र की बात पर विश्वास करने से इस आश्चर्य्यमय घटना की परीक्षा सहज ही की जा सकती है *

जो लोग मेसमेरिजम के सत्य पर सन्देह करके सत्य की खोज करना चाहते हैं जो मेसमेरिक निद्रा की वास्तविकता का विश्वास नहीं करते वह यह सब परीक्षा करके अपना समाधान कर सकते हैं।

५ दर्शनेन्द्रिय-अन्तर्दृष्टि वा दिव्य दृष्टि की निम्नतर अवस्था

निद्रित पात्र की आँखें बन्द रहती हैं। लेकिन उसके मन को जब किसी वस्तु पर आकर्षित किया जाता है तब ऐसी बातें करता है मानो वह उस वस्तुको देख रहा है ऐसा भी समझा जाता

---

* यहाँ यह भी जानना चाहिये कि निद्रित व्यक्ति की सत्यवादिता पर विश्वास किये बिना उसकी साधारण संज्ञा के सम्बन्ध में कुछ निर्धारण नहीं किया जा सकता।

है कि उसको देखने की चेष्टा कर रहा है। लेकिन जितना ही चेष्टा करता है उतना ही उसकी आँखें और बन्द हुई जाती हैं। कोई चीज़ हाथ मे दी जाय तो उसको टटोल कर देखता है। और स्पर्श शक्ति की तेजी से या और किसी उपाय से ऐसा उसका ठीक वर्णन करता है जैसा देखने वाला कर सकता है। वह उस वस्तु को अपने ललाट से, मस्तक के शिखा स्थान से, सिर के पिछले भाग या पेट पर लगा कर उसका वर्णन करता रहता है। लेकिन क्रिया साधक सिद्ध जब तक वह चीज उसकी बन्द आँखो के सामने रखे रहे तब तक वह कुछ भी कह नही सकता। वह इतना ही करेगा कि वह उसे देखता भर है। साथ ही उस चीज को जानने के लिये अपने मस्तक की दर्शन शक्ति लगाने की कोशिश करता है। यह साफ है कि इस कोशिश में वह बहुधा सफल होता है। लेकिन इसमे बहुधा उसको कष्ट भी होता है। निद्रा की पहली अवस्था मे ऐसा कष्ट पात्र को बहुत हुआ करता है। इस अवस्था मे क्लेयरवायेंस (Clairoyance) अर्थात् दिव्य दृष्टि का प्रभात मात्र दिखलाई देता है उसके बाद जब निद्रा की उच्चतर अवस्था होती है तब इसकी माध्याह्निक दीप्ति दिखलाई देती है। इस अवस्था मे उस वस्तु को किसी न किसी तरह निद्रित के पास सटाकर या कम से कम बहुत ही निकट रखना जरूरी है कहीं कहीं तो उसको बतलाने या ठीक विवरण में विघ्न होते हैं। *

मेसमेरिक निद्रा की जितनी भिन्न भिन्न अवस्थायें होती हैं उनमें परस्पर निर्दिष्ट सीमा स्थापन कराके उनका विभाग करना बिलकुल अनहोनी बात है। लेकिन यहाँ तक हो सकता है कि जिस

---

* दिव्य दृष्टि बहुत कठिन विषय है इसमें [illegible] उच्चतर और उच्चतम अङ्ग अलौकिक घटनाओं [illegible]

जिस दशा में दिव्य दृष्टि अथवा उच्चतर सहानुभूत शक्ति (Symp athy) होती दिखलाई देवे उसको हम लोग उच्चतर या अन्तोत्पन्न अवस्था और जिनमें इन दो शक्तियों का विकाश नहीं तो उनको निम्नतर या प्रथमोत्पन्न अवस्था या इसी तरह का कोई साधारण नाम देते हैं ।

६ सम्पूर्ण समाधि (TRANCE)

भावावेश (Ecstasy) जिस अवस्था में होता है उसको तीसरी या उच्चतम अवस्था कहा जा सकता है। अनेक अवसर पर निद्रित पात्र निम्नतर अवस्था में बँधा न रह कर एक दम उच्चतर या दिव्य दृष्टि की अवस्था को प्राप्त हो जाता है । लेकिन ऐसा भी होता है कि कभी उसी आदमी की पहली ही निद्रा के समय निम्नावस्था में रहने के स्पष्ट चिह्न दिखलाई देते हैं। प्रथमोत्पन्न अवस्था में जो घटना दिखलाई देती हैं वह सब प्रायः अन्तिमोत्पन्न अवस्था में देखे जाते हैं। किन्तु उस समय सहानुभव शक्ति और दिव्य दृष्टि के आश्चर्य्य काण्ड देख कर उधर चित्त नहीं जाता। यही निम्नतर और उच्चतर अवस्था फेनामिनल घटनाओं में आलोचना की वस्तु है। अतएव इस समय दिव्य दृष्टि न होकर भी जो घटना होती है दिव्य दृष्टि को अवस्था में भी प्रायः वही मौजूद रहती हैं। इसका सविस्तर वर्णन आगे यथा स्थान दिया गया है।

७ श्रवणेन्द्रिय

मेसमेरिक निद्रा में पड़ा हुआ पात्र बराबर क्रिया साधक (सिद्ध) की बातों के सिवाय और कुछ भी सुन नहीं सकता। लेकिन ऐसे पात्र भी देखे गये हैं जिन्होंने सिद्ध के सिवाय वहाँ उपस्थित और लोगों की बातें सुनकर भी उनका जवाब देते हैं

और उनसे पात्र का कुछ भी सम्बन्ध या परिचय नहीं है ऐसे अवसर पर भी पात्र आप ही आप या सिद्ध की इच्छा द्वारा उसको अधिक पास देने पर उच्चतर अवस्था में पहुँचाया जाता है। उस अवस्था मे वह सिद्ध अर्थात् क्रिया साधक के सिवाय और किसी की बात नही सुन सकता। कभी ऐसा भी होता है कि मेसमेरिक निद्रा की उच्चतर अवस्था मे पहुँचने पर सिद्ध की बातें भी नहीं सुन सकता था कान से सुनने की शक्ति लोप होकर शरीर के और अवयवों मे प्रकट होती है और उस दशा मे पात्र कानो से न सुन कर और अङ्गों के ज्ञान से सुनता है किसी के हाथ की उङ्गलियो पर किसी के पेट पर किसी के माथे पर बोलना होता है। मेसमेरिजम मे और सब जैसे तरह तरह की विचित्रता देखी जाती है वैसे ही यह भी है। इस तरह किसी किसी अवसर पर सिद्ध के सिवाय और किसी की बात सुनने मे या सुनकर जवाब देने में उसी सिद्ध द्वारा उस पराये आदमी से शारीरिक वा मानसिक सम्बन्ध जोड़ना होता है। इसके उदाहरण मे हम स्वयम् डाक्टर ग्रेगरी की परीचित एक घटना यहाँ लिख देते हैं:—

"एक स्त्री आप ही आप जब उच्चतर मेसमेरिक निद्रा मे पहुँच गयी अर्थात् वह सिद्ध की बात भी सुनने मे असमर्थ हुई लेकिन जब सिद्ध उसकी उङ्गलियो की नोक के पास मुँह ले जाकर बात करने लगा तब सुनने लगी थी पहली बात मे कुछ झिझक उठी लेकिन फिर तुरत ही पूछने पर ठीक तौर से सुनने और जवाब देने लगी। दूसरा कोई कितना ही चिल्लाया नहीं सुन सकी। यहाँ तक कि बन्दूक का फैर भी उसको सुनाई नहीं दिया लेकिन उसके चेहरे पर कुछ भी परिवर्तन नही हुआ। वह जो कुछ उस समय देख रही थी उसीको वर्णन करने लगी। वह

वर्णन विना किसी के पूछे आप ही आप करने लगी। उस समय उस पात्र से दूसरे लोग भी उसी तरह बात कर सके थे। मैंने दो घंटे तक उससे उँगली की नोक पर खुद बातें की थीं।

ग्रेगरी।

अनेक समय ऐसा होता है कि इस प्रकार निद्रित पात्र सब लोगों की बातें सुनता है और सब का जवाब देता है लेकिन सिद्ध जाहिर या अव्यक्त इच्छा द्वारा पात्र की यह शक्ति उसी दम पूरे तौर से लुप्त कर दे सकता है। इस कारण जब किसी नये आदमी पर निद्रा लाने की कोशिश की जाती है तब घर के और शब्द या रास्ते की आवाजाही अथवा बातचीत से विचलित हो जाता है। अतएव इन शब्दों को न सुनो सिद्ध के ऐसा कहने पर उसे मेसमेरिक निद्रा आ जाती है।

८ स्पर्शेन्द्रिय और कष्टानुभव का लोप।

मेसमेरिक निद्रा में पड़े हुए आदमी को अक्सर कष्ट वा यंत्रणा अनुभव करने की शक्ति एकदम नहीं रहती। अर्थात् सुनने की शक्ति जैसे नहीं रहती वैसे ही छूने आदि का त्वचा ज्ञान भी नहीं रहता। बहुतेरे पात्रों की आप ही आप ऐसी अवस्था हो जाती है नहीं तो जरूरत पड़ने पर सिद्ध की व्यक्त या अव्यक्त इच्छा से ऐसी अवस्था उत्पन्न की जा सकती है। कुछ लोगों को इसपर विश्वास नहीं होता उनको यह भ्रम है कि आप ही आप पात्र जबतक ऐसी उच्चतर निद्रा में नहीं पहुँच जाता तबतक पात्र की यह शक्तियाँ नहीं लुप्त होतीं। सिद्ध की व्यक्त या अव्यक्त इच्छा द्वारा जो ऐसी उच्चतर निद्रा लायी जातीहै उसमे इन शक्तियों का लोप नहीं होता। ऐसा उनका विश्वास है

कष्टानुभव की शक्ति लुप्त करने की जितनी विधियाँ जानी

गयी हैं, उनमें यही सबसे बेखटके और उत्तम है। इससे बड़े बड़े काम होते हैं।

मेसमेरिजम द्वारा अनुभव शक्ति अर्थात् स्पर्श और कष्टानुभव आदि का लोप करने मे अन्त को किसी तरह की असुस्थता का लक्षण नहीं दिखलाई देता अगर कभी मेसमेरिक निद्रा के बाद किसी तरह की कोई बीमारी हो या किसी पात्र को निद्रा से जाग्रत करने में कुछ कठिनता या कष्ट हो तो यह सिद्ध अथवा क्रिया साधक की अर्वाचीनता के कारण होता है। किस तरह शक्ति नियंत्रित करना होगा सो न जानने के कारण ही सिद्ध देवता ऐसी अवस्था पर पहुँचा देते हैं। जो लोग कौतूहल वश या तमाशा दिखा कर मित्रो मे वाहवाही बटोरने के लिये ऐसी मेसमेरिक निद्रा उपजाते हैं उन्हीं से ऐसा हुआ करता हैं।

पहले ऐसे सिद्ध अपने पात्र की इस दशा से चमत्कृत होते हैं और अपनी कारखाई पर शङ्कित भी होते हैं लेकिन जब निद्रित को जगाने की कोशिश करके भी देखते हैं कि पात्र एकदम वज्र बधिर हो गया है तब घबराकर बगलें झाकने लगते और दौड़ धूप का अध्याय सुरू करते हैं। और इसी की सहानुभूति से पात्र में भी यह भाव आता है। और उसको होते होते कष्ट होता और उसको ऐंठन अकड़न और तड़का भी हो सकता है। उसके बाद सिद्ध की घबराहट औरबढ़ सकती और डाक्टर बुलाने का परिच्छेद आरम्भ हो जा सकता है। वहाँ डाक्टर देवता इस विषय से कोरे होने के कारण जो कुछ उपचार बतलाते हैं उससे और अरिष्ट कर दे सकते हैं।

ऐसी घटना होने पर दो बातो की याद रखना चाहिये। उन दो बातो को कहने से पहले शिक्षार्थी को यहाँ एक बात और जानना

बहुत जरूरी है। वह यह कि बहुदर्शी मेसमेरिक सिद्ध के सामने रहे बिना मेसमेरिजम करना ही कल्याणकारी नहीं है।

उन दो बातों मे पहली बात तो यह है कि मेसमेरिक निद्रा उपकार के सिवाय अपकार करने वाली नहीं होती। ऊर्द्धव मुख या उलटे पास करके यथा रीत्या नींद छुड़ाने के उपाय नहीं मालूम हो तो घबराने या इधर उधर और उपचार करने से हानि के सिवाय लाभ कुछ नहीं होता। स्थिर होकर धीरज से विपरीत पास का प्रयोग करते रहना अच्छा है। किसी दूसरे को अपने पात्र का शरीर स्पर्श नहीं करने देना चाहिये। क्योंकि दूसरे के छूने से क्रास मेसमेरिजम का दोष होता है। उससे बड़ा ही अनिष्ट होना सम्भव हैं। दूसरी बात यह कि अगर सिद्ध देव अपने तई संयत और स्थिर रह कर अविचलित भाव से ऊर्द्धव मुखी पास नहीं ही देख सकते तो पात्र को विरक्त न करके चुप चाप उसे सोने देना अच्छा है। उसको हिलाये डुलाये बिना शान्त से पड़े रहने दिया जायगा तो दो तीन घन्टे मे या दश बारह अथवा २४ घन्टे में नहीं तो अन्ततः ४८ घन्टे से अधिक वह दशा नहीं रह सकती। साधारणतः दो तीन घन्टे से अधिक ऐसी दशा नहीं देखी गयी है। अगर तीन घन्टे से अधिक यह निद्रा चले तो समझना चाहिये कि हिलाने डुलाने या और कुछ उपचार करने या Cross mesmerism से यह दोष हुआ हैं। कुछ विघ्न न किया जाय तो नाड़ी की गति और स्वास प्रस्वास देखने से जाना जायगा कि पात्र मे कुछ वैसा विलक्षण वा विचलित करने वाले भाव नहीं आये हैं। ऐसी मेसमेरिक निद्रा मे रात के समय की स्वाभाविक निद्रा से भिन्न कभी कोई शङ्का जनक वा अधिक समय तक रहने वाली नहीं दिखाई देगी।

मेसमेरिजम से कष्टानुभव का लोपकर देने के विषय मे अभी

और कुछ कहना रह गया है। पहले हम कह आये हैं कि मेस-मेरिक निद्रा मे कष्टानुभव की शक्ति का लोप करना बहुतही अच्छा और उपकारी हैं। क्योकि यथा रीत्या शिक्षित विज्ञसिद्ध द्वारा इस क्रिया के सम्पादित होने से कुछ भी किसी तरह आफत विपत की कुछ शङ्का नहीं रहती। और क्रिया साधक जितने समय तक चाहें अपने पात्र को मेसमेरिक निद्रा मे रख सकते हैं।

किसी आकस्मिक घटना से कोई अङ्ग भङ्ग या हाथ पॉव टूट जाय ऐसी दशा मे बहुत देरतक उपचार कर ने का अवसर नहीं रहता। लेकिन खुशी की बात यह कि ऐसे आकस्मिक घटना के पतित पात्र सुगमता से पहले ही उपचार में निद्रा गत हो जाते हैं।

इस कष्टानुभव का लोप करके अस्त्र चिकित्सा (अपरेशन) आदि मे बड़े बड़े काम होते हैं। डाक्टर एसडेल मेसरेजिम द्वारा कष्टानुभव शक्ति का लोप करके अपरेशन सदा किया करते थे। उन्होने हुगली और कलकत्ते रहनेके समय इससे बहुतेरे लोकप्रिय काम किये थे। वह कहा करते थे कि यूरोपियनों के अपरेशन में इस विधि से अपरेशन मे दो एक मामलो में असफलता हुई भी लेकिन हिन्दुस्तानियो के अपरेशन में कभी असफलता नहीं हुई। डाक्टर एसडेल के अनेक हिन्दुस्थानी शिष्य भी उनके बतलाये रास्ते पर चलकर इस विषय में सफल परिश्रम हुआ करते थे।

पुरातन (अर्थात् क्रानिक) रोग में मेसमेरिजम के द्वारा चेष्टा करने से सफलता मिल सकती है। स्त्री को प्रसव काल से कुछ पहले चेष्टा करके आयत्त करने से प्रसव वेदना से रिहाई मिल जा सकती है। यदि नीरोग मनुष्य मेसमेरिजम के प्रभाव से आयत्त किया जाय तो उसके किसी दुर्घटना जनित कष्ट के समय

या रोगी होने के समय उसको कष्ट से बचाया जा सकता है। *

इस काम के लिये कम उम्र से ही आदमी को मेसमेराज करना शुरू कर देना उचित है। क्योंकि थोड़ी उम्र वाले बढ़ी उम्र वालों की अपेक्षा अजिक आधित भाव रखते हैं। और एक बार मेस-मेराइज हो जाने पर बराबर उनपर प्रयोग सुगमता से हुआ करता है। इसके सिवाय वह लोग विना तीन पाँच किये सब कार्य्य उपदेशानुसार किया करते हैं।

६ निद्रावस्था का स्थायित्व ज्ञान

मेसमेरिक निद्रा मे रहते समय निद्रित पात्र सदा सिद्ध के अधीन रहता है। सिद्ध अर्थात् क्रिया साधक थोड़ा या बहुत समय निश्चित कर देते हैं और निद्रित पात्र अगर उस समय तक निद्रा मे रहना मंजूर करले तो सब ठीक है। ठीक समय पर निद्रा भङ्ग होगी और पात्र जाग उठेगा। उसके वास्ते और कुछ प्रक्रिया करने की जरूरत नही होगी। क्रिया साधक की इस क्षमता से बड़ा काम निकल सकता है और अपरेशन के समय तो इस शक्ति की बड़ी ही जरूरत है।

अगर सिद्ध कुछ समय न निश्चत करदे तौभी निद्रित पात्र थोड़े या अधिक समय के बाद अन्त को आप ही जाग उठेगा। आध घन्टे से दो घन्टे तक यह निद्रा रहते देखा गया है। कभी

---

* वैज्ञानिक विधि से और यथाविधि परीक्षा द्वारा इस विद्या का तत्त्वानुसन्धान करते रहने से ऐसे उपाय निकल सकते हैं जिनसे मेसमेरिक शक्ति द्वारा इच्छा करते ही जिसे चाहें आयत्त कर सकते हैं रायक्रेन बक Rie chanbach's Re searches) भी अपनी गवेषणा के पूरे विवरण में यह आशा कर गये है।

कभी बहुत से प्रश्न करने पर निद्रित पात्र कह देता है कि अब थक गये हैं जगा देने के वास्ते प्रार्थना करो। सब हालतों में पात्र की ऐसी इच्छा के अनुसार ही काम करना उचित और कल्याणकारी होता है। लेकिन बहुत ही आवश्यकता हुए बिना क्रिया पात्र को क्लान्त नहीं करना चाहिये। क्यो कि अधिक परिश्रम करने से उसकी शक्ति और फुर्ती में विघ्न होता है।

१० भविष्य दर्शन और प्रथमा भास

क्रिया साधक निद्रा का समय निश्चित करदें या नही किन्तु बहुधा निद्रित पात्र पूछे जाने पर ठीक कह देता है कि इतने समय तक वह निद्रा में रहेगा। और कई बार पूछने पर भी वही बात कह देता है। यह एक आश्चर्य की बात है क्यों कि जहाँ समय निर्धारित नहीं है वहाँ यह बात भविष्य ज्ञान का प्रथम आभास है। लेकिन इसके सिवाय भविष्य ज्ञान का और कुछ निदर्शन कहीं नहीं पाया जाता। जब यह पूछा जाता है कि कैसे समय का ज्ञान हुआ तो इसकी व्याख्या पात्र लोग भिन्न भिन्न करते हैं। कुछ स्थानो में पात्र कहते है कि जितने समय तक वह निद्रित रहेंगे उसकी सूचना सामने दिखाई दे रही है इसीसे कहा है।

निद्रितपात्र पूछने पर यह भी बतला देता है कि उसको किस रीति से अर्थात् पास देकर या और विधि से मेसमेराइज करने मे सुगतमा होगी। यह भी कि भविष्य मे उसकी क्षमता कैसी होगी ? कितने दिनों पर उसको सब बतला देने की शक्ति होगी। निर्दिष्ट साधन के लिये कितने दिनों तक वा दिनमे कै बार निद्रागत करना होगा ? यह सब पात्र ठीक ठीक बतला देता है और उसकी बातें सब सच्ची उतरती हैं। यह सब बातें पात्र कई बार निद्रित हो जाने के बाद ही कहने लगता है कुछ पात्र पहली ही

बार के प्रयोग पर कह दे सकते हैं। इससे भी उनके भविष्य ज्ञान का प्रभात दिखलाई देता है। इसके सिवाय अपने स्वास्थ्य के सम्बन्ध में किसी भावी घटना की बात भी ठीक कह देता है जो दिव्य दृष्टि के ऊँचे अङ्ग का विषय है।

११ निद्रित की घटनाओं का जाग्रत से सम्बन्ध।

निद्रित अवस्था में जो घटा है वह सब पात्र को जगाने पर याद नहीं रहता किन्तु यह बात सब पात्रों के लिये एक सी नहीं होती। कोई कोई घटनाओं के कुछ अंश और कोई सब घटना याद रख सकते हैं। लेकिन जिसको घटना बिलकुल याद नहीं रहती वह भी क्रिया साधक की निद्रित अवस्था मे आज्ञा होने पर याद रख सकता है।

इस तरह मेसमेरिक प्रक्रिया करने के समय अनेक अवसरों पर किसी किसी विषय को जाग्रतावस्था में याद रखने की आज्ञा देना दरकार होता है। जिस घटना को पात्र सम्भवतः याद रख सकता है उसको भी यदि क्रिया साधक का हुक्म हो तो पात्र भूल जा सकता है। और ऐसा करना कुछ अवसर पर जरूरी भी हो जाता है। यह पहले ही कहा जा चुका है कि निद्रा की दशा मे क्रिया पात्र पहले जितनी बार निद्रागत हो चुका है उन सब अवस्थाओं से परस्पर सम्बन्धित किया जा सकता है। और उसकी जैसी नैसर्गिक स्मरण शक्ति हो उसी के अनुसार उन घटनाओं की याद रख सकता है।

१२ सिद्ध के साथ पूर्णरूप से आयत्त क्रिया पात्र का सम्बन्ध।

मेसमेरिक निद्रा की दशा मे क्या क्या हुआ है जागने पर उसको भूल जाना और पहले निद्रित दशाओं में जो घटना

हुई हैं उनको फिर निद्रित होने पर याद कर सकना इन दोनों में समय समय पर बहुत ही भ्रम होते देखा जाता है। यह याद रखना चाहिये कि ऊपर लिखे दोनो भाव विभक्त वा द्विरूप संज्ञा के परिणाम हैं। केवल सिद्ध की इच्छा से ही दोनों अवस्था मे उतने समय तक के लिये स्मृति लोप हो सकता है उसकी आलोचना करने पर साफ जाहिर होता है कि क्रियापात्र की स्मरण शक्ति क्रिया साधक अर्थात् सिद्ध की इच्छा के अधीन की जा सकती है।

क्रियापात्र जब निद्रित अवस्था मे रहता है तब सिद्ध के इच्छा नुसार उसको जो कुछ याद रह सकती है वह भी भुला दी जा सकती है। पात्र की और पहले की निद्रित दशाओ मे जो घटना हुई हैं वही नही वल्कि उसको कव निद्रित किया गया, कब वह मेसमेराइज हुआ यह सब भी भुला दिया जा सकता है। यहाँ तक कि अनेक अवसर पर वह अपना नाम भी भूल जा सकता है अगर नाम नही भूले तब भी भुलाया जा सकता है केवल सिद्ध की इच्छाशक्ति से। यह भी इसका प्रमाण है कि पात्र सिद्ध के बिलकुल अधीन है। इसके प्रमाण मे और कहते हैं।

सिद्ध चाहे तो अपनी इच्छा से निद्रित पात्र की भुजा; या पाँव भी अचल कर सकता है। उसकी बोलती बन्द कर सकता है। यहाँ तक कि पात्र को उठने बैठने से भी हीन शक्ति कर सकता है। सिद्ध अपने पात्रो के समस्त शरीर को काठ की तरह कर दे सकता है। साथ ही यह सब दूर कर देने की शक्ति भी रखता है। तात्पर्य्य यह कि पात्र की सब पेशियाँ सिद्ध के सम्पूर्ण शासन मे हो जाती हैं।

१३ पात्र की अनुकरण प्रवणता

सिद्ध चाहे तो पात्र सब तरह से उसका अनुकरण कर सकता है भाव, भङ्गी आवाज सब उसी दम सिद्ध के आज्ञानुसार हो जायगा। अगर सिद्ध अपने पात्र से ऐसी भाषा में बात करे जिस को पात्र बिलकुल नहीं जानता तो उस भाषा में भी पात्र बे रोक सिद्ध से बात चीत करता जायगा। वह बात चीत इस तरह कि किसी तरह ऊच्चारण आदि में भूल नहीं होगी। सिद्ध अगर हँसे तो पात्र हँसेगा। सिद्ध चाहे जैसा भाव भङ्गी करे पात्र उसी दम बेरोक बे सङ्कोच उसकी नकल करेगा। जैसा जागने पर पात्र कभी हरगिज नहीं कर सकता वह सब काम भी निद्रितावस्था में सिद्ध के आज्ञानुसार करने को वह वाध्य है।

१४ तीसरे के साथ पात्र का सम्बन्ध

निद्रित पात्र अगर स्वभाव से ही सिद्ध के सिवाय किसी तीसरे की बात सुनने या समझने में असमर्थ है तो सिद्ध उसके साथ भी उसका सम्बन्ध जोड़ सकता है। अक्सर तीसरे आदमी का हाथ छुला देने से ही यह सम्बन्ध हो जा सकता है और कभी सिद्ध के कह देने पर पात्र तीसरे से वैसा ही बरताव करेगा जो सिद्ध से करता है। ऐसा भी होता है कि तीसरा आदमी जबतक पहले सिद्ध से बात करने को नहीं कहे तब तक वह उससे बात नहीं कर सकता। ऐसी दशा में पात्र आयत्त परिवर्तन करने में एक बार चौंक उठता है जरूर लेकिन निद्राभङ्ग नहीं होता।

१५ भावोद्दीपन

क्रियासाधक चाहे तो निद्रित पात्र के मन का हर एक भाव गति और क्षमता पर तरह तरह के उपायों से प्रकाश डाल सकता

है। मस्तक पर भिन्न भिन्न जगह हाथ रखकर तरह तरह से क्रिया उसी प्रकार कर सकता है इस क्रिया को फ्रेनो मेसमेराइज* कहते हैं।

पात्र को सुखी वा प्रसन्न, दुःखित या चिन्तित विरक्त या सतुष्ट दानी या कृपण, गर्वित या दाम्भिक, चञ्चल वा प्रशान्त, साहसी या भीरु, आशान्वित या निराश उद्दण्ड या विनीत इत्यादि जिस भाव में चाहे किया जा सकता है। उसे गान कराना, चिल्लवाना हँसाना, रुलाना, नचाना, अभिनय करना, बन्दूक छुड़वाना, वक्तृता दिलाना,, प्रार्थना कराना आदि सिद्ध जो चाहे करा सकता है। अर्थात् सिद्ध जो चाहे सब करा सकता है। केवल उसके हुक्म की देर है। बहुत जगह निद्रित पात्र को मदिरापान की हानि या कभी मेसमेरिजम के विषय पर व्याख्यान देते सुना गया है। कितने ही को उत्तम लय पर प्रार्थना करते भी कवित्व पूर्ण रसीली बातें करते भी देखा गया है। वह पात्र जागने पर वैसा हरगिज नहीं कर सकते थे। पात्र से सज्ञान अवस्था मे भी यह सब कराया जा सकता हैं वह फेनामिनल अध्याय की बातें हैं।

ऊपर लिखी क्रिया के साधन समय मे पात्र जो कुछ भाव भङ्गी करता या जिस स्वर मे बात करता है उसका सब रहन सहन, कायदा सब दोष शून्य और निर्मल होता है। जो काम

---

* Phreno-Mesmerisn.—फ्रेनालजी (Phesnulody) वा शिरः सामुद्रिक नाम की एक विद्या है जिसमें यह वर्णन बड़ी बारीकी से किया गया है कि मस्तक मे कहाँ कहाँ किस चित्त वृत्ति का स्थल हैं। मेस्र मेरिजम विद्या से उस विद्या का संयोग करके जिस क्रिया की उत्पत्ति होती है वही सब फ्रेनो मेसमेरिजम के विषय हैं।

वह करता है। वह निपुण अभिनेता और भाँड़ भी नहीं कर सकता। अनेक अवसरों पर देखा गया है कि जिन पात्रों ने ऊपर लिखे कार्य्य सम्पादन किये हैं जाग्रतावस्था में उनका चिह्न मात्र भी उनमें नहीं न वैसी शिक्षा ही पाये हुए हैं।

पहले भी कहा जा चुका है कि जिन जिन पात्रों का चरित्र विशुद्ध और उन्नत है वह मेसमेरिक निद्रा होने पर अपने उन्नत स्वभाव के और भी उत्कर्ष दिखलाया करते हैं वैसे पात्रों की उच्चवृत्ति को अगर इच्छा पूर्वक और उत्तेजित कर दिया जाय तो पवित्रता सुन्दरता, और भाव भङ्गी तथा मुखमण्डल की श्री का प्रगाढ़ गाम्भीर्य और अद्भुत छटा ऐसी देखी जाती है जैसी बड़े बड़े निपुण चित्रकारो की कल्पना में भी नहीं आ सकती। मेसमेरिक घटनाओं में कैसे कैसे अनमोल शिक्षा की खानि भरी पड़ी हैं किसी ही किसी चित्रकार को यह ज्ञान है अगर सबको यह मालूम होता तो जरूर इन दृश्यों का अध्ययन करने के लिये निपुण चित्रकारों का दल अपना बहुत-सा समय इसमें लगाता दिखलाई देता। डाक्टर ग्रेगरी ने अपनी छोटी-सी पुस्तिका एनिमल मेग्नेटिजम मे एक अद्भुत घटना इस प्रकार लिखी है—

"मैंने खुद देखा है एक स्त्री साधारण कुल की तेरह चौदह वर्ष की होगी वह सुन्दरी जब मेसमेरिक निद्रा में थी। तब उसको भक्ति भाव में उत्तेजित कर दिया गया था और गान हो रहा था उसके मुख मण्डल पर वह अलौकिक स्वर्गीय छवि विराजमान थी जिसको मैं शब्दों मे नहीं बतला सकता। उसके मुख मण्डल पर जो देव भावपूर्ण पवित्र सौन्दर्य्य की ज्योति देखी वह मैं जिन्दगी मे कभी कल्पना भी नहीं कर सका था। सिर के जिस अंश की पुष्टि से उन्नत मनोवृत्तियाँ समझ में आती हैं इस युवती का वह अंश अति सुन्दर गठन का देखा और जिसकी पुष्टि से

हीन वृत्तियों की अधिकता जानी जाती है उसका आयतन बहुत ही कम था।

ग्रेगरी।

ऐसी घटनाओं में पात्रो की सत्यनिष्ठा एक विशिष्ट लक्षण कही जाती है तौ भी जो लोग पहले पहल ऐसी घटना देखते हैं उनके मन में यही सत्यनिष्ठा घटना की असलियत पर सन्देह का कारण हो जाती है। पात्र अगर अशिक्षित है तो निद्रावस्था में वह कितना ही उन्नत क्यों न हो और उसका व्यवहार कितना ही संशोधित वा परिष्कृत हो उसमें कुछ ऐसा रह जाता है जिसको देख कर उसको अशिक्षित समझा जाता है। अतएव वह जो कुछ करेगा उसमे यद्यपि स्वाभाविक की अपेक्षा अन्यथा भाव नही रहेगा लेकिन उसके सब अवयव पूरे नहीं होंगे वह नया है ऐसा जरूर बोध होगा । जो स्वभावतः शुकुमार और कोमल है। उन्नत शिक्षा जिसको मिली है उस पात्र से परीक्षा करने पर ऐसे चमत्कार भरे कार्य दीख पड़ेगे कि दर्शकगण मुग्ध हो जावेंगे।

निद्रित पात्र गाने बजाने से स्वाभाविक अवस्था मे जैसे मोहित हो जाता है उससे अधिक परिमाण में मेसमेरिक निद्रा गत दशा में मुग्ध हो जाता है। ऐसे पात्रो का वदन मण्डल उज्ज्वल कान्ति से भर जाता है। खेमटा या दादरा सुनते ही नाच उठता है भला मानस होने से यथा रीति ताल सुर से नाचता है अगर हर-जोत्ता किसान हुआ तो कूद फाँद कर निहंग होकर नाच करेगा वैसी मधुरता नही आवेगी। अगर पारमार्थिक भाव भरा गान हुआ तो हाथ जोड़ कर नरमी से प्रार्थना करेगा। या भक्ति भरे भाव से उसमे शामिल होगा जो लोग गाना बजाना नही करते न इसका कुछ मर्म्म जानते हैं वह भी ऐसे अवसर पर इस तरह योग देते देखे गये हैं।

लोविस साहब नाम के मेसमेराइजर कहते हैं कि उत्तम भाव-

पूर्ण गाना बजाना सुन कर नये पात्र बड़ी सुगमता से मेसमेरिक निद्रा मे पहुँच जाते हैं। जान पड़ता है इसीसे तन्त्र मन्त्र की क्रियाओं मे भी भजनादि स्तुति करने का रिवाज देखने मे आता है मंत्र साधक जब पात्र विशेष को मुग्ध करने की चेष्टा करता है वही आकर्षक गाना बजाना और सुगन्धित धूप दीप दिया जाता है।

निद्रित पात्र के जितने भाव भङ्गी होते हैं या जो कुछ वह कहता है या उसके चेहरे पर जो भाव प्रकाश होता है वह सब ठीक ठीक स्वभाव के अनुसार ही होता है और जो कुछ कहता है सब सच कहता है। और उस समय जो कुछ उससे पूछा जाता है उसमें अगर उसकी कुछ निश्चित धारणा नही है तो उसका जवाब देने से इनकार कर देता है। इसके विरुद्ध उदाहरण कहीं देखने मे नही आया। पूछने वाले ऐसे भी सवाल करते है जिसमे कुछ गोल माल होता है। वैसी बातो का जवाब देने की जगह पात्र कह देता है कि मैं ठीक नहीं कह सकता। मैं ठीक नहीं जानता। मैं नही देखता कि ऐसा है या नहीं।"–"मैं जिसे देखता नहीं जानता नहीं जो समझ मे नही आता उसको मैं कैसे कह दूँ" ऐसे ही वह जबाब देगा। साथ ही जो कुछ वह देखता है जानता है या समझता है उसमे कभी कुछ भी झूठ नहीं कहता।

१७ रोजगारी धोखा धड़ी

मेसमेरिजम के विषय मे खास करके जो लोग पैसा कमाने के लिये मेसमेरिजम करते हैं उनमे शठता और धूर्त्तता नही है ऐसा नहीं कहा जा सकता। और जो दरअसल सोमनोम्बूलिष्ट वा स्वाप्निक हैं वह भी किसी मौके पर छल कपट से दूषित हो सकते हैं इससे भी कोई सत्यनिष्ट इनकार नहीं कर सकता। जैसे किसी

को मेसमेरिक निद्रा में कुछ क्षमता हो आती है और उसको लोभ है या लोगों में बड़प्पन बघारने या दिखलाने की उसको बड़ी इच्छा है। यह सबको मालूम है कि सबकी सदा सब तरह की क्षमता समान भाव से नही विकाश पाती। इस कारण यदि कोई आदमी कुछ लोगो मे या बहुतो मे अपनी शक्ति दिखाने या दिखा कर पैसा पाने का लोभ करके गया और उस दिन और दिनो की तरह उसकी गोटी लाल नही हुई या पहले इन कामों को अच्छी तरह उतार देने से उसकी शक्ति सब खो गयी है तब उसकी बातो से बाघ मारने के अहंकार ही पर धक्का नही लगता बल्कि उसके लाभ की आशा भी बहुत घट जाती है और सम्भानित सत्यनिष्ठा और सन्मान भी नही रह जाता। तब चालाकी से क्षमता का अभाव पूरा करने की कोशिश करता है यह कमजोर हृदय का स्वाभाविक है।

यह भी देखा जाता है कि ऐसा आदमी जिसकी क्षमता और शक्ति के विषय मे कुछ सन्देह नही किया जा सकता। वह भी समय पाकर बहुत थक जाने से या और किसी दैवी कारण से पहले से बहुत कम देखता है और उसी शक्ति की पूर्ति के लिये चालाकी से चेष्टा करता है। ऐसे पात्र जो पहले सूक्ष्मदर्शी थे समय पाकर अपनी हीनता कबूल न करने के कारण या इच्छित लाभ मे खलल होते देख कर ऐसे असाधु उपाय किया करते हैं। लेकिन इन बातों को उदाहरण स्थल मे नही रखा जा सकता क्योंकि जिसमें कुछ संशय हो या सन्देह हो सकता हो ऐसे प्रमाण को छोड़ देना ही उचित है जो लोग रोजगार के लिये यह सब कार्य्य सर्व साधारण को दिखलाया करते हैं या वेतन भोगी पात्रो से यह सब परीक्षा करते हैं उनके कामों मे संदेह का स्थान रहा करता है। ऊपर लिखी बातें दिव्य दृष्टि के अर्थात् ऊँची श्रेणी के कार्य्य

हैं लेकिन नीचे की श्रेणियों में भी ऐसा हो सकता है इसीसे यहाँ इतना कह देना पड़ा।

१८ निद्रा उत्पादन का समय भेद और उसकी अनिश्चयता

सिद्ध को किसी पात्र के पहले पहल निद्रा गत करने मे जितना कष्ट होता है एक बार निद्रित कर सकने पर फिर उतना नहीं होता। अक्सर ऐसा होता है कि जिस पात्र को आधे घन्टे से घन्टे भर तक या उससे अधिक समय लगातार परिश्रम करके पास देकर दृढ़ और सफल इच्छा शक्ति तथा सम्पूर्ण एकाग्रता से परस्पर टकटकी के बाद भी मेसमेरिक निद्रा नही लायी जा सकी वही पात्र दो एक दिन या सप्ताह अथवा महीने पीछे मिनट दो मिनट या आधे मिनट मे निद्रित हो गया। और खूब गाढ़ी निद्रा मे आ गया। यहाँ तक कि कोई कोई पात्र एक ही बार के पास और इकटक ताकने के बाद निद्राभिभूत हो गया। ऐसा बहुत पात्रों के साथ नहीं होता। लेकिन साधारणतः ऐसा ही कहा जा सकता है कि पहली बार क्रिया साधन के बाद आगे अर्थात् दूसरी तीसरी चौथी या और आगे निद्रा लाना सहज हो जाता है यह बराबर देखा जाता है जिनको धीरे धीरे क्रम से उच्च अभि-भाव्यता की अवस्था मे लाया जाता है वही उत्तम मीडियम पात्र हो जाते हैं। ऐसा भी सुना गया है कि जो सैकड़ों बार कोशिश करने पर निद्रागत नहीं हुए वह जब हुए हैं तब खूब प्रगाढ़ निद्रागत हुए हैं और उनसे बहुत ही लाभकारी और ऊँचे दरजे के काम हुए हैं।

जहाँ तक देखा समझा जाता है यही कहा जायगा कि हर एक व्यक्ति को दूसरे पर मेसमेरिजम करने की शक्ति है केवल मात्रा का भेद होता है अगर क्रिया साधक को धीरज और

अध्यवसाय है तो हर एक आदमी को वह मेसमेराइज कर सकता है। इस कारण प्रथम परीक्षा मे पूरी सफलता न हो या निष्फलता हो तौभी निराश होकर कमर थाम्ह बैठना उचित नहीं है।

१६—पात्र की योग्यता और अयोग्यता।

परस्पर विभिन्नता रहने से ही एक आदमी दूसरे को मेसमेराइज कर सकता है। जैसे नीरस रूखे स्वभाव का आदमी कोमल और सरस प्रकृति के आदमी को सहज ही आयत्त कर सकता है। क्रिया साधक (सिद्ध) यदि अच्छे मगज का उद्यमशील और (ऊँचे विचार का हो तो इस काम के यह अनुकूल लक्षण हैं लेकिन पात्र को यदि तेजस्विनी बुद्धि हो और वह खूब उद्योगी पुरुष हो तो यह इस काम के प्रतिकूल चाहे न हो लेकिन अनुकूल नहीं होता। अर्थात् उससे कार्य्य मे सुगमता से सिद्धि नहीं होती। क्योकि उसकी मानसिक वृत्ति क्षण क्षण मे तरह तरह की बातों पर दौड़ती रहती है इससे चित्त में एकाग्रता और एक निष्ठा नहीं आती। इसी कारण पात्र के सहज ही मेसमेराइज होने मे बाधाविघ्न हुआ करता है। इसके सिवाय मेसमेरिजम मे वश्यता या अधीन होने मे भी यह बुद्धिविघ्न करने वाले होते हैं। सर्व साधारण के सामने दिखलाने के समय जिसे कभी मेसमेराइज नही किया गया उसको भी करने की चेष्टा की जाती है लेकिन ऊपर लिखी प्रकृति के पात्र से कभी अनुकूल अधीनता नही उत्पन्न की जा सकती। अद्भुत घटनाओं के देखने और उसका तथ्य समझने की चेष्टा उनके मनमे बहुत जोर की होती है उनको बहुत आदमियो के सामने स्वाभाविक उत्तेजना भी वैसी ही अधिक होती है और यह भी उन्हें भय रहता है कि क्या जानें आगे चलकर उनका उपहास हो या कोई गुप्त भेद

प्रकट हो जाय इसकी भी शङ्का लगी रहती है। साथ ही मेसमेरिजम का प्रभाव रुद्ध करने की चेष्टा करें अर्थात् अपना (Active) भाव छोड़ते नहीं इन बातों से उत्तम कार्य सम्पादित नहीं होता। मेसमेरिक क्रिया के अधीन होने में कर्माधीन (Passive) भाव होना एक दम जरूरी है। विनीत और विनम्र पात्रों में मेसमेरिक परीक्षा अधिक सफलता से होती है इसका यही कारण है।

अशिक्षित साधारण आदमी मे अधीन और अनुकूल प्रकृति के लोग बहुत मिलते हैं लेकिन जो विद्या चर्चा या विज्ञान आदि साहित्य शास्त्र के अनुशीलन मे रहते हैं उनकी बुद्धि वृत्ति जैसी यत्नवान होती है अशिक्षित साधारण लोग वैसे नहीं होते। इसी कारण साधारण समझ का आदमी सुगमता से अधीनता पूर्वक उत्तम पात्र हो सकता है। इसके सिवाय देशकाल से उपजे स्वभाव का भेद भी उसमें भिन्नता डालता है। पहले कहा जा चुका है कि यूरोपियनों से इस देश के लोगों में विनम्र भाव वाले पात्र अधिक मिलते हैं! निग्रो और हबशियों में भो बहुत अधीनता का स्वभाव मिलता है। उनमें बड़े बड़े शक्तिवान सिद्ध भी देखे जाते हैं।

२० बिना पास दिये या बिना किसी प्रक्रिया के पात्र के जाने या अनजाने में निकट या दूर से इच्छा शक्ति की प्रकट या गुप्त चेष्टा से निद्रा लाना।

जब क्रिया साधक अर्थात् सिद्ध अनायास ही थोड़े समय में निद्रा लाने में समर्थ हो जाता है तब वह बिना पास या और कुछ प्रक्रिया किये ही केवल इच्छा शक्ति के बल से पात्र को निद्रित कर सकता है। यहाँ तक कि कभी कभी पात्र को मालूम

रहे या नहीं इससे भी उसके निद्रित होने में कुछ विघ्न नहीं होता। डाक्टर ग्रेगरी कहते हैं कि खुद उन्होंने ऐसा बहुत किया है वह लिखते हैं:—

"एक दिन एक आदमी सहज भाव से और साथियों से बातें करता था। मैं भी उसी बातचीत में शामिल था उस आदमी को इसकी बिलकुल खबर नहीं थी कि मैं उस पर कुछ प्रयोग कर रहा हूँ। इसी दशा में जब उसकी नजर उस समय और बत-कूचन करने वालों पर थी मैंने कोई २५ सेकण्ड में अपनी अव्यक्त इच्छा शक्ति से उसे प्रगाढ़ निद्रागत कर दिया उस पात्र से मैं चार पाँच फुट दूर बैठा था। वह एक घंटे के बाद जाग उठा तब मैंने पूछा "क्यों नींद अच्छी आयी रही न" उसने जवाब में कहा—"नींद तो खूब आयी रही लेकिन आपने मुझसे कुछ भी नहीं कहा कि मुझे मेसमेराइज करना है।"। ऐसी घटना बहुत हुई हैं। ग्रेगरी।

इस ऊपर लिखी घटना में सिद्ध पात्र के साथ ही बैठे थे लेकिन पास न हो कर दूर से भी यह क्रिया सफलता पूर्वक की जा सकती हैं। अक्सर ऐसा भी देखा गया है कि पात्र के जाने या अनजाने से सिद्ध ने दूसरे, कमरे मे या पात्र के ऊपरी महल अथवा नीचे के महल मे रहकर;भी उसे निद्राभिभूत कर दिया है। मतलब यह कि पात्र अगर खूब अधीन भाव का हो तो निकट या दूर बिलकुल नगण्य होता है। मेसमेरिक प्रभाव चाहे जो वस्तु हो वह प्रकाश की तरह जितनी दूर चाहे जा सकती है। हम तो एकही घर मे केवल पाटन के अन्तर पर बैठे हुए सिद्ध और पात्र की बात ऊपर कह आये हैं यहाँ और अधिक दूर की एक घटना भी कह देना उचित है:—

"सन् १८५० ई० की बात है महीना दिसम्बर का आरम्भ

था। जाड़ा पड़ता था वहाँ सन्ध्या के डाक्टर ग्रेगरी के घर कोई पचास सभ्य आदमी बैठे रहे होंगे। उनमें स्त्रियाँ भी रहीं। उस समय ल्यूविस साहब भी वहीं आगये। *ग्रेगरी उस समय लोगों को मेसमेराइज करने लगे। कई उनमें मेसमेराइज हो गये उनमें निद्रागत पात्रों में ग्रेगरी साहब के परिवार की एक स्त्री भी थी। वह इतना अधीन भाव की थी कि उसको और भी कई बार और लोग मेसमेराइज्ञ कर चुके थे। उस स्त्री को जब मेसमेराइज्ञ किया जाता था तब उसकी दोनों बाहें अवश हो जातीं और आँखें बन्द हो आती थीं। और उस समय जो भाव उनको अनुभव होता था वह उनको मालूम था। यह ल्यूविस साहब की मेसमेरिक शक्ति से अतिरिक्त अभिभूत हो गयी थी यह बात उन (ग्रेगरी) साहब को किसी ने नहीं बतलाई थी इसी से उन्होंने भी अपना प्रभाव जाहिर करने की कुछ चेष्टा नहीं की। इसका परिणाम यह हुआ जि उस स्त्री को सिर में बड़ी पीड़ा हुई। उसको सिर में सदा दर्द हुआ करता था और वह कहा करती थी कि उनको डि० मेसमेराइज्ञ (Demesmerise) अर्थात् (मेसमेराइज्ञ करने के समय सिद्ध जो पात्र पर शक्ति चलाया करते हैं उसको उलटे पास या क्रिया द्वारा उतार देना) नहीं किया गया इसी से सिर में दर्द हुआ था। दूसरे दिन सबेरा होने पर भी सिर में पीड़ा रही। कोई ग्यारह बजे दूसरे दिन जब ग्रेगरी साहब मिस्टर ल्यूविस से मिले तो पूछने पर ग्रेगरी ने स्त्री के सिर दर्द की बात कही साथ ही स्त्री ने इस पीड़ा का जो कारण कहा था वह भी बतलाया। ल्यूविस साहब ने सब सुनकर कहा— "सिर दर्द के लिये कुछ चिन्ता नहीं मैं दिन में उस पर ध्यान

---

*डाक्टर ग्रेगरी और मिस्टर ल्यूविस दोनों ही सुप्रसिद्ध मेसमेराइज थे।

देकर उस तकलीफ़ को दूर कर दूँगा।" ग्रेगरी साहब को मालूम था कि ऐसा होना अनहोनी बात नहीं है इसी कारण ग्रेगरी ने कहा—"जरूर कीजियेगा।"

इसके बाद ग्रेगरी जब और सब काम कर धरकर घर आये तब उस स्त्री की बातें उन्हें याद नहीं थीं। लेकिन कमरे में जाते समय उस स्त्री ने कहा—"जब तुम बाहर थे तब मुझे किसी ने मेस-मेराइज़ किया था।" उस समय ग्रेगरी को ल्यूविस की बातें याद आयी। उन्होंने पूछा—"सचमुच! किसी ने ऐसा किया था?" स्त्री बोली और कोई नहीं मैं साढ़े तीन बजे पियानो बजा रही थी। उस घड़ी ऐसा मालूम हुआ कि कोई मुझे मेसमेराइज़ कर रहा है। मेरे दोनो हाथ ऐसे बेकहे हो गये कि मै आगे बजा नहीं सकी। उसके बाद मुझे वह सब मालूम होने लगा जो मेसमेराइज़ होने पर हुआ करता था। दोही चार मिनट बीतने पर मुझसे सोये बिना नहीं रहा गया और थोड़ी ही देर मे मुझे मेसमेरिजम की नींद आ गयी। लेकिन जब जाग उठी तब देखा तो मेरा सिर दर्द बिलकुल अच्छा हो गया है। ग्रेगरी ने पूछा यह बात तुमने किसी से कही थी? स्त्री ने जवाब मे कहा—"कहती किससे? वहाँ तो कोई था नही। लेकिन जागने पीछे एक स्त्री आयी जो कल्ह रात के भी उस समय हम लोगो मे मौजूद थी। मैंने उन्ही से सब कहा और यह भी कहा कि ज्ञान पड़ता है ल्यूविस साहब मुझे मेसमेराइज़ कर रहे हैं।" ग्रेगरी साहब ने कहा—उन्होंने ऐसा करने को कहा तो था लेकिन नहीं मालूम किया है या नहीं जब सन्ध्या के ल्यूविस साहब से भेट हुई कमरे मे और लोगो के साथ बैठे। डाक्टर कमिङ्ग (Cumming) भी वहाँ थे ग्रेगरी साहब ने उनसे पूछा—उस स्त्री के लिये जो आपने वादा किया था सो किया या नहीं? उन्होंने जवाब दिया हाँ किया था। जब

डाक्टर कमिङ्ग ने सब सुना तब पूछा–"कब मेसमेराइज्ज किया था।" ल्यूविस साहब ने उसी दम जवाब दिया साढ़े तीन बजे। जब मैं घर लौट आया था। उससे पहले मुझे समय नहीं मिल सका।

संयोग से डाक्टर ग्रेगरी की कही घटना में सब अनुकूल प्रमाण भी मुहैया हो गये थे। उस स्त्री को यह कुछ भी पता नहीं था कि कोई उनको मेसमेराज करेगा। इधर ग्रेगरी साहब के घर लौटने से पहले मानो एक परिचित स्त्री गवाह के तौर पर वहाँ पहुँच गयी थी। फिर ल्यूविस साहब और ग्रेगरी में बातें हुईं तब भी एक मातबर गवाह वहाँ पहुँच गये। उनकी बातों का भी ल्यूविस साहब ने जवाब दिया था।

इस घटना या ऐसी ही और घटनाओं से जाहिर है कि पात्र यदि पूरा अधीन भाव का Passive हो दूरी की कमी बेशी कुछ विघ्न नहीं कर सकती इतना हो सकता है कि दूर से कुछ विलम्ब या क्षीण शक्ति कर सकता है।

पात्र को अव्यक्त इच्छा द्वारा निद्रित ही नहीं किया जा सकता बल्कि सिद्ध की व्यक्त इच्छा शक्ति से जो कुछ किया जा सकता है वह सब इससे भी किया जा सकता है। ऐसे सिद्ध पात्र से अपने इच्छानुसार अपने पास या जहाँ चाहें बुला सकते हैं किसी स्थान पर बिठा सकते हैं। या और जो काम चाहे करा सकते हैं। कहने का मतलब यह कि व्यक्त इच्छा द्वारा जो सब काम कराये जा सकते हैं वह सब अव्यक्त इच्छा से भी हो सकते हैं।

२१ आकर्षण का अनुभव

पात्र को सिद्ध की ओर एक तरह का आकर्षण होता है और सिद्ध इस आकर्षण द्वारा काम कर सकता है। उस समय पात्र के मन में सिद्ध के पास पहुँचने की अनिवार्य्य वासना होती है अगर उसमें कुछ रुकावट डाली जाय तो बाधा विघ्न पार करने

को पात्र जी जान से कोशिश करता है। अगर उससे पूछा जाय कि क्यों ऐसा कर रहा है तो उसका कुछ ठीक जवाब नहीं देता। यही कहता है:—क्या जानें मालूम नहीं कौन मुझे खींचे लिये जा रहा है। कोई कोई पात्र ऐसा भी कहता है कि बहुत बारीक सूत उसे फाँस कर खींच रहे हैं। पात्र कहते हैं कि वह सूत किरणों की ज्योति के समान चमक रहे हैं। ऐसी अद्भुत आकर्षण शक्ति का दूर से भी प्रयोग हो सकता है। एक बार कोई दो सौ हाथ अर्थात् तीन सौ फुट दूर से ऐसा ही आकर्षण एक स्त्री को हुआ था जो सिद्ध की ओर खींचता चला जाता था। एक सण्ड मुसण्ड आदमी भी उसको पकड़ कर रोक नहीं सका था। अन्त को जब सामने उसके दीवार पड़ गयी तब वह रुकी। ऐसी घटना सज्ञान अवस्था में भी हो सकती है।

यहाँ हम इस शक्ति की क्षमता दिखलाने के लिये डाक्टर विलियम्स के टेक्सबुक आव मेसमेरिजम (Text book of Mesmerism by Dr. William M. A.) से उद्धृत करते हैं एक समय कोई मिला आदमी डाक्टर विलियम्स के यहाँ पहुँच कर बोला कि किसी बहुत जरूरी कारण से इस समय उसको दो स्त्रियों से मिलना है लेकिन वह दोनों कहाँ हैं इसका उसको कुछ पता, नहीं है। कृपा कर डाक्टर साहब कुछ पता लगा दें। उसका अनुरोध और विनती सुन कर डाक्टर साहब बड़े असमञ्जस मे पड़े। उनको और कोई वसीला तो था नहीं केवल इतनी बात थी कि एक वार उन दोनो स्त्रियो को मेसमेरिक निद्रा में अभिभूत किया था। यदि उसी नाते उन पर आकर्षण चला कर बुला सकें तो काम बने। कोई एक वर्ष पहले एक बार मेसमेरिजम विषय पर उन्होंने व्याख्यान दिया था उस समय श्रोताओ पर मेसमेरिजम का जितना प्रभाव वह डाल सके थे

उसी से उस समय दोनों स्त्रियाँ उनके आयत्त हो गयी थीं। इसके सिवाय उनको उन स्त्रियो की कुछ बात मालूम नहीं थी। इस समय वह स्त्रियाँ कहाँ हैं इसका पता साहब को कुछ नहीं था न वह सभ्य आदमी ही कुछ बतला सका। उसने इतना ही कहा कि दोनों लन्दन से उत्तर ओर किसी जगह हैं। पीछे पता लगा कि वह जगह लन्दन से चौदह मील पर है। डाक्टर विलियम्स ने इस विषय मे खुद जो कुछ लिखा है वह हम यहाँ उद्धृत कर देते हैं।

"जब और कुछ उपाय नहीं रहा तब इसी साधारण सूत पर मैंने क्रिया साधन करने का निश्चय किया। वह भले आदमी अपना मतलब निवेदन करके चले गये थे दोपहर के बारह बज चुके थे। चूँकि मेसमेरिक साधक का मूलमंत्र यह है कि निराश नहीं होना। निदान क्रिया करने लगा। जिधर को उन स्त्रियों का होना सम्भव था उधर ही मुँह करके बैठ गया। और उधर ही मेसमेरिजम स्रोत चलाने लगा। मेरी दृढ़ इच्छा यही हुई कि यह स्रोत उन दोनों स्त्रियों को ढूँढ़ निकाले जहाँ वह होवें। और उनसे कहे कि आज सन्ध्या समय अमुक आदमी से मिलें जरूर मिलें। मिले बिना हरगिज़ न रहें। बस यही साधन और इच्छा कोई दो घंटे तक जारी रही। अन्त को जब मुझे यह भरोसा हो गया कि मेरा मेसमेरिक टेलिग्राम उनके पास पहुँच गया तब मैं चुप हुआ। चाहे जैसे हो मैं इसमे सफल हूँगा यही बार बार मुझे प्रेरणा हुई और घंटे घंटे पर अपना मेसमेरिक टेलिग्राम भेजने लगा खर्च तो उसमे कुछ नहीं हुआ। केवल जीवनी शक्ति खर्च होने लगी। यह तो पहले ही जाना हुआ था। सफल हुआ कि नही ऐसा नही जरूर सफल हूँ। मैं यही चाहता हूँ। जरूर मैं सफल हूँ। ले लिया है मेरा परिश्रम कभी विफल नहीं हो सकता

विफलता से मेरी कुछ छूआ छूत नहीं ऐसा दृढ़ सङ्कल्प होकर जो काम नहीं करता वह मेसमेरिक साधक होने योग्य हरगिज नहीं है। वह दोनों सन्ध्या को आ पहुँची। दोपहर को उनके मनमें बार बार आने की बात उठने लगी। फिर इस विषय की बात चीत शुरू हुई फिर चलना ही ठीक करके चल पड़ीं और संध्या को पहुँच गयीं।

विलियम्स

निद्रित दशा की प्रतिज्ञा का जाग्रदास्था में पालन

कहीं कहीं ऐसा देखा जाता है कि पात्र को जाग्रत दशा मे भी सिद्ध पर श्रद्धा और आशा उत्पन्न होती है। अगर पात्र को निद्रित होने पर कहा गया कि जागने पर फलां काम कर देना तो जागने पर ठीक उसी समय वह काम जरूर कर देगा। अगर निद्रित होने पर वह करेंगे कह चुका है तो जागने पर वह काम कैसा ही निन्दित या उपहास के योग्य हो वह जरूर करेगा। उसको किये बिना रह नहीं सकता जैसे किसी से कहा गया कि इतने बजे फलां स्थान पर जाकर अमुक आदमी से यह बात पूछना। जब वह समय आवेगा तब वहाँ जाने की उसके मनमे उठेगी। और जब तक वहाँ नहीं पहुँच जायगा तब तक उसको कल नही पड़ेगा। अगर कोई आदमी उसको पकड़ रखने की चेष्टा करे तो हाथ छुड़ा कर जरूर ही चला जायगा। अगर उससे कोई पूछे कि क्यो यह बात पूछता है तो यही कहेगा कि मेरे मनसे है कि इसके पूछे बिना मैं नहीं मान सकता। अगर इस काम मे उसको लज्जित होना पड़े या उपहास तो तौ भी उसे करेगा जरूर चाहे आगे फिर वह ऐसा वचन न देवें। निद्रित दशा मे प्रतिज्ञा

करके जाग्रत दशा में अच्छी नियत से अनेक काम कराये जा सकते हैं।

ल्यूविस साहब ने निद्रितावस्था में एक आदमी से बचन ले लिया था कि वह अब शराब नहीं पीवेगा फिर उसने सदा वह बचन निबाहा और कभी जाग्रत दशा में जिन्दगी भर मदपान नहीं किया उसने मेसमेरिक निद्रा में यह प्रतिज्ञा की थी यह बात उसे मालूम थी या नहीं इसकी खबर नहीं लेकिन चाहे मालूम हो या नहीं उस दशा में जो कुछ वह प्रतिज्ञा कर ले उसको फिर तोड़ने की हिम्मत उसे जिन्दगी भर नहीं होती। ल्यूविस साहब कहते हैं कि इस तरह उन्होंने बहुतों की शराब और दूसरे दोष छुड़ा दिये थे। तात्पर्य यह कि मेसमेरिक निद्रा में पात्र जो प्रतिज्ञा करता है वह जाग्रत दशा की प्रतिज्ञा से भी बढ़कर अकाट्य होती है इसमें कुछ सन्देह नहीं है।

मेसमेरिजम की नीची श्रेणी के मामलों में जो अधिक खुले हुए साफ और ध्यान देने के योग्य हैं उन सबका यथा शक्ति वर्णन हो चुका। अब यही सब अलक्षित रूप से ऊँचे दरजे में हो जाया करते हैं और अभ्यास बराबर जारी रखने से ऊँचे दरजे के सब काम स्वयम् विकसित होते हैं। अक्सर ऐसा होता है कि पात्र कुछ दिनों की क्रिया के बाद क्रिया साधक अर्थात् सिद्ध के साथ या उसके सिवाय जिन जिनके साथ सम्बन्ध स्थापित होता है उनके साथ ऊँची श्रेणी की सहानुभूति दिखलाने लगता है। या किसी एक तरह की दिव्य-दृष्टि की शक्ति पा जाया करता है।

पहला भाग समाप्त।

मोहिनी विद्या

अथात्

मेसमेरिजम

Curtative Mesmerism.

दूसरा भाग

मेसमेरिजम के साधारणतः दो भाग है। पहले को क्यूरेटिव अर्थात् रोग निवारक और दूसरे को फेनामिनल अर्थात् अद्भुत दर्शन कहते हैं इस व्याधि सङ्कुल संसार मे रोग दूर करना ही सफल मेसमेराइजर का प्रधान कर्त्तव्य है। जगत में इसके ऐसा दूसरा आवश्यक पदार्थ नही है। संसार मे रोग पीड़ित होकर कितने लोग दुःख भोगते हैं इसका कुछ ठिकाना नही शहरो के रहने वाले तो डाक्टर वैद्यों की सहायता भी पा जाते हैं लेकिन

नगरों से दूर देहात गावों मे रहने वाले आप ही दुःखी होकर अपनी मौत मरते हैं। उनको यह नही मालूम है कि जगत पिता परमेश्वर ने सब दुःख व्याधि दूर करने की शक्ति हमारे शरीर में ही दे रखी है। अगर हर घर या गाँव में एक दो आदमी भी इस शक्ति के जानने और चलाने वाले हों तो अपने हित मित्र या नाते गोते के आदमी या गाँव वालों की रोग दोष और खर्च से रक्षा करके आशीर्वाद और स्नेह पा सकते और सबके पूज्य और नमस्य होकर सुख सन्मान के साथ अपना जीवन बिता सकते हैं।

मेसमेरिजम विद्या में पारदर्शी होने के लिये क्रिया साधक में जो जो गुण होने चाहिये वह सब पहले भाग के आरम्भ मे लिखा जा चुका है। अब मेसमेरिक शक्ति से रोग आरोग्य करने के लिये जिन जिन विषयों का जानना जरूरी है उनका वर्णन यहाँ दिया जाता है। *

१—इच्छा शक्ति की दृढ़ता या मन की एकाग्रता ही मेसमेरिक साधक के लिये प्रथम और प्रधान वस्तु है। जो करने की इच्छा तो उसमें विलकुल एकाग्र भाव होना चाहिये। अर्थात् मन को सबसे उठा कर केवल उसी एक इच्छा में पूरे तौर से लगा देना होगा।

२—इच्छा की एकाग्रता ही यद्यपि मेसमेरिक साधक के लिये सब से प्रधान गुण है किन्तु साथ ही साधक की अपनी

---

* मेसमेराइजर को कौन कौन विशेष गुण होने चाहिये और मेसमेरिजम की नीची श्रेणी के मामलों में किस तरह शक्ति उत्पन्न की जा सकती हैं यह सब पहले भाग में बतलाया जा चुका है। इस दूसरे भाग की क्रियाओं का अभ्यास करने के पहले उस भाग का सब मनोयोग सहित पाठ और अभ्यास कर लेना उचित है।

शक्ति अपनी क्षमता पर अपना निःसंशय भाव अर्थात् सम्पूर्ण विश्वास होना भी बहुत जरूरी है जैसे एक आदमी का रोग दूर करने की क्रिया करने लगे तो मन में यह निश्चित धारणा चाहिये कि जो क्रिया की जा रही है उससे उस रोगी की तकलीफ जरूर दूर हो जायगी। रोग दूर हुए विना हरगिज नही रह सकता। ऐसा भाव दृढ़ होना चाहिये। अच्छा होना है तो जाय या अच्छा हो सकता है ऐसा डाँवाडोल भाव जब तक रहेगा। तब तक मेसमेरिक साधक रोग दूर नहीं कर सकता। ऐसे भाव वाले को इस काम में हाथ डालना ही व्यर्थ है।

३—साधक को हितकामना और परोपकार करने की असली धारणा होना चाहिये। जब किसी रोगी का इलाज किया जाय तब उसे नीरोग करने की एक निस्वार्थ कामना, उस पर सदय भाव मे प्रबल रहना चाहिये। उसको रोग दूर करके बहादुरी लेने या बदले मे कुछ उपकार पाने अथवा कुछ इनाम आदि प्राप्त करने की लालसा या लोभ हरगिज नही होना चाहिये। रोगी का उपकार करने ही की सोलहो आने इच्छा प्रबल रहे। उपकार के बदले किसी तरह के पुरस्कार आदि की ओर क्षण भर भी ध्यान कभी नहीं जाना चाहिये।

इन तीनों में से एक का भी प्रबल प्रताप होने से काम चल सकता है लेकिन काम चलाऊ भाव से सफलता में सन्देह रहता है। तीनों भाव प्रबल होने से ही सफलता धरी रहती है। इच्छा को सदा एक विषय पर रखने और मन को एकाग्र किये विना या उस एकाग्र भाव को बहुत समय तक करार रखने के लिये क्रिया साधक अर्थात् सिद्ध को अपनी क्षमता पर सम्पूर्ण प्रत्यय अर्थात् आस्था बिलकुल जरूरी है? इच्छा शक्ति को मन मे जिस रूप मे रखकर शक्ति चलायी जाय वैसी ही सफलता भी होगी।

इस कारण जितना ही हित कामना से साधक के मन का भाव प्रबल होगा उतना ही उसकी क्रिया से रोगी को उपकार मिलेगा। ऊपर लिखे तीनों गुण ही सफलता के लिये बहुत जरूरी हैं।

४—नर देहधारी मात्र में ही रोग निवारण करने की प्राकृतिक शक्ति है। और इसी प्राकृतिक शक्ति के बल से रोग आरोग्य हुआ करता है। जिस किसी रीति से चिकित्सा की जाय इसके बिना रोग दूर नहीं हो सकता। दवा तो केवल इसी शक्ति की सहायता भर करती है। जो लोग अज्ञान के कारण दवा को ही शक्ति सम्पन्न समझ कर रोग दूर करके इसका विरुद्धाचरण करते है वह आरोग्य होने मे विघ्न करते है। साथ ही बहुधा आरोग्य होने की सम्भावना का भी ह्रास कर देते हैं। यह सदा याद रखने की बात है कि चिकित्सा का उद्देश्य प्रकृति की सहायता करना है।

५—किसी रोगी की मेसमेरिक चिकित्सा करने से पहले नीचे लिखी बातों का विचार करना चाहिये—(क) जरूरत होने पर अधिक दिनों तक इलाज जारी रख सकता है या नहीं? (ख) रोगी या रोगी के अभिभावक अथवा परिजन वर्ग इलाज मे विघ्न तो नहीं कर सकेंगे? (ग) वह इलाज के लिये स्वयम् तैयार हुए हैं या नहीं? (घ) उनको उस इलाज मे किसी तरह की अनिच्छा, घृणा या शङ्का तो मन मे नहीं है।

६—इलाज मे सफलता पाने के लिये रोगी पर अनुकम्पा का भाव साधक को होना चाहिये। साथ ही उसे नीरोग करने के लिये पूरी इच्छा और भरोसा होना चाहिये। एक बार जब रोगी का इलाज करने का मन में भाव हुआ तो उस रोगी को अपना भाई बन्धु समझना होगा। अपनी कुछ इसमे हानि हो तब भी दिल खोल कर उसे बरदाश्त करने को तैयार रहना होगा।

उपकार करने के सिवाय और किसी भाव या मतलब को मनमे जगह देना नहीं होगा।

७—मेसमेरिजम से इलाज शुरू करने के पहले क्या उपाय करना या क्या करने से अच्छा होगा ऐसी चिन्ता करना हरगिज नहीं चाहिये। ऐसा करना एक दम उचित नहीं है। ऐसा करने से अनेक अवसर पर साधक का मन विचलित होता और समय नष्ट जाता है। इलाज की इच्छा पूर्ण इच्छा करके चाहे जिस रीति से कार्य्यारम्भ करके मेसमेरिक शक्ति चलाना चाहिये। जब सम्पूर्ण एकाग्र भाव होगा तब आप ही आप मन मे ऐसा एक भाव होगा कि रोगी के किस अङ्ग परशक्ति चलाना जरूरी है बस उसी के अनुसार करने से सफलता मिलेगी मनमें इस तरह का भाव उदय होने पर उसका तथ्य खोजने के बदले उसीके अनुसार कार्य्य करना उचित है। पात्र अधीन और खूब अभिभाव्य होने से कभी कभी वही खुद कह देता है कि वह कैसे और किस तरह की प्रक्रिया से आरोग्य हो सकता है। उस दशा में उसी के अनुसार कार्य्य करना साधक का कर्त्तव्य है।

क्यूरेटिव पास प्रकरण

Kinds of Curative Passes

मेसमेरिजम से इलाज करने वाले को सदा याद रखने की बात है कि रोग शक्ति शरीर मे प्रवेश करते समय बाहर से भीतर को और नीचे से ऊपर को जाती है। लेकिन बाहर होते समय वह भीतर से बाहर और ऊपर से नीचे को होती है। इसके प्रमाण मे देखा जाता है कि अनेक अवसर पर चर्म्म रोग भीतर

होकर सङ्गीन लक्षण प्रकट करते हैं फिर जब भीतरी सङ्गीन लक्षण आरोग्य होने की दशा मे पहुँचते हैं तब चमड़े के ऊपर अक्सर फोड़े या आवले निकल आते हैं। और ऊपर से अधो-भाग को जाते हैं। यह भी बहुतों ने अनुभव किया होगा। हम लोगों के शरीर मे जो जीवनी शक्ति है वही ऊपर लिखी रीति से रोग को खदेड़ने की चेष्टा करती है और रोग शक्ति तथा जीवनी शक्ति में जो संघर्ष होता है वही व्यथा और वेदना है। और तभी कष्टादि लक्षण उत्पन्न होते हैं।

जीवनी शक्ति की इस तरह रोग दूर करने की चेष्टा प्राकृतिक नियम होने के कारण आप ही आप होती है। रोगी अपनी इच्छा से या अपने जानने में अपनी जीवनी शक्ति को इस काम मे लगाता नहीं है लेकिन मेसमेरिक साधक रोगी की आत्म शक्ति के साथ अपनी शक्ति को इच्छा शक्ति द्वारा मिला कर जान बूझ कर रोग दूर करने मे लगाता है। इस तरह जान बूझ कर शक्ति चलाने का नाम पास करना कहलाता है।

पास करने के दो भेद हैं। कुछ पासों का मतलब शक्ति प्रवर्त्तन और कुछ का उलटा शक्ति निवर्त्तन है। इसी कारण पहले प्रकार के पास को प्रवर्त्तक पास और दूसरे को निवर्त्तक पास कहते हैं। अङ्गरेजी में इसको मेसमेराइजिङ्ग पास और डी-मेसमेराजिङ्ग (De-Mes Merisig Pass) कहते हैं।

हाथ की हथेली मे प्रवर्त्तन का गुण है और हथेली की पीठ मे निवर्त्तन का। रोगी के जिस अङ्ग या देह मे पीड़ा का स्थान है वहाँ शक्ति इकट्ठा करके पीछे उसी शक्ति के सहारे रोग शक्ति को वहिर्मुख वा अधोमुखी आकर्षण कर लाना ही मेसमेरिक चिकित्सक का उद्देश्य है। रोगी की ओर हथेली करके ऊपर से नीचे अथवा दाहने से बायीं ओर पास देना चाहिये। इसी पास

को प्रवर्त्तक या मेसमेराइजिङ्ग पास करते हैं। और इस तरह पास से कुछ क्रिया करके उस क्रिया को निवृत करना अर्थात् पराजित शक्ति को प्रतिसंहार करना ही निवर्त्तक या डी-मेस-मेराइज पास का मतलब है। जिस रीति से प्रवर्त्तक पास के समय हथेली रोगी की ओर कर दी जाती है और निवर्त्तक पास में हथेली की पीठ रोगी की ओर की जाती है। प्रवर्त्तक पास में ऊपर से नीचे और दाहिने बायें हाथ चलाना होता है निवर्त्तक पास मे नीचे से ऊपर और बाय से दाहिने हाथ चलाना पड़ता है। इसको उलटा पास भी कहते है।

डी-मेसमेराइज,वा निवर्त्तक पास रोग का इलाज करने में उतना दरकार नहीं होता। लेकिन प्रवर्त्तक पास के प्रयोग में अधिकारी होने से पहले निवर्त्तक पास को अच्छी तरह जान लेना बहुत जरूरी है। इसी कारण उसका यहाँ वर्णन किया गया है। यहाँ यह बतला देना जरूर है कि इस तरह दोनो प्रकार के पास की क्रिया करते समय इच्छा शक्ति को जाग्रत रखना ही होगा। प्रवर्त्तक पास करने मे जैसे प्रवर्त्तमान क्रिया के लिये साधन की इच्छा बलवती रहेगी वैसे ही निवर्त्तक पास देने के समय भी प्रवृत्ति क्रिया की निवृत्ति साधन के लिये इच्छा का प्राबल्य रहना बिलकुल जरूरी है। इच्छा शक्ति को निद्रितावस्था मे रखकर प्रवर्त्तक पास जैसे निष्फल होता है। निवर्त्तक पास देने मे भी वैसाही आदमी हतसफल हो जाता है।

१ प्रवर्त्तक (Mesmerising) पास

रोग का इलाज करने में जो कई तरह के प्रवर्त्तक पास सदा व्यवहार मे आते हैं उनका यहाँ वर्णन दिया जाता है।

१ लम्बा पास (Longitudinal or Long Pass)

इस पास की बहुत जगह जरूरत पड़ती है यह एक या दोनों हाथो से दिया जा सकता है। हथेली और उँगलियों का अगला भाग रोगी को ओर रहेगा। किसी चीज से लगी हुई, दूसरी चीज को अपनी उँगलियों के कोए और अग्रभाग द्वारा खींच लेने में उँगलियों को थोड़ा सा नीचे की ओर टेढ़ा करना होता है ठीक उसी तरह करके ऊपर से नीचे को धीरे धीरे खींच लाना होगा। दोनों हाथ से पास देने में हाथ पर हाथ का भार देकर पास देना होता है। इस तरह दोनों हाथों को तकलीफ़ कम होती है। इसके वास्ते बायें और दाहिने दोनों हाथ के अङ्गुठे को इस तरह एक पर एक करके रखना चाहिये कि दोनों अङ्गुठे दोनों हथेलियों से ढके होवें अर्थात् अङ्गुठे दिखाई नहीं देवें। और दोनों हाथों की तर्जनी आपस में सटी होवें। लेकिन ऐसा करना बहुत जरूरी नहीं है। जो जिस तरह चाहे उँगलियों को रख सकते हैं लेकिन दोनों हाथ बहुत दूर न रहें इसका ध्यान रखना उचित है। अधिक परिमाण में शक्ति लगाने की जरूरत होने पर उँगलियों को आपस में सटाकर रखना ही अच्छा है लेकिन उन्हें अलग अलग भी रख सकते हैं। उस दशा में भी उनमे अधिक फाँक नहीं रहना चाहिये।

जहाँ से पास देना शुरू करना है वहाँ जब हाथ से ले जाना होगा तब, हाथ को खुला रखकर नहीं ले जाना चाहिये। मुट्ठी बाँधकर अपनी ओर से अर्ध वृत्त के आकार में लेजाकर वहाँ पहुँचते ही हाथ खोल देना चाहिये। इस तरह जब एक बार पास हो जाय तब दूसरी बार पास देने को हाथ ले जाते समय भी

उसी तरह मुट्ठी बाँधकर ले जाना चाहिये। और वहाँ पहुँचने पर हाथ खोलकर पास शुरू करना चाहिये।

हर बार पास पूरा होने पर हाथ झाड़ देना चाहिये लेकिन याद रहे बहुत जोर से हाथ झाड़ने में दर्द या और रोग होने का डर है। जैसे गन्दा पानी हाथ मे लगने पर सहज ही हाथ झाड़ा जाता है वैसे ही झाड़ना चाहिये। अगर इसमें भूल होगी तो रोगी का वह रोग साधक को हो जा सकता है। हाथ में व्यथा हो सकती है हाथ फूल भी जा सकता है या और रोग रोगो की देह से निकल कर सिद्ध के शरीर में लग सकता है।

यह लम्बा पास सिर की चाँदी से पाँव तक बराबर दिया जा सकता है। ऐसे पास को आपाद मस्तक लम्बा पास कहा जाता है। इसके सिवाय कन्धे से बाह पर होकर हाथ की उँगलियो की नोक तक या छाती से कमर या जाँघ अथवा घुठने से पाँव की नोक तक जरूरत के मुताबिक दिया जाता है। पास देते समय रोगी का शरीर छूने की जरूरत नही है। शरीर के बहुत निकट से उँगलियो का अग्र भाग खींच लाना चाहिये लेकिन शरीर छूना नहीं चाहिये। एक इञ्च का फासला होने से भी काम चल सकता है लेकिन जरूरत पड़ने पर कभी शरीर छूकर भी पास देना होता है। और कभी दो इञ्च या इससे अधिक दूरी पर रखकर भी पास देने की जरूरत पड़ती है। इसका विधान आगे बतलाया गया है।

पास देने के समय रोगी या पात्र का शरीर खुला रखना चाहिये। अर्थात् कपड़े से ढका नहीं रहना ही अच्छा है लेकिन ऐसा सर्वत्र नहीं हो सकता। क्योंकि पात्र स्त्री हो या रोगी बहुत दुर्बल हो तब उसे उघार नही रखा जा सकता। ऐसी दशा मे एक पतले कपड़े से ढाक रखना उचित है। पास देने के समय

रोगी के शरीर पर रेशमी आदि अपरिचालक चीजें रखना उचित नहीं है।

(२ कोनाकानी Transverse Pass)

यह पास भी उसी तरह हथेली रोगी की ओर करके देना होता है लेकिन इसको ऊपर से शुरू करके नीचे को न खींच कर साधक के दाहने से शुरू करके उसको बायीं ओर खींचना होता है। उँगलियों को पहले पासों की तरह ही रखना चाहिये। और बायीं ओर अन्त सीमा तक खींच ले जाकर लम्बे पास में बतायी रीति से झाड़ देना चाहिये। ऐसे पास छाती पीठ आदि तक दिये जा सकते हैं। इसके विषय में दो बातें याद रखने की हैं। दाहिने से बाएँ ही पास खींचना चाहिये बायें से दाहिने हरगिज नहीं। और ऐसे पास अगर अधिक स्थानों तक देने पड़ें जैसे छाती, पेट आदि तक तो ऊपर से नीचे उतारना चाहिये नीचे से ऊपर को हरगिज नहीं ले जाना। इस पास के देने में भी एक बार दाहिने से बायीं सीमा तक ले जाकर फिर ले जाती बेर पहली बतलायी हुई रीति के समान ही हाथ को मुट्ठी बाँध कर ले जाना चाहिये।

लम्बा और कोना कानी अर्थात् तिरछा पास दोनों एक ही तरहसे किये जाते हैं केवल गति में भेद होता है। पहले साधन करने के लिये एक जिल्द या दफ्ती लगी हुई पुस्तक तकिया या और कोई चीज़ सामने या टेबुल पर रखकर उसीपर ऊपर बतलायी हुई विधि से लगातार पास करनेका अभ्यास करना चाहिये कि उँगलियों की नोक हथेली में नहीं लगें न छू जायँ पास दोनों हाथों से करना ही उत्तम है।

इस साधन को बराबर बढ़ाते जाना चाहिये। दस मिनट,

पन्द्रह मिनट, आधा घंटा, एक घंटा तक अभ्यास करना चाहिये। जितना ही अधिक समय तक अभ्यास किया जायगा उतना ही प्रभावशाली मेसमेरिक बना जा सकेगा। पहले दस पन्द्रह मिनट मे ही थकावट हो तो चिन्ता नहीं पीछे अभ्यास होने पर घंटो पास करना साधारण बात हो जायगी।

जब पास करने का अभ्यास खूब हो जाय तब शक्ति की परीक्षा करना उचित है। पास मे शक्तिवान होनेके लक्षण—

(१) पास देते समय उँगलियों में झनझनाहट चुन चुनी या सन सनाहट होना।

(२) किसी के चेहरे पर पास देते समय दहने हाथ मे सर्दी और बायें हाथ मे गर्मी बोध होना।

(३) रेशम का पतला धागा एक इञ्च लम्वा काट कर जिल्द-दार पुस्तक पर रख के उसको पास की सहायता से अपनी ओर खींचने से उसका चला आना।

रोगियों का इलाज करनेके लिये ऊपर बतलाये हुए पासो का काम बराबर पड़ा करता है।

निवर्त्तक पास

(De-Mesmerising Pass)

दाहिने हाथ की उँगलियों की नोकों को नीचे झुका कर अधोमुख करके और हथेली अपनी ओर किये हुए पास देने की तरह इसमें बराबर ऊपर को ले जाना होता है। अर्थात् प्रवर्त्तक लम्बे पास में जैसे रोगी की ओर हथेली करके नीचे खीच ले जाना होता है यहाँ उसके ठीक उलटा क्रिया करना होता है।

दहने हाथ का अभ्यास होने पर फिर बायें हाथ का अभ्यास और फिर दोनों हाथों से यह प्रक्रिया करना चाहिये।

जिन पासों का बयान ऊपर दिया गया है उनके सिवाय और भी कई तरह की प्रक्रिया रोग दूर करने के लिये जरूरत पड़ने पर करना होती है उनका वर्णन नीचे दिया जाता है।

१ छूता हुआ पास।

पहले कहा जा चुका है कि जरूरत पड़ने पर कभी कभी शरीर छूते हुए पास भी करने होते हैं। अङ्गरेजी में इसको फ्रिक्शन (Frictions) वा मेगनेटिक फ्रिक्शन (Magnetic frictions) कहते हैं हम इसको छूता हुआ पास कहेंगे। यह पास लम्बा लम्बी देने से छूता हुआ लम्बा पास (Longitudinal frictions) कोना कानी देने से छूता हुआ कोना कानी पास (Transverse frictions) कहा जाता है। इसके सिवाय अलग से छूता हुआ पास देने में उसे लघु स्पर्श और जोर से छूता हुआ देने पर गाढ़ स्पर्श पास कहा जा सकता है। यह छूते हुए पास और भी दो तरह के होते हैं। एक को निडिं पास और दूसरे को स्ट्रोकिं पास कहते हैं।

१ निडिं पास।

इसकी गणना प्रगाढ़ स्पर्श पास मे होती हैं। मैदा सानने में जैसे हाथ की क्रिया की जाती है निडिं पास में भी कुछ उसी तरह हाथ चलाना होता है। इसको तीन तरह से करते हैं। (१) दोनों हथेलियों का मूल देश कलाई का अंश रोगी की देह पर रख कर दोनों अंगूठों को अलग रख कर बाकी आठों उँगलियों से क्रमशः ऊपर से नीचे ले आना (२) अंगूठो का

अगला भाग मिला कर उन्हीं पर भार देकर बाकी आठो उँगलियों से पास देना (३) दोनों अंगूठों को ऐसे ही मिला कर अगले पोरों पर भार देकर केवल दोनों तर्जनी उँगलियों से पास देना इस तरह के पासों को अङ्गरेजी मे (Kneading) निर्डि पास कहते हैं।

(२) स्ट्रोकिं पास

स्ट्रोकिं (Stioking) शब्द का अर्थ धक्का देना या घाव मारना है यह पास भी तीन तरह का हुआ करता है। (१) केवल तर्जनी के अग्र भाग या तर्जनी, मध्यमा और अनामिका को मिलाये हुए उनके अग्रभाग से या तर्जनी, मध्यमा, अनामिका और कनिष्ठा के मिलिताग्र भाग से घाव देना। (२) करभ व मणिवन्ध से कनिष्ठिका तक हाथ के बहिर्भाग से मारना। (३) हथेली से थप्पड़ मारने की तरह इसको स्ट्रोकिं पास कहते हैं।

फूंक मारना वा दमदेना।

इलाज करने की क्रिया में अक्सर साधक को स्वास वायु (Breathiug) चलाना होता है। इस क्रिया की सिद्धि के लिये साधक को पहले दस दिन तक नीचे लिखी क्रिया से स्वास सिद्ध कर लेना चाहिये।

प्रातःकाल जब सबेरा होने लगे अर्थात् लोही लगने से पहले प्रातः क्रिया (मल मूत्रादि) से निपट कर स्नान न कर सकने पर गीले कपड़े से सब शरीर पोंछकर स्वच्छ करके स्वच्छ वायु आने योग्य खुली जगह मे आसन पर बैठ जाना और सिर, गर्दन तथा

छाती को एक सीध में कर लेना और भीतर की स्वास वायु फेंक कर शरीर खाली करके धीरे धीरे नाक से स्वास भीतर खींचना चाहिये भीतर इतना वायु भर लेना कि उससे अधिक अब नहीं भर सकते। तब उसे कुछ समय तक अपनी शक्ति के अनुसार रोकना चाहिये लेकिन रोकना उतनाही जितना सुगमता पूर्वक (बिना कष्ट के) हो सके। इसके बाद जैसे भरा था वैसे ही मुँह से बाहर निकालना चाहिये। याद रहे जितना समय भरने में लगा था उतनाही समय निकालने में लगाना चाहिये। जब बाहर स्वास निकल जाय तब बाहर ही रोक रखना चाहिये। इस तरह रोज़ दस बार से अधिक नहीं करना चाहिये। कम से कम एक मिनट स्वास भीतर खींचने में आधा मिनट रोकने में और एक मिनट बाहर निकालने में फिर आधा मिनट बाहर रोकने में लगे तब इसके बाद स्वास सिद्ध की परीक्षा कर लेना चाहिये।

किसी स्लेट के टुकड़े पर किसी वस्तु का ध्यान लगा कर पाँच मिनट अपना स्वास डाला जाय तो इच्छानुसार उस चीज का प्रतिबिम्ब दिखाई देगा या फ्लानेल का एक नया टुकड़ा लेकर कुछ मिनट तक उस पर स्वास मारने से और मन में धारणा करने से कि जो इसको सिर में बाँधेगा उसका सिर दर्द दूर हो जायगा ऐसा पाँच मिनट या दस मिनट करने पर उससे सिर दर्द दूर हो जाय तो परिश्रम सफल समझना चाहिये। *

---

* सुप्रसिद्ध मेग्नेटिक डाक्टर क्लूज (kluge) अपनी जर्मन भाषा की पुस्तक में कहते हैं कि मेसमेरिक चिकित्सिक का आधार प्रधानतः पास स्वास वायु डालना और चित्तसंयम स्थिरचित्तता ही है। इनमें स्वास डालना सब से प्रधान है। स्वास वायू से आँख के रोग दूर किया जाता और मूर्छित रोगी के हृतपिण्ड पर स्वास डालकर होश में लाया जाता है।

जब स्वास डालना सिद्ध हो जाय तब उसको इलाज में व्यवहार करना आरम्भ कर देना चाहिये।

स्वास वायू डालने की क्रिया दो तरह की होती है एक को उष्ण स्वास और दूसरे को शीतल स्वास कहते हैं —

(१) उष्ण स्वास।

उष्ण त्वास डालने में रोगी के पीड़ित अङ्ग पर कोरे कपड़े का एक रूमाल या छोटा वस्त्र खण्ड रखकर नाक द्वारा स्वास खीचना और मुख द्वारा डालना चाहिये। नाक से स्वास खींचकर अपना मुँह दो अंगुल नाप तक खोलकर कपड़े पर फूँक मारना होगा याद रहे कि साँस नाक से लेकर मुँह से फेकना चाहिये। इसमे भूल न हो बल्कि इसका कुछ दिनों तक अभ्यास कर लेना अच्छा है। ऐसे अवसर भी होते हैं कि बहुत दिन तक इस क्रिया के किये बिना मुमूर्ष रोगी की प्राणरक्षा नही हो सकती। इस कारण साधक घंटा डेढ़ घंटा इस क्रिया के अक्लान्त करने की शक्ति नही रखता तो उपकार नही कर सकता। स्वास वायू डालते समय मुँह को वैसा कर लेना होगा जैसा कि सीटी बजानेमे किया जाता है।

(२) शीतल स्वास।

शीतल स्वास की भी दो विधि हैं। एक स्थान पर स्वास डालना होतो जैसे फूँक मारा जाता है वैसा ही करना चाहिये। लेकिन जब पास देने की तरह ऊपर से नीचे या दाहने से बायें स्वास डालना हो तब फूँक मारने के समय जीभ के अग्रभाग को टेढ़ा करके कुछ जोर के साथ नीचे की दन्तपाँती के साथ भीतर जीभ की पीठ सटा लेना होगा। तब फूँक मारना होगा।

(४) जल में स्वास डालना ।

जल मे स्वास देकर अर्थात् मेसमेराइज किया हुआ पानी पिला कर रोगी का रोग दूर करना यह विधि मेसमेरिक चिकित्सक की बड़ी सहायता करती है ।

इलाज शुरू करने के पहले साधक को उचित है कि अपना मेसमेरिक जल रोगी को पिलावे । साधक मन मे जो चाहकर स्वास डाला हुआ जल देगा उस के अनुसार उसको फल मिलेगा पास से इसकी शक्ति उतरकर है लेकिन इससे उपकार जल्दी होता है और इसको आरोग्यता की लाइनडोरी कहना चाहिये ।

इस तरह जल में शक्ति डालने की विधि यो है—

किसी गिलास मे जल लेकर बायें हाथ की हथेली चित करके उस पर खड़ा रखना चाहिये । और अङ्गूठे और उँगलियों को ऊपर उठा कर गिलास को पकड़े रहना चाहिये । फिर गिलास के मुख पर या किनारे के बायीं ओर दाहने हाथ की ऊँगलियों को पानी से एक इंच दूर रख कर अपनी इच्छा शक्ति द्वारा शुभ विचार पानी मे उतारना चाहिये । इस तरह कई बार बायीं ओर से उँगलियों को दाहिनी ओर लाकर उतारना और इस तरह से करना चाहिये मानो कुछ चीज पानी मे झट से गिरा रहे हैं । फिर पाँच सात बार ऐसा करके हाथ की मुट्ठी बाँध कर अलग से फिर पानी के मुँह पर ले जाकर खोल देना चाहिये । ऐसा पाँच सात बार करके फिर दाहने हाथ से ऐसा करना चाहिये जैसे पानी की सतह पर चाप दे रहे हो । बोतल या शीशी मे जल लिया जाय तो ऐसा न करके बोतल या शीशी के चारों ओर कई पास देने से ही काम हो जायगा । इसके बाद एक पतला नल जल के पेंदे तक डुबा कर उसी में फूंक मारना चाहिये अगर नल समय पर न हो तो मुँह से

फूँक देना ही काफी होगा। उसके बाद नल से अथवा न होने पर दाहिने हाथ की तर्जनी से पानी में पेंदे तक हिलोर देकर बरतन का मुँह बन्द कर देना चाहिये। फिर वर्तन को नीचे ऊपर तक हाथ से ढाककर फिर वृत्ताकार गोल रेखा में बरतन पर दोनों हाथो से पोस देकर दो तीन मिनट दोनों हाथो मे गिलास लिये रहकर क्रिया समाप्त कर देना चाहिये। इतना करने पर जो पानी तैयार होगा वह तीन तीन घंटे पर दिन मे चार वार पीने को दिया जा सकेगा। अगर वाहरी इस्तेमाल में लाना हो तो केवल मिनट भर फूँक देने और लम्बा पास दे देने से ही हो जायगा।

डाक्टर विलियम डेवी का कहना है कि दक्षता शाली मेस-मेराइजर पॉच से सात मिनट तक क्रिया करके एक गिलास पानी मेसमेराइज कर सकते हैं। उनका यह भी कहना है कि वायीं हथेली पर गिलास भरा जल रखकर दाहिनी ओर से कुछ मिनट उष्ण स्वास डालने से ही कार्य्य सिद्ध हो सकता है। यह क्रिया वहुत सहज होने से वहुतेरे चिकित्सक ऐसा किया करते हैं।

ऊपर जो क्रिया वतलायो गयी हैं उनमें से हर एक मे कार्य्य करते समय इच्छा शक्ति की जाग्रतावस्था रहना वहुत जरूरी है। उसके विना सब व्यर्थ है। इस तरह तैयार किये हुए जल का गुण ४८ घंटे तक रहता है। जल पात्र से लोहा नही छू जाना चाहिये। उससे गुण तुरत नष्ट हो जाता है। इस जल से रोगी को निद्रा भी लायी जा सकती है। खाया हुआ भोजन पचने मे दीपन करता है। कोठा साफ़ होता है। कटा हुआ या खोंच लगा हुआ घाव अच्छा हो जाता है। इस जल से और भी वहुत से उपकार होते हैं।

तेल में गुण डालना।

इस तरह मेसमेरिक तेल भी तैयार किया जाता है। इसमें नल से फूँक मारने की जरूरत नहीं पड़ती। तर्जनी की नोक से ही सब काम कर डालना होता है। तेल छूने की जरूरत नहीं पड़ती लेकिन उसके बदले मुँह का लार डाल कर अच्छी तरह मिला देना चाहिये यह ऐसी गुप्त रीति से कि किसी को मालूम नहीं होवे।

मेसमेरिक फ्लानेल

फ्लानेल के टुकड़े को मेसमेराइज करने में फ्लानेल का टुकड़ा लेकर तीन चार तह करके पहले बायीं ओर के बगल में दो तीन मिनट दबा रखना फिर उतने ही समय तक दाहिनी काँख में रखना चाहिये। फिर दोनों हथेली फैला कर उसपर उसे रखकर कुछ देर तक उष्ण स्वास डालना चाहिये। उसके बाद दोनों हाथों मे जोर से दबा रखना चाहिये। इसी तरह नये मोजे आदि मे भी शक्ति दी जा सकती है। किसी जगह दर्द हो तो यह फ्लानेल वहाँ लगा रखने से या बाँध देने से काम हो जाता है और जगहों में भी इससे उपकार होता है।

चेतावनी

काम आ पड़ने पर किसी तरह की रुकावट या जजबे में नहीं पड़ें। इसके लिये साधक को चाहिये कि इन सब को पहले ही से खूब अभ्यास कर रखें। पास देने का अभ्यास करने के लिये दीवार से लगकर या चौकी पर किसी आदमी की कल्पना करके पास देना चाहिये। कभी धीरे धीरे कभी तेजी से पास देना चाहिये। सब तरह के पास देने का उत्तमता से अभ्यास कर लेना चाहिये। पास कितने समय तक देना होगा। इसका अन्दाजा करने के

लिये एक दो तीन चार इस तरह कोई संख्या निश्चित करके काम करना चाहिये। मंत्र आदि पढ़ने के जो नियम हैं वह भी इसी समय निर्द्धारण की सहायता करते हैं। बहुत देर तक पास देने पर भी थकावट न हो इसका अभ्यास जरूर कर लेना चाहिये।

रोगी के इलाज में किसी एक क्रिया या पास पर निर्भर न करके सुविधा देख कर रोगी की सारी देह में तरह तरह की मेस-मेरिक क्रिया की जाती है। इस क्रिया को सर्वाङ्गोपचार कहते हैं। इस तरह की क्रिया से किसी का उपकार के सिवाय अपकार नहीं होता यह निश्चय है। नाना प्रकार के रोगों मे उनकी चिकित्सा लिखने के अवसर पर जब इस तरह की क्रिया आव-श्यक होगी तब वहाँ इस क्रिया को सर्वाङ्गोपचार कह कर बत-लावेंगे। इस सर्वाङ्गोपचार को रीति यह है—

सबसे पहले गर्दन के पीछे दस मिनट तक उष्ण स्वास प्रयोग करते करते धीरे धीरे नीचे की ओर कमर के पीछे तक ले जाना चाहिये। और दस ही मिनट तक पीछे माथे के ऊपर से रीढ़ की निचली सीमा तक लम्बा पास देना चाहिये। उसके बाद सामने की ओर लम्बा पास, माथे की चान से शुरू करके दोनो आँखो के ऊपर होते हुए ठुड्ढी के नीचे तक खींच ले जाकर झाड़ देना चाहिये। उसके बाद हृत्पिण्ड के ऊपर दस मिनट तक शीतल स्वास, पाँच मिनट तक छाती से बराबर बाँह तक पास और अन्त को दश मिनट आपाद मस्तक लम्बा पास अर्थात् सिर की चान के समान ऊँचाई से शुरू करके सीधे कमर तक ले जाकर वहाँ से दो भाग करके अर्थात् दोनो छातियो और दोनो जाँघो तक ले जाकर दोनों पाँव के अंगूठे तक खींच कर झाड़ फेंकना होगा। यही सर्वाङ्ग पास का साधारण नियम है। यहाँ समय का जो नियम बतलाया गया है उससे इसको पूरा

करने में कोई एक घंटा लगेगा लेकिन रोगी की दशा के अनुसार जिसको जितना समय दरकार हो उसके मुताबिक समय कम बेश कर लिया जा सकता है। इसको अच्छी तरह समझने के लिये यहाँ कुछ उदाहरण देकर बतलाया जाता है।

१—जैसे किसी रोगी के मुखमण्डल पर पास दिया जा रहा है इस समय उसकी दोनों आँखें आँसुओं से भर आयीं पलकें फूल गयीं तब जब तक यह सब दूर न हो जाय तब तक उसी भाव से पास देते जाना होगा। खास कर कुछ पास नाक की नोक तक खींच ले जाकर झाड़ देना चाहिये, क्योंकि ऐसा करने से प्रकृति सहायता पाकर नथनों से पानी गिरा कर आँखों का भार दूर कर सकती है।

२—जैसे किसी रोगी के हृत्पिण्ड पर शीतल स्वास डाला जा रहा है उसी समय एकबयक उसके बायें कन्धे पर दर्द उठा। तब सर्वाङ्गोपचार रोक कर दोनों हाथों से कन्धे से उँगलियों की नोक तक पास देने लगो और जब तक वह दर्द दूर न हो तबतक बराबर देते रहो। फिर दूर होने पर सर्वाङ्गोपचार की रीति से काम शुरू करना चाहिये।

३—किसी रोगी को या उसके किसी व्यथित स्थान को आंशिक रूप से मेसमेराइज करके छोड़ देना नहीं चाहिये। ऐसा करने से रोगी का कष्ट बढ़ जाता है और उसकी साधक चिकित्सक पर श्रद्धा घट जाती है। भरोसा भी नहीं रह जाता। अधूरा मेसमेरिजम से कैसी घटना हो सकती है इसका यहाँ एक उदाहरण दिया जाता है। जैसे एक स्त्री इस इलाज के लिये आयी। उसको अक्सर हिस्टिरिया का फिट हुआ करता है। बेहोशी और शरीर मे स्थान स्थान पर पीड़ा होती है। फिट आने पर हाथ पाव ठंढे पड़ जाते हैं। सिर गरम होता है नाड़ी बेकायदे चलने लगती हैं दिल की

धड़कन में भी फरक आ जाता है। साँस लेने फेंकने में भी कष्ट होने लगता है। लेकिन फिट के सिवाय और अवसर पर शरीर अच्छा रहता है। इस तरह जब उसकी दशा अच्छी है। उसकी मेसमेरिक चिकित्सा किसी साधक ने शुरू कर दी। क्रिया साधन ने पहले ही उसका श्वास प्रश्वास, नाड़ी, हृत्पिण्ड की गति सब ठीक देख लिया। अब समझना चाहिये कि रोगिनी की देह मे फिर फिट होने के सब उपादान उसके शरीर मे वर्तमान हैं। इससे तो कोई नाहीं नहीं कर सकता। जब उसका इलाज करने और रोग से नीरोग करने के लिये मेसमेरिक चिकित्सक चेष्टा करने लगा तब अपनी क्रियाओं से प्रकृत रोग के कारण दूर करने की कोशिश करना ही होगी। और उस क्रिया से हृत्पिण्ड, श्वास प्रश्वास आदि बहिर्मुख क्रिया होने लगेगी। जिससे फिट के लक्षण उत्पन्न होगे। नया मेसमेराइजर यह सब देख कर डरे और अपनी क्रिया छोड़ दे तो प्रकृति सहायता पाकर जो कुछ दूर आगे गयी थी वह साधक के छोड़ बैठने से अकेले अपना काम करेगी। इससे रोगी को अधिक कष्ट भोग करना होगा। लेकिन मेसमेराइजर अगर पक्का है और इसमें उसका अधिकार है तो यह सब लक्षण देख कर वह प्रसन्न होगा। क्योंकि वह समझ जायगा कि रोगिनी की देह मे आरोग्य साधिनो महती क्रिया शुरू हुई है। इसी कारण यह सब लक्षण उत्पन्न हुए हैं। मेस-मेराइजर उत्साह से अपनी क्रिया करता चला जायगा और रोगिनी थोड़ी ही देर पीछे सब भोग कर उठ बैठेगी। जब तक रोगिनी के लक्षण ठीक न होगे अर्थात् दिल की धड़कन, श्वास प्रश्वास आदि ठिकाने से नही हो जाय तब तक साधक लगातार अपनी क्रिया करता चला जायगा। वह हरगिज बीच मे ही डर कर हाथ नही खीच लेगा। क्योंकि ऐसा करके अधूरा मेसमेराइज

के मारे रोगिनी को तरह तरह के दुःख और अवसाद हो सकते हैं।

४—पहले हम कह आये हैं कि किसी किसी रोगी के इलाज में छू कर पास देने की जरूरत होती है। भाड़ कर जो इलाज इस देश में हुआ करता है उसमें से बहुत कुछ इसी छूते हुए पास से ही होता है। बाइबिल में एक कहानी है कि एक विधवा का लड़का मर गया था। उसकी श्वास वायु चली गयी थी। विधवा रोती बिलखती इलाइजा नामक एक महात्मा की शरण में गयीं। उन्होंने उसकी देह एक मचान पर लेटा कर तीन बार कहा—हे प्रभु परमेश्वर! मेरी प्रार्थना है कि इस बालक का प्राण इसकी देह में लौट आवे। इस तरह कहते हुए हर बार खड़े होकर उस मुर्दे पर साष्टांग पड़ कर लोटने लगे। वह बालक फिर जी उठा। इलाइजा उसको लेकर उसकी मा के पास गये बोले—"लो तुम्हारा लड़का जी गया है। विलाप मत करो।

स्ट्रोकिंफ्रिक्शन (Stroking Friction) आदि क्रिया भी इस छूते हुए पास के ही रूपान्तर हैं।

फ्रिक्शन करके मेसमेरिक निद्रा भी लायी जा सकती है। टेस्टी (Teste) नाम के फ्रैञ्च होमियोपेथिक चिकित्सक की मेसमेरिजम विषयक पुस्तक में लिखा है कि एसक्लिपियेडिस (Asclepiades) नाम के प्रसिद्ध यूनानी हकीम उन्माद रोग से पीड़ितों को अङ्ग मर्दन (Friction) करके निद्राभिभूत करते थे। अक्सर ऐसा भी होता था कि अधिक अङ्ग-मर्दन करने पर रोगी स्थिर और बेसुध होकर पड़ जाता था।

५—बात पीड़ा (Rheumatism) शोथ और सन्धि पीड़ा, गठिया रोग में अगर चमड़े पर बहुत वेदना न हो तो उसमें दूर से ही पास देनें की अपेक्षा ऊपर से नीचे को मर्दन करने से

अधिक उपकार होता है। नीचे लिखे अवसर पर भी छूता हुआ पास देने की जरूरत पड़ती है।

(क) जब शरीर के बाहरी अंश मे दाह या उत्तेजना हो (ख) किसी अङ्ग पर और अवयवों से अधिक शीतल होने का ढङ्ग हो (ग) या कोई अङ्ग विशेष सूख जाय या सुन बहरी हो और मालूम हो कि वहाँ जीवनी शक्ति नहीं है। (घ) अगर रोगी कहे कि दूर से पास देने की अपेक्षा छूकर पास देने मे आराम मिलना है।

६—सिर दर्द दूर करने मे रोगी के तलवों के नीचे अपनी हथेली रखकर मर्दन करने और पाँव की उँगलियो तक खींच लेजाकर झाड़ते रहने से पॉव गर्म हो उठता है। माथे की ओर से खून उतर कर नीचे आता और मस्तक ठंढा होकर दर्द धीरे २ दूर हो जाता है। छूकर जब पास दिया जाय अर्थात् जब मसला जाय तव हर एक मसलन पर पहली रीति के अनुसार झाड़ते जाना चाहिये।

७—तेल में शक्ति डालते समय ऊपर लार डालने की बात कही जा चुकी है। उसके सिवाय और तरह से भी व्यवहार होता है। चमड़े पर आवले पड़ जायँ तो उसके इलाज में किसी किसी अवसर पर मुँह का थूक डालने की विधि है लेकिन याद रखना चाहिये कि जब मुँह खूब साफ पाक हो तभी उससे लार लेना चाहिये और साथही रोगी के शरीर मे चमड़े पर कहीं कोई जखम नहीं रहे। मांस मछली या मदिरा गाँजा चरस आदि व्यवहार करने पर या करने वाले का लार हरगिज नहीं व्यवहार में लाना चाहिये। क्योंकि इन सब के दोष धोने से तुरत नहीं दूर हो सकते। लार का प्रयोग करने मे इसका ध्यान रखना बहुत ही जरूरी है कि चमड़े पर फोड़ा फुन्सी, होने, जल जाने आदि में इस

लार से बड़ा काम होता है लेकिन इसके योग्य सात्विक साधक रहे तब, उँगलियों की नोक से जो लार अनायास निकाला जा सके उसी का प्रयोग करना चाहिये। और पीड़ित स्थान पर प्रयोग इच्छा शक्ति के साथ एक वृत्ताकार उँगली से बनाना और उसको उँगली घुमाते हुए हर बार छोटा करते हुए अन्त को उसके केन्द्र स्थान पर उँगली पहुँचना चाहिये। (वृत्ताकार पास) जब केन्द्र पर पहुँच जाय तब उँगली वहाँ से उठाना नहीं बल्कि उसे पास की तरह दूसरी ओर सीमा तक लेजाकर छोड़ देना चाहिये। पहली बार का लार सूख जाने पर दूसरी उँगली से लार लेकर फिर वैसा ही करना चाहिये। जिस उँगली से लार लेना उसको खूब धोकर साफ़ किये बिना मुँह मे नहीं डालना चाहिये * लार सूखने में जितना समय लगेगा उतने तक पीड़ित स्थान से निकट सीमा तक लम्बा पास देते रहना होगा।

पासों का प्रयोग स्थल।

जो पास बतलाये गये हैं उनमे से कौन किस जगह कैसे व्यवहार किया जाना चाहिये इसका विवरण नीचे दिया जाता है-

१—लम्बा पास सिर से पाँव तक यह साधारणतः सर्वत्र व्यवहार में लाया जा सकता है। खास कर नीचे लिखे मौको परः—(क) निद्रा लाने मे (ख) जहाँ सिर का भारी होना या

---

* तेल के बनाने मे भी लार लेते समय उँगली की सफाई पर ऐसा ही ध्यान रखना।

गर्मी दूर करना हो (ग) सारी देह में दर्द होने पर या सारे शरीर मे कमजोरी आने पर (घ) बुखार के इलाज या हिस्टिरिया मिरगी, उन्मत्तता आदि में। लेकिन वेदना और दुर्बलता के इलाज मे लघुस्पर्श सिर से पाँव तक पास देने से अधिक उपकार होते देखा जाता है।

२—कोना कानी तिरछेपास—जहाँ स्थानिक वेदना या रक्ताधिक्य दूर करना हो वहाँ यह पास देना चाहिये। खास करके छाती पर, पीठ में, या पेट के ऊपर। गले पर भी यह पास दिया जा सकता है। वेदना या धस्का होना भी इससे दूर होता है।

३—गाढ़ स्पर्श पास—जो दर्द दबाने से बढ़ता नही अर्थात् कनकन करने वाला, टीस मारने वाला या फटने वाला दर्द उसके लिये यही पास उत्तम है। या शरीर का कोई भाग सुन्न हो जाय छूने से ज्ञान न रहे उस पर यह पास दिया जाना चाहिये। सूजन या सुरसुराहट हो तो वहाँ भी यह दिया जा सकता है। साँप या और विषैले कीड़ों का विष उतारने मे भी यह पास दिया जाता है।

४—लघुस्पर्श पास—शरीर की जलन, स्नायविक अस्थिरता आदि के लिये और पासो से यही अच्छा है। अक्सर स्थानिक वेदना दूर करने में दूर से पास देने की अपेक्षा यह अधिक गुणकारी होता है। ‡

५ निर्डि पास—बात रोग में जब शरीर अबश हो तब यह पास देना चाहिये।

---

‡ अगर क्रिया करने वाला साधक पुरुष है तो कम उम्र स्त्री रोगिनी के शरीर में जरूरत होने पर भी छूता हुआ पास नही देता। दूर के, पास से जितना काम हो सके उसी पर सन्तोष करना चाहिये।

६ स्ट्रोकिङ्ग पास—यह पास निद्रित स्नायविक शक्ति को जगाने में बहुत काम देता है। पीठ या रीढ़ पर जब बात व्याधि आदि में स्नायविक शक्ति का तेज घट जाता है तब इससे बहुत उपकार होता है। किसी विशेष स्थान की पेशी या पेशियों की शक्ति उत्तेजित करने में इसका व्यवहार किया जा सकता है।

७ उष्णश्वास—इस क्रिया का अभ्यास खूब अच्छी तरह कर रखना चाहिये। अनेक समय मुमूर्षु रोगी को भी इसके द्वारा जीवित किया जा सकता है। लेकिन साधक को याद रखना चाहिये कि इससे जीवनी शक्ति जितनी खर्च होती है उतनी और से खर्च होती है कि नहीं इसमें सन्देह है। इस कारण बिना सङ्गीन कारण के इस तरह जीवन व्यय करना अच्छा नहीं है। उष्ण श्वास से साधक अपने शरीर की जीवनी शक्ति पात्र के शरीर मे सञ्चालित कर दे सकता है। बहुत रक्त श्राव से रोगी जब निर्जीव हो पड़ता है तब उसके हृत्पिण्ड पर इस तरह उष्ण श्वास डालने से बड़ा आश्चर्य जनक उपकार होता है। इसके सिवाय जो रक्ताल्पता (Anaemia) से दुखी हैं उनके हृत्पिण्ड पर भी इस तरह उष्ण श्वास डाला जा सकता है। किसी जगह बहुत ही वेदना होवे वहीं पहले उष्ण श्वास डालना। फिर लम्बा पास करना तब कोना कानी तिरछे पास करना चाहिये। तकलीफ़ बहुत कम हो जायगी। बल्कि किसी अङ्ग पर जीवनी शक्ति का अभाव होने से बिलकुल शिथिलता या अबशता हो तो इसका व्यवहार करना चाहिये।

(८) शीतल श्वास—किसी स्थान पर बाहरी दाह हो। उत्तेजना हो, स्नायविक बेदना हो, कहीं एक स्थान में बहुत पीड़ा हो तो उसको तितर बितर करने में इससे बड़ा उपकार होता है।

(९) दूर से पास देना—किसी रोगी को देखा जाता है कि पास देते समय बहुत विचलित हो जाता है। स्थिर नही रह सकता यहाँ तक कि किसी किसी को अकड़न और ऐंठन होती है उसको आधा हाथ एक हाथ, दो हाथ तक दूर से या इससे भी अधिक दूर से पास देना होता है। ऐसा करने से रोगी स्थिर रहता है कुछ और उपद्रव नही करता।

ऊपर लिखी वातो से चतुर बुद्धिमानो को आप ही आप यथा-वसर पास का निर्णय कर लेने मे सहायता मिलेगी।

१—कप्तान जेम्स की रीति

चिकित्सा के वास्ते मेसमेरिक निद्रा लाने के वास्ते तरह तरह की रीति से काम किया जाता है। उनमे इलाज करने के लिये निद्रा लाने के जो अच्छे तरीके है उनका यहाँ वर्णन दिया जाता है:—

रोगी का इलाज करने के लिये जब मेसमेरिक निद्रा लाना हो तब उसे खाट पर चौकी पर आराम कुर्सी, या कौच पर ऐसा लेटा देना चाहिये जिसपर उसको बिलकुल आराम मिले कुछ तकलीफ या अड़चल न हो। तब रोगी के ठीक सामने खड़े होकर या बैठकर रोगी के माथे पर अपने दोनो हाथ उङ्गलियो को अलग अलग रखकर लगाना चाहिये। कुछ देर इस तरह रखकर धीरे धीरे पॉव की नोक तक पास देना चाहिये। पास देनेके समय पहले जैसा कहा गया है विना छूए शरीर से जितना निकट हो सके हाथ ले जाकर नीचे खींच ले जाना होगा। हर वार पास खतम हो जाने पर पहले वतलायी हुई रीति से मुट्ठी वॉंध लेना होगा। और सिर के पास हाथ ले जाकर मुट्ठी खोल देना और फिर उँगलियाँ यथा रीति पसार कर पास देना होगा।

इस तरह कई पास देने बाद रोगी की आँख के बहुत पास ले जाकर अपनी दोनों तर्जनी उँगलियाँ फैलाकर लगाना चाहिये इस क्रिया से बहुधा पास देने की अपेक्षा भी अधिक सफलता मिलती है। इस तरह पहली ही बैठक (Sitting) में बीस मिनट तक इस क्रिया के करने से रोगी की अभिभाव्यता और श्रद्धा भक्ति के अनुसार कम वेश फल अवश्य मिल जाता है। क्रिया साधक अर्थात् सिद्ध को चाहिये कि निद्राकर्षण का लक्षण नहीं दीख पड़े तो जब तक आँखों की पलकें बन्द नहीं होने लगें तब तक पास देते रहें। अगर आँखें भारी होकर मुँदने का लक्षण हो तो अपना परिश्रम सफल होने की पूरी आशा करना चाहिये। पास देते समय सिद्ध को चाहिये कि अपनी इच्छाशक्ति सब ओर से बटोर कर रोगी की हितकामना में ही एकदम लगा देवे। अधीनता और श्रद्धा का भाव अधिक होने से रोगी कोई दस मिनट में कोई उससे भी कम समय में अवश होकर मानों बेहोश हो जायगा। उस समय इसकी परीक्षा करने का हम यही उपाय बतलाते हैं कि रोगी ठीक मेसमेरिक निद्रा मे पहुँच गया है या नहीं ? रोगी का एक हाथ उठा कर झट छोड़ देने से अगर वह लकड़ी की तरह गिर पड़े तो जानना चाहिये कि परिश्रम सार्थक हुआ। फिर आँखों की पलकें उठा कर देखना चाहिये। अगर आँखें ऊपर की ओर उलटी हुई हैं और चारो ओर घूम रही हैं तो जानना कि काम सोलहो आने सिद्ध हो गया है। किसी किसी की आँखें ज्यों की त्यों भी रहती हैं। लेकिन पुतलियाँ आँख की कुछ बड़ी हो जाती हैं। जलता चिराग़ या मोमबत्ती पास ले जाने पर भी पुतलियाँ सिमिटती नहीं न उनमें कुछ सङ्कोचन होता है। निद्रा की यह आरम्भिक अवस्था है लेकिन इस दशा में भी रोगी की हथेली की पीठ पर

सूई या अलपीन चुभा देने से कुछ तकलीफ़ नहीं होती। कभी कभी ललाट पर शीतल श्वास देकर या केवल हाथ फेर कर उस निद्रा को खूब प्रगाढ़ कर दिया जा सकता है लेकिन सिद्ध अगर पहले यह काम कर रहा है तो उसको ऐसा करना नहीं चाहिये। उसको धीरता से केवल पास पर ही भरोसा रखना चाहिये। अगर बीस या तीस मिनट इस तरह मिहनत करने पर भी निद्रा का कुछ लक्षण नहीं दीख पड़े तो सिद्ध को रोगी से पूछना चाहिये कि प्रक्रिया करते समय कुछ मालूम हुआ था या नहीं। अगर हाँ तो पूछना चाहिये कि पास देते समय या तर्जनी उँगलियो को नाक के पास फैलाने के समय किस समय अधिक अनुभव हुआ था, इसका जवाब पाने पर समझ मे आ जायगा कि उस रोगी के लिये कौन सी क्रिया फल दायक होगी। एक बात यहाँ और याद रखने की है कि पहली या दूसरी बैठक में या लगातार कई बैठको पर भी कुछ विशेष फल नही दीख पड़े तब भी उससे मेसमेराजर को निराश नहीं होना चाहिये।

रोगी को निद्रित करने की बात अच्छी तरह कह चुके अब उसे निद्रितावस्था से जागने की विधि बतलाते हैं।

किसी किसी पात्र को तो बहुत सहज मे जगाया जा सकता है लेकिन किसी को कुछ देर भी होती है। कई उलटे (निवर्त्तक) पास देकर माथे और मुख मण्डल पर शीतल श्वास डालने से ही रोगी को होश हो जाता है और कभी हथेली हिलाने से काम सिद्ध हो सकता है। लेकिन अगर रोगी ऑख नही खोले तो दोनो अङ्गूठों की नोक से (नाखून से नहीं कोए से) नासा मूल (नाक की जड़) से शुरू करके ऊपर ललाट की हड्डियो पर दोनों ओर रगड़ते हुए ले जाकर कनपटी की ओर झाड़ देना चाहिये।

इस तरह बार बार तेजी से करके फूँक देना और हथेली हिलाने की क्रिया करना चाहिये।

मेसमेराइजर को उचित है कि जब तक पात्र पूरे तौर से होश में नहीं आ जाय तब तक उसे छोड़ कर कहीं जाना नहीं चाहिये। पात्र को छोड़ कर वहाँ से हटना तभी चाहिये जब अच्छी तरह निश्चय रूप से यह समझ में आ जाय कि पात्र पूरे तौर से होश में आ गया है।

पहले भी कहा जा चुका फिर भी बार बार यह कहना है कि क्रिया साधक को धीर भाव से दृढ़ प्रयत्न और निश्चय हो कर सफल काम होने की बलवती इच्छा से ही सदा कार्य्य करना और पात्र को साधक मे पूरी श्रद्धा भक्ति रखना बहुत ही जरूरी और मुख्य है इन दोनों गुणों से हीन आदमी को कभी कुछ सफलता नहीं होती।

ऊपर एक रीति समझायी गयी है लेकिन शिक्षार्थी को थोड़े ही दिनों मे समझ मे आ जायगा कि भिन्न भिन्न अवसरों पर और और रीति से काम करना पड़ता है। हर एक रोगी के भिन्न स्वभाव के कारण ऐसा हुआ करता है। यद्यपि इस तरह की निरधारित विधि से बहुधा काम सिद्ध हो जाता है लेकिन सदा उसी पर निर्भर नहीं करना चाहिये। समय समय पर उसके साथ और विधि से काम करना पड़ता है।

यह याद रखना चाहिये कि निद्रा लाये बिना भी बहुधा रोगी को तकलीफ दूर की जा सकती है। और ऐसा भी होता है कि जिसको बहुत दिनो तक कोशिश करके भी निद्रा नहीं लायी जा सका लेकिन लगातार परिश्रम और अदम्य उत्साह से उद्योग जारी रखने के कारण अकस्मात पात्र को निद्रा आ गयी।

यहाँ शिक्षार्थी को एक बात के लिये फिर सावधान कर देना

जरूरी है कि यदि किसी रोगी की मेसमेरिक निद्रा भङ्ग करने में कोई साधक सिद्ध असमर्थ हो पड़े तो उसको कभी डरना या विचलित होना नहीं चाहिये। यह निश्चय समझ लेना चाहिये कि कुछ किसी तरह का डर या किसी अनिष्ट की शङ्का नहीं है। घन्टा, दो घन्टा, तीन घन्टा जब तक नींद में पात्र पड़ा रहे रहने देवें। जब तक वह निद्रावस्था मे रहे तब तक उसके पास रह सकें तो रहना अच्छा है। मेसमेरिजम में कुछ जानकारी हो जाने पर मेसमेराइजर समझ लेगा कि रोगी के पास कब तक रहना बहुत जरूरी है। उस समय तक रोगी को छोड़ जाना नहीं अच्छा इतना जरूर है कि रोगी को उस दशा में साधक मेसमेराइजर के सिवाय और कोई स्पर्श न करे। क्योंकि दूसरे के छूने से अक्सर (Cross mesmerism क्रास मेसमेरिजम दोष हो जाता है।

विलसन साहब की रीति

पात्र के सामने अथवा बगल मे धीर भाव से मन के सब उद्वेग दूर करके आसन पर बैठ जाना चाहिये। पात्र को कहना चाहिये कि शान्त चित्त से निरुद्वेग होकर चञ्चलता छोड़ कर साधक के वशवर्त्ती होने का अपना भाव रखकर बैठे। दूसरी चिन्ता उसके मन में छू न जाय। पात्र या तो आँखें मूँद लेवे या साधक की आँख की ओर इकटक ताकता रहे। या साधक की छाती पर रखे रुपये की ओर विना पलक गिराये देखे। उस रुपये मे पहले से साधक अपनी मेसमेरिक शक्ति डाल रखे।

फिर पात्र के दोनो हाथ तले ऊपर कोना कानी जैसा अङ्गरेजी का एक्स x अक्षर होता है करके अपना भी दोनो हाथ वैसा ही ले जाकर ऐसा उसका दोनों हाथ अपने हाथ में लेना कि साधक के दहने हाथ में पात्र का बायाँ हाथ आवे साधक के बाये हाथ में

पात्र का दहना आवे और साधक के दोनों अंगूठों के अगले भाग पात्र के अंगूठों के अग्र भाग पर लगे रहें। साथ ही साधक को जब किसी नये पात्र पर शक्ति चलाना हो तब उसके मन में यह धारणा बिठाना होगा कि बहुत जल्द आनन फानन में उसको निद्रित करने की शक्ति मेसमेराइजर में है। इसीके सहायक भाव भङ्गी और बात चीत रहे कि साधक की आत्म शक्ति पर पात्र को दृढ़ विश्वास होवे और यह बराबर बढ़ता ही रहे। साधक को पात्र के दोनों भौहों के बीच में अपनी दृष्टि लगाकर एकाग्र भाव से उसको निद्रित करने की दृढ़ इच्छा रख कर साधना जारी रखे। जब तक पात्र और साधक दोनों के हाथों की गर्मी समान हो जाय तब तक ऊपर लिखी विधि से उँगली में उँगली लगा रखना रोगा। इस तरह समान गर्मी होंने में एक मिनट भी लग सकता है दस मिनट भी लग सकता है। इसका कुछ निश्चय नहीं कहा जा सकता। लेकिन साथ ही यह भी है कि इस तरह उङ्गलियों का मिलाना बिलकुल ही चाहिये ऐसा नहीं है। बिना मिलाये भी काम हो सकता है।

यह सब सहकारी क्रिया समाप्त होने पर मेसमेरिक क्रिया शुरू करना होता है। पात्र के माथे पर हलकी सी अपनी हथेली रखना चाहिये वह इस तरह कि हथेली ललाट को ढाके रहे और उँगलियों का अगला भाग माथे पर लगा रहे। या इस तरह से भी रखा जा सकता है कि हथेली से दोनों आँखें ढक जायँ और उँगलियाँ बालों के सामने की सीमा के ऊपर हों। साधक और क्रिया पात्र को कुछ आगे झुक कर दोनों का मस्तक निकट हो जाना चाहिये। दोनों केहुनियों को दोनों घुठने पर भार देकर रखना चाहिये इससे हाथ जल्दी भारी नहीं हो सकेगा।

जब तक पात्र की पलकें भारी न हो आवें अर्थात् बन्द न

होने लगें तब तक ऊपर बतलायी विधि से शक्ति चलाना चाहिये। जरूर वह पात्र अभिभूत हो जायगा। इसमे सफलता के लिये पाँच मिनट भी लग सकता है, आधा घंटा भी लग सकता हैं। और अधिक समय की कोई बैठक तक क्रिया की जा सकती है। लेकिन जब तक आँखें बन्द नहीं हो जायँ तब तक कोई भी आगे क्रिया व्यर्थ होगी। और आँखें बन्द करने की कोई क्रिया इससे सुगम नही है। जब इस तरह आँखें बन्द पड़ जायँ तब ललाट पर से हाथ हटा कर उँगलियो को फैला कर कुछ देर तक बारी बारी से दोनो आँखों पर, ललाट पर माथे पर, चाँदी तक और मस्तक के दोनो ओर और उसके पीछे की ओर ले जाना चाहिये। फिर इसी तरह चेहरे पर, छाती पर और पेट पर भी ले जाना चाहिये। यह सब आरम्भिक कार्य्य अगर यथा रीति धीरता और एकाग्रता से सम्पन्न हो जायँ तो जानना चाहिये कि मेसमेरिक प्रक्रिया का शक्ति सञ्चय कार्य अच्छी तरह हो गया।

जब इस तरह शक्ति सञ्चय का कार्य साधक पूरा कर चुके तब दूसरा कर्त्तव्य करने का समय आया समझना चाहिये। और पूरे तोर पर मेसमेराइज़ करने के लिये यह दोनो प्रक्रियायें जरूरी हैं। इनमे से एक पूरी हो चुकी दूसरी अब शुरू करना चाहिये। अर्थात् इतनी देर तक जो मेसमेरिक शक्ति पात्र पर सञ्चित की गयी उसको अब उस पर चलाना होगा। सञ्चित शक्ति चलाने के समय पात्र की कुछ शक्ति भी साथ ही आकर्षित हो आवेगी। अब इस क्रिया की विधि बतलाते हैं:—

माथे पर जहाँ शिखा है उस से थोड़ा पीछे से शुरू करके सामने दोनो बाहो के ऊपर से धीरे धीरे नीचे उतार लाकर उँगलियो तक लाना होगा। एक बार सामने ही ललाट से खींच कर मुख मण्डल के ऊपर से (शरीर से बहुत निकट लाकर)

हाथ चलाते हुए पेट तक कभी घुटने तक खींच लाना होगा। अगर ऐसा करने में पात्र की आँखें खुलती हुई दिखलायी देवें या पात्र निद्राभिभूत नहीं हो तो आधे घंटे बाद बैठक समाप्त कर देना चाहिये। और दूसरे दिन उसी नियत समय पर उसी रीति से काम शुरू करना चाहिये। यह निश्चित बात है कि जल्दी हो या देर में अगर ऊपर बतलायी रीति से काम किया जाय तो पात्र पूरे तौर से मेसमेरिक निद्रा में लाया जा सकता है। पहले पहल स्वाभाविक नींद की तरह ही जान पड़ेगा। लेकिन जितना ही बैठक करके चेष्टा की जाती रहेगी जितना ही पात्र को आदर पुचकार से काम लिया जायगा और उसको प्रतिकूल भाव से दूर रखा जायगा उतना ही उसकी मेसमेरिक अवस्था बराबर बढ़ती जायगी।

ऐसे पात्र की मेसमेरिक अवस्था मे पहले पहल उसको विरक्त नही करना चाहिये। कुछ देर तक ऐसे ही पड़े रहने देना उचित है। और नींद में हो आने के कुछ समय बाद तक अपनी आकर्षणी प्रक्रिया चलाते रहना चाहिये।

अब अपने तईं तैयार हो कर पात्र से पूछना चाहिये कि उसको कैसा मालूम होता है। इतना पूछने पर या तो वह अपना अबशभाव छोड़ कर जाग उठेगा या सवाल का जवाब न देकर चुप चाप सोया रहेगा। अथवा जवाब देगा। दोनो अवस्थाओं के पात्र देखे गये हैं। इन तीनो मे से कोई एक होगा। अगर तीसरी बात हो अर्थात् सवाल का जवाब दे तो समझना होगा कि स्वाप्निक (Somnabulic) अवस्था को पहुँच गया है।

जब निश्चय हो जाय कि पात्र स्वाप्निक अवस्था मे जा चुका है तो नीचे लिखे सवाल करना चाहिये।

१—जिस तरह से मैंने काम किया है वह आपको अच्छा है

या नहीं अथवा आप इससे कोई अच्छी रीति बतला सकते हैं या नही ?

२ – कुछ विशेष जरूरी बात कह सकते या किसी तरह का कुछ उपदेश देना चाहते हैं ?

३—आपके मग़ज मे भीतर रोशन जान पड़ता है या नहीं। अगर हाँ तो बतलाइये कि साफ है या धुँधली छाया सी ?

४—आप मेसमेराइजर को देख रहे हैं या नहीं ? अगर देख रहे हैं तो अपने शरीर के किस स्थान से देख रहे हैं और आपको यह दृष्टि और साफ़ कैसे हो जायगी।

५—आप अपने शरीर के या मेरी देह के भीतर सब देख रहे हैं या नहीं और इस विषय में कुछ करना चाहते हैं ?

६—आपकी नजर कहाँ तक जाती है। आप कहीं और स्थान मे जा सकते हैं या नही। और ऐसी कोई घटना की बात कह सकते हैं जो अब होने वाली है।

७—कितने दिनों पर आप मेरे मन की बात जान सकेंगे ? और मैं अपने मनमे जो सोचूँगा उसे समझ जायेंगे। और आपकी अन्तर्दृष्टि और किस किस रास्ते को जावेगी ?

इन सवालो के जवाब से ठीक समझा जा सकेगा कि उस पात्र से किस तरह के सवाल करने उचित होगे और किस तरह की परीक्षा से उसके साथ कार्य्य निर्वाह होगा। और जब तक वह दिव्यदृष्टि सम्पन्न (Clairvoyant) न हो जाय तब तक सब तरह की जाँच पड़ताल रोक देना होगा या नही यह भी समझ मे आ जायगा।

पात्र जब तक सोता रहे तब तक सोने देना होगा लेकिन जब वह अपनी इच्छा से जगा देने को कहे या थकावट का भाव जाहिर करे तब जगा देने के पहले कह देना होगा कि नींद की

दशा मे जो कुछ हुआ है वह सब जाग उठने पर भूल जाय। पात्र को जगाने के समय उसकी कुर्सी के पीछे खड़े होकर दोनों ओर घुठने से शुरू करके दोनों बाहों के ऊपर से होते हुए माथे तक उलटा पास दोनो हाथों से देना होगा। और मुँह के सामने तेजी से हाथ की उँगलियों को ऊपर की ओर चलाकर उसे जागने को कहते रहना होगा। कभी एकबयक नहीं जगा देना चाहिये। और देर होने से जल्दी नहीं करना चाहिये। सुबिधा-नुसार जागने देना चाहिये।

डा० विलियम डेवी की निद्रा लाने वाली विधि

डाक्टर विलियम डेवी अपनी प्रैक्टिकल मेसमेरिष्ट * नामक पुस्तक मे तीन तरह से निद्रा लाने की विधि बतलाते हैं उनका वर्णन नीचे दिया जाता है:--

साधारण विधि—

एक निर्जन शान्त कोठरी में एक कुर्सी या कौच पर रोगी को इस तरह बिठाना कि उसे कुछ तकलीफ या असुविधा न हो। अगर रोगी कौच छोड़कर कुर्सी पसन्द करे तो वैसा ही करना चाहिये। निद्रा आने पर सिर न झुक जाय इसके वास्ते दोनो हालतों मे ध्यान रखना चाहिये और एक छोटी तकिया सिर के पास रख देना चाहिये। जिस घर में मेसमेराइज करना हो उसमें रोगी का खास अपना या ऐसा नातेदार जो चुपचाप क्रिया समाप्ति तक शान्त रहने मे समर्थ हो वही एक रहे और कोई नहीं रहने पावे। लेकिन ऐसे एक आदमी का वहाँ रहना बहुत जरूरी समझना चाहिये। इसका प्रबन्ध करके साधक को रोगी के ठीक

---

* The illustrated Practical Mesmerist by Dr. wailliam Davey.

सामने इस तरह बैठना या खड़े होना चाहिये कि उनके दोनों घुठने रोगी के घुठने से सटे रहें। और दोनों एक दूसरे को टक लगाये देखता रहे। इस तरह टकटकी स्थिर रखकर ही पास देना सिद्ध का शुरू करना चाहिये। पास देते समय कोई तो रोगी की एक आँख पर ही अपनी नजर स्थिर करता है और कोई बारी बारी से दोनो पर आँख चलाया करता है। क्रिया साधक अपनी क्षमता के अनुसार जिसमे सुविधा हो वह कर सकता है। लेकिन दोनो हालतों में इसका ध्यान रखना होगा कि आँख को पलक गिरने न पावे। क्योकि आँखों से जो शक्तिधारा बहती है वह पलक गिरने से खण्डित हो जाती है। फिर हर बार नयी धारा चलाना पड़ती है लेकिन पास से कुछ इसकी पूर्ति हो जाती है तौ भी जहाँ तक बने टकटकी बरकरार रखना ही उचित और कर्त्तव्य है। एक बात और याद रखने की है कि किसी तरह तकलीफ़ सहकर ऐसा करने की कोशिश नहीं चाहिये। आँखो की थकावट या आँसू आ जाने के कारण पलक गिरने ही लगे तो जबरदस्ती से उसे रोक रखने की अपेक्षा आँखें बन्द करके पास देना अच्छा है। फिर आँख को थोड़ा सा विश्राम देकर पहले की तरह क्रिया करना चाहिये।

इस तरह टकटकी और पास से जब रोगी की आँखें मुँद जायँगी तब उसके कपाल और मुँदी हुई आँखों पर स्थिर दृष्टि रख कर पास बराबर देते रहना चाहिये। जबतक रोगी गाढ़ निद्रा मे न पहुँच जाय तब तक पास देना जारी रखना चाहिये। छोटे पास छाती तक मिनट मे दस बारह और बड़े पास सर से पाँव तक पाँच सात दिये जा सकते हैं। लेकिन स्थिर भाव से सुगमता पूर्वक जितना पास दिया जा सके उससे अधिक की कोशिश कभी नहीं करना चाहिये। हर एक पास देने की बेर इच्छा शक्ति की दृढ़ता

रखना बहुत जरूरी है। पास देते समय इस बात से खबरदार रहना चाहिये कि हाथ उठाने के पास निवर्त्तक न हो जायँ। हर एक पास खतम होने पर हाथ की मुट्ठी बन्द करके अथवा दोनों हाथ दो ओर से अर्द्धवृत्ताकार में ऊपर ले जाकर तब दूसरा शुरू करना होगा।

पास की विधि—मेसमेरिक निद्रा लाने में जिन साधारण नियमों पर नजर रखना जरूरी है वह बता दिया गया। अब यहाँ यह बतलाते हैं कि कैसे पास प्रयोग करना होगा। पहले हम कह आये हैं कि कि डेवी साहब तीन विधि बतलाते हैं जैसे—

१—उंगलियों को कुछ फाँक रखकर रोगी के सिर के ऊपरी भाग से दोनों हाथों द्वारा नीचे को पास देना होगा। इस तरह का पास देने के समय साधक की उङ्गलियों के अगले भाग (नोक) रोगी के मुँह और शरीर से दो तीन इञ्च दूर और हथेली रोगी के सामने रहेगी। यह पास साधारणतः छाती के ऊपर तक दिये जाते हैं। केवल बीच में कभी कभी अर्थात् कोई दश बारह पास के बाद एक बार सिर से पाँव तक अथवा कमर तक पास देकर सारे शरीर में मेसमेरिक विजली का प्रवाह चला देना काफी होता है। लेकिन सिर से पाँव तक पास देने के समय फेंफड़ों को बिलकुल बचा रखना होगा। क्योंकि फेंफड़े मे अधिक तड़ित प्रवाह होने से रोगी को श्वास कष्ट होसकता है। अगर कभी ऐसी घटना हो जाय तो उसी क्षण छाती पर कई विक्षेपक पास*

---

* रोगी के जिस किसी अंग पर यह पास देने की जरूरत हो उसके ऊपरी भाग में ठीक बीचोबीच दोनों हाथों की हथेली की पीठ सटाये हुए तेजी से लेजाकर दोनों हाथ हटाकर तिरछे ले जाना चाहिये। ऐसा करने से वहाँ की तड़ित शक्ति कुछ सञ्चालित होकर हट जाती है और साथ ही रोग की शक्ति

(Dispersivepass) और फूँक (शीतल श्वास वायु) देकर दूर कर देना चाहिये।

रोगी के सारे अङ्ग मे विशेषतः मस्तिष्क के सब भाग पर सम भाव से तड़ित शक्ति प्रवाहित करने के लिये कभी कभी मस्तक के ऊपर बगल से और कभी कभी पीछे की ओर से भी पास देना जरूरी है ऐसा करने से रोगी के मस्तिक के स्थान विशेष पर अधिक तड़ित शक्ति प्रवेश नही कर सकती।

दूसरी रीति—पहली विधि मे पास की जो रीति कही गयी है उसे आरम्भ करने के पहले पात्र के दोनों अङ्गूठों के अगले भाग अपने दोनों हाथों के अङ्गूठों के अग्र भाग से मिला कर परस्पर इकटक देखना चाहिये। इस तरह का अँगूठा मिलाना साधक के दहने हाथ से पात्र के बायें हाथ का और साधक के बाएँ हाथ के अङ्गूठे से पात्र के दहने हाथ के अङ्गूठे का होगा। इससे तड़ित प्रवाह अधिकता से होकर पात्र के निद्राकर्षण में सहायता मिलेगी। क्रिया साधक अर्थात् सिद्ध पात्र के सन्मुख एक कुर्सी पर बैठ कर भी ऐसा कर सकता है। ऐसा करने से खड़े खड़े बहुतेरे पास देने की मिहनत से साधक बच जा सकेगा। उसके बाद वाली सब प्रक्रिया पहली विधि की तरह ही होगी।

तीसरी विधि—इस तीसरी विधि में ऊपर बतलायी हुई दोनों विधियो से कुछ विशेष अन्तर नही है। केवल हाथ पकड़ने में ही थोड़ा भेद है। इसमे दूसरी विधि की तरह अङ्गूठे मिलाने के बदले दोनो हाथो की उँगलियों को फैलाकर साधक अपनी

भी कुछ अंश में वितरित होकर रोगी का कष्ट घटा देती है। इसीको विक्षेपक पास कहते हैं।

उँगलियाँ पात्र की हथेली की पीठ पर और पात्र की उँगलियाँ साधक की हथेली की पीठ पर फैली रहेंगी।

अब आँखों के मुँद जाने, गाढ़ी स्वास, प्रश्वास, माथा इधर उधर लटक जाने और शरीर की शिथिलता से जब मालूम हो जाय कि पात्र निद्रा में आ चुका है तब उसके बगल में खड़े होकर कुछ झुक कर उसके सिर के दो एक इञ्च दूर होकर माथे के पीछे वाले भाग से ऊपर चाँदी तक धीरे धीरे स्वास वायु डाल कर निद्रा को और गाढ़ कर देना चाहिये। साथ ही दो एक सिर से पाँव तक पास भी दे देना चाहिये। अगर इस दशा में रोगी कभी चौंक उठे या कुर्सी से उठ खड़ा हो या कुछ बेकली या हाथ पाँव में ऐंठन अकड़न या और कुछ तकलीफ हो तो विचलित होना नहीं चाहिये। धीर भाव से माथे पर श्वास प्रश्वास डाल कर और पीड़ित स्थान पर हस्ताघात (Softy Patting) करके शान्त करना चाहिये।

मेसमेरिक चिकित्सा

Medical Mesmerization

मेसमेरिजम से रोगों के इलाज की बात साधारणतः कही जा चुकी। कुछ विशेष रोगों की चिकित्सा विधि यहाँ लिखी जाती है।

स्नायविक रोग

(Diseases of the Nervous System)

मेसमेरिक निद्रा द्वारा स्नायविक उत्तेजना, अवसाद वा दुर्बलता आदि सब स्नायु मण्डल के रोग दूर किये जाते हैं। रोगी

को किसी तरह उत्तेजित न करके बिना कुछ बाधा व्याघात के उसे बहुत समय तक निद्रा लेने देना चाहिये। और बीच बीच में माथे से पाँव तक लघुस्पर्श पास देकर रोगी को स्वच्छन्दता से पड़े रहने देना चाहिये। अगर उसके किसी अङ्ग में कुछ पीड़ा हो तो पास देने के समय वहाँ पर मृदुघर्षण (Friction) करके नीचे को खींच ले जाना चाहिये। शरीर यंत्र की क्रिया बिगड़ने से जीवनी शक्ति (Vital Power) के चलने में विघ्न व्याघात हो कर स्नायविक हल चल हो या मस्तक में स्नायविक शक्ति की अत्यन्त अधिकता के कारण हाथ पॉव ठंढे हों, त्वचा की क्रिया लोप हो जाय तो माथे से पाँव तक लम्बा पास देने से उसमे तुरत लाभ होता है। और कई बार मेसमेरिक निद्रा ला देने से स्नायविक क्रिया का उत्कर्ष होकर रोगी बिल्कुल नीरोग हो जाता है। जब तक रोगी का पूरे तौर से निद्रा भङ्ग न हो तब तक साधक को उस जगह से हटना नहीं चाहिये। क्योंकि ऐसा करने से आफत बिपत की शङ्का है। कुछ विशेष स्नायविक रोगों के इलाज की विधि यहाँ लिखी जाती है।

अधिक रक्तश्राव से स्नायविक अवसाद

(Weekness arising from Hœmarrhage)

ऊँचे से गिरने या और किसी कारण से बहुत खून बहकर नाड़ी क्षीण हो या छूटने लगे और शरीर में शीत (शीताङ्ग) होने का लक्षण दिखाई देवे या रोगी मुमूर्षु दशा में पहुँच जाय तो झटपट एक खूब साफ रूमाल या तौलिया चार तह करके रोगी की छाती (Heart) पर रखे और उसी पर लगातार उष्ण श्वास देने लगे। जब तक रूमाल या तौलिया अच्छी तरह गर्म न हो जाय और स्वास वायु से भींग न जाय तब तक इसी

तरह स्वास डालते रहना चाहिये। और विक्षेपक पास द्वारा सञ्चयीकृत शक्ति को रोगी के सारे शरीर में विस्तृत कर देना चाहिये। ऐसा करने से थोड़ी देर पर देखने में आवेगा कि नाड़ी उठने और सबल होने लगी है। आँखों के आगे अन्धकार होना दूर हो गया है। कान के पास भोभों सोंसों आवाज नहीं होती। उसी समय रोगी को कुछ पुष्ट गरम खाद्य जैसे गरम दूध आदि देना चाहिये। अगर रोगी की फिर वैसी दशा हो तो फिर पहली लिखी रीति से क्रिया करना चाहिये और जब तक रोगी के प्राण की कुछ भी आशा हो तब तक यह प्रक्रिया करते जाना चाहिये।

इस अवस्था से रक्षा पाने पर पीछे वेदना (inflammation) और ज्वर होकर नाड़ी खूब तेज हो जायगी। तब मस्तक के ऊपरी भाग (coronal region) चाँदी में शीतल स्वास डाल कर धमनी में रक्त की तीव्र गति को मन्द कर देना होगा। मगज में अधिक रक्त सञ्चय का भय हो तो हाथ पाँव के अग्र भाग मे थोड़े से पास देने से रक्त की गति कुछ नीचे की ओर खिंच जाती है।

स्नायविक सिर पीड़ा
Nervons Headache

यह रोग कभी कभी बहुत दुःखदायी हो जाता है। यह सिर दर्द अलग ही हो अर्थात् किसी और रोग का कारण व साथी न हो तो नीचे लिखी रीति से पास देने पर ही दूर हो जाता है। पास इस तरह देना चाहिये—

गले से मस्तक और कुछ ऊपर तक दो तीन इञ्च के अन्तर से हाथ चलाना चाहिये। पाँच या छ मिनट तक रोगी के सिर के चारों ओर इसी तरह करने और बीच बीच में हाथ हटा

कर एक फुट या अधिक दूर हटा ले जाने चाहिये। इस प्रक्रिया से रोगी का मस्तिक शीतल और हलका जान पड़ेगा। और उसको उसी दम आराम मिलेगा।

यह रोग पुरानी स्नायविक गड़बड़ी से उपजता है तौ भी इस क्रिया से तुरत फायदा हो जायगा, लेकिन फिर उसके हो जाने का भय रहता है। ऐसी अवस्था होने पर बार बार उस प्रक्रिया से काम नहीं लेना चाहिये। बल्कि नियम से कई मेस-मेरिक बैठकी करके स्पर्शकृत लम्बा पास देकर रोग को जड़ मूल से दूर कर देना उचित है। अगर इससे भी कामयाबी न हो सके तो पीछे की ओर कई बार इस तरह पास देकर पीड़ित स्थान अर्थात् मस्तक के ऊपर स्वास वायू डालना चाहिये। अगर इन क्रियाओं से भी विशेष लाभ न हो तो मेसमेरिक निद्रा लाकर ऊपर वाली विधि से ही पास देना चाहिये।

वायू वा उन्माद रोग (Insanity)

यह रोग केवल गाढ़ी और उत्तेजना रहित मेसमेरिक निद्रा से ही दूर किया जाता है। ऐसे पागल रोगियों को मेसमेराइज करना या मेसमेरिक निद्रा लाना बिल्कुल सहज काम नहीं है तौभी विशेष क्षमता वाले साधक अपने अवसादक पास और अपनी प्रबल इच्छा शक्ति से बहुत जल्द अपने काबू में कर सकते हैं। इस तरह एक बार अधीन हो चुकने पर फिर तो उसे तीन चार और कभी दस दस बारह बारह घंटो तक निद्रा मे रख सकते हैं। इतने अधिक समय तक रोगी के पास खुद क्रिया साधक को बराबर हाजिर रहना चाहिये और नहीं हो बने तो अपने खास विश्वासी को निद्रा भङ्ग होने तक जरूर तैनात कर देना चाहिये।

ऐसी दशा में फ्रेनो मेसमेरिजम से और जल्दी फायदा होता

है। क्योंकि मस्तिष्क के विकार या उसके भिन्न भिन्न भाग में गड़बड़ी होने से ही इस रोग की पैदाइश होती है। फ्रेनो मेसमेरा-इजर मस्तिक के भिन्न भिन्न भाग और उनकी क्रिया विशेष रूप से जानता है। वह रोगी को मस्तिष्क का उत्तेजित भाग निवृत्त और अवसन्न भाग प्रवृत्त वा उत्तेजित करके थोड़े ही समय में नीरोग कर सकता है। *

स्नायु शूल (Neuralgia)

स्नायु की वेदना को स्नायु शूल कहते हैं। यह दर्द रह रहकर उठता है जब यह रोग नया रहता है तब इसके विरामकाल में कुछ कष्ट नहीं होता। स्नायु शूल भिन्न भिन्न रूप में शरीर के भिन्न भिन्न भागों में हुआ करता है पहले सर्वाङ्ग के पास और फिर स्थानिक अर्थात् पीड़ित स्थान पर पास देने तथा रोगी को देर तक मेसमेरिक निद्रा में रखने से ही यह रोग साधारणतः आरोग्य हो जाता है।

पक्षाघात (Paralysis)

एकाङ्ग अर्थात् दाहने या बायें अर्द्धाङ्ग पर आघात होने से पीड़ित अङ्ग के विपरीत भाग पर मस्तिष्क के ऊपर से शुरू करके पीड़िताङ्ग की ओर कन्धे के ऊपर से पाँव तक नीचे को पास देना होगा। अगर एक ओर का कोई एक भाग (हाथ या पाँव) रुग्न हो तो उसी अङ्गावयव पर बार बार पास देकर उसे कठिन (Rigid) कर देना चाहिये। किसी अङ्ग को कड़ा करना हो तो नीचे बतलायी रीति से पास देना चाहिये।

रोगी अपना हाथ पसार सके या पाँव के ऊपर जोर देकर खड़ा

---

* हाथ पर पास देना हो तो कन्धे से हाथ की उँगलियों की नोक और पाँव पर देना हो तो जाँघ से पाँव की उँगलियों की नोक तक

हो सके तो पीड़ित अङ्ग के मूल से अग्रभाग तक तेजी से जल्दी जल्दी पास देना चाहिये। पास देने के समय दोनों हाथ की उँगलियों को इस तरह फाँक से फैला रखना चाहिये कि जिस अङ्ग पर पास दिया जाता है उसकी परिधि का प्राय सब अंश साधक के हाथ और उङ्गलियों से ढक जाय। पास देते देते जब साधक थक जाय तब तुरत पास देना बन्द कर देना चाहिये क्योंकि उस दशा में पास देने से रोगी को कुछ लाभ नही होता बल्कि साधक की हानि हो सकती है।

रोगी अगर आप ही आप हाथ फैला न सके या अपने पाँव के बल पर खड़ा न हो सके तो साधक को चाहिये कि एक हाथ से उसका हाथ या पाँव पकड़ कर दूसरे हाथ से पास देवे। देह के किसी एक भाग में दुर्बलता होने पर भी इसी प्रक्रिया से आरोग्य किया जा सकता है।

मृगी रोग (Epilepsy)

पहले बायें कान में फिर दहने कान में दस मिनट तक उष्ण श्वास देना चाहिये। और फिर इसी तरह पहले बायी हथेली पर फिर बाद दाहनी हथेली पर दस मिनट तक उष्ण श्वास डालना तब सर्वाङ्ग पास देना चाहिये। यह याद रखना चाहिये कि जब रोगी के हाथ या पॉव पर पास दिया जाय तब नीचे को उसके हाथ उँगलियों की नोक तक और पाँव में पाँव की उँगलियो की नोक तक खींच ले जाकर झाड़ फेंकना चाहिये।

अगर रोगी हाथ में या पॉव मे गर्म भाफ की तरह गर्मी का अनुभव करे तो हाथ या पाँव के जिस भाग पर गर्म मालूम हो कब्जे से वहाँ तक झाड़ देना चाहिये और तब तक झाड़ना

चाहिये जब तक वह गर्मी दूर न हो जाय। यह तकलीफ पास करने से दूर नहीं होती।

मृगी का रोगी जब एक बार मेसमेरिक निद्रा में आ जाय तब वह अकसर यह कह दिया करेगा कि कब फिर उसको मूर्च्छा होगी। ऐसी दशा में उस समय से थोड़ा पहले ही रोगी को मेसमेरिक निद्रा में कर रखने से वह मूर्च्छा का समय निद्रावस्था में बीत जायगा।

मूर्च्छा (Fainting)

मूर्च्छावस्था में इलाज करना हो तो साफ और उत्तम हवा आने जाने लायक घर में उसे सुला कर पहले छाती (हृदय) पर उष्ण स्वास डालना और फिर सिर से पाँव तक लम्बा पास देना चाहिये। और जब तक रोगी की मूर्च्छा बिलकुल न टूट जाय तब तक बारी बारी से इसी तरह करना चाहिये। कुछ दिनों तक ऐसा रोज नियमित रूप से करने से रोग सदा को दूर हो जाता है फिर मूर्च्छा नहीं होती।

गुल्म वायु (Hystaria)

माथे से आँख के ऊपर होते हुए नाक तक इस तरह लम्बा पास देना चाहिये कि ज्यों ज्यों हाथ नीचे की ओर उतरता जाय त्यों त्यों रोगी के शरीर से अधिक दूर होता जाय। और जब नाक के सामने आवे तब बहुत दूर हो जाय। जब तक रोगी की आँख से पानी नहीं गिरने लगे अथवा उसको सर्दी मालूम हो तब तक ऐसा ही पास देते रहना चाहिये। उसके बाद दोनों पाँव पर पास देना बाद को सर्वाङ्ग पास की क्रिया के अनुसार मेस-मेराइज करना होगा। मूर्च्छा के समय इस क्रिया से मूर्च्छा दूर

होगी। और इसी प्रक्रिया से कुछ दिन रोज मेसमेराइज्म करने से रोगी बिलकुल नीरोग हो जावेगा।

पदांक्षेप (Cramp in legs)

गरम पानी में रोगी का पाँव रख कर लम्बा पास देना चाहिये या पिंडली पर गरम तेल मालिस करते करते मेसमेरिक फ्रिक्शन का काम करना चाहिये। पेट मे ऐसा आक्षेप * होने से (Cramp in the abdomen) ऐसी ही व्यवस्था चाहिये। लेकिन पेट में गरम तेल मलने से मेसमेराइज्म फलालेन बाँध देना अच्छा है।

फेंफड़े का दाह (Pneumonia)

रोगी को मेसमेरिक निद्रा में डालकर जहाँ दर्द हो वहाँ लम्बा और तिरछे पास देना चाहिये। और छाती के ऊपर से दोनो हाथों से दो ओर को धीरे धीरे तिरछे पास देकर बगल तक ले जाना

---

* शरीर छूते हुए पास को अंगरेजी में फ्रिक्शन (Frictions) या मेगनेट्रिक फ्रिक्शन) कहते हैं। हम इसको स्पर्श कृत पास कह कर बतला आये हैं। इसे लम्बा लम्बी देने पर स्पर्शकृत लम्बा पास या छूत हुआ लम्बा पास (Langitudinal frictions) तिरछे होकर पास देने से स्पर्शकृत तिरछा पास (Transverse frictions) इत्यादि नाम पड़ता है। इसके सिवाय अलग से स्पर्श करके पास देने से लघुस्पर्श कृत और जोर से छूकर पास देने को गाढ़ स्पर्शकृत पास कहा जा सकता है। यह स्पर्शकृत पास और दो नामो से पुकारे जाते हैं जैसे:—(१) निडि पास (२) स्ट्रोकिं पास।

चाहिये। इस तरह १५ मिनट तक करके छाती पर उष्मा प्रक्षेप* करना चाहिये और अन्त को कई बार मृदु आघात (stroking) की क्रिया करके समाप्त कर देना चाहिये।

दमा रोग

फेंफड़े के दाह में जो क्रिया बतलायी गयी है। उसी तरह की प्रक्रिया से दमा भी आरोग्य होता है। यह रोग जल्दी निर्मूल नहीं हो जाता। एक बार दब जाने पर भी फिर कुछ दिनों के बाद प्रकट हो सकता है। इस कारण कई अठवाड़े तक रोगी को इस तरह मेसमेराइज करना चाहिये यहाँ तक कि रोगी का बिलकुल आरोग्य हो जाना समझ में आ जाने पर भी एक दम क्रिया बन्द नहीं कर देना चाहिये और कुछ दिनों तक करते रहना। उचित है लेकिन हर रोज ठीक एक ही समय बैठक करना चाहिये।

यक्ष्मा (Pulmonary cansumption Phthisis)

इस रोग में फेंफड़े के प्रदाह में बतलाये हुए प्रकार से पास करना चाहिये। इसके सिवाय रोगी को छाती पर विशेष जहाँ पर अधिक तकलीफ जान पड़े वहाँ बीच बीच मे स्वास डालना चाहिये। और रोगी का एक हाथ धर कर दूसरे हाथ से पास देना चाहिये।

यक्ष्मा वा क्षयी अर्थात् तपेदिक बड़ा विकट और भयङ्कर होते हैं। लेकिन इस कारण उससे निराश कभी नहीं होना चाहिये।

---

* याद रहे कि फेंफड़े और हृत्पिण्ड पर बड़ी खबरदारी से मेसमेरिक शक्ति का प्रयोग होता है। क्योंकि इन स्थानों में एक समय अधिक शक्ति प्रवेश होने से बड़ी आफत होती है। कभी ऐसा हो भी तो विक्षेपक पास से तुरत सञ्चित शक्ति को सञ्चालित कर देना चाहिये।

छाती अगर ठीक है और भीतर के यंत्र अगर एकदम बिगड़ नहीं गये हैं तो मेसमेरिक इलाज से जरूर ही आरोग्य लाभ होगा।

हृदय के रोग (Deseases of the Heart)

शरीर के भीतर वाले यंत्रों में हृत्पिण्ड ही सबसे प्रधान और जीवन का आधार स्वरूप है। इलाज में जरा भी असावधानी होने से रोगी का जीवन नाश हो जा सकता है। इस कारण खूब दक्ष मेसमेराइज़र हुए बिना ऐसे अवसर पर हाथ लगाना किसी तरह उचित नहीं है। इसकी चिकित्सा यों होनी चाहियेः—

मेसमेरिक निद्रा लाकर धीरे धीरे सिर से पाँव तक लम्बा पास देना चाहिये। और बीच बीच में माथे पर शीतल स्वास डालना चाहिये। हृत्पिण्ड पर भी इसी तरह शीतल श्वास डालने से बहुत उपकार होता है। डाक्टर डेवी की बतलायी हुई निद्रा लाने की रीति और उनकी रीति नं० २ इस रोग की चिकित्सा मे बहुत लाभ देने वाली देखी गयी हैं। चाहे जो रीति बरती जाय लेकिन जब रोगी का हृत स्पन्दन हो तब तुरत रोक देना चाहिये। सब तरह के हृदय रोग मे उक्त रीति काम करती है।

पाकाशय वा परिपाक यंत्र के रोग।

अग्निमान्द्य वा अजीर्ण आदि-

Indigestion Dyspepsia & c.

रोगी को निद्रा मे करके पाकाशय पर लम्बा और तिरछे दोनों तरह के पास देने चाहिये। हर बैठक मे ऐसा करना होगा। हर रोज कम से कम पाँच या सात बार मेसमेराइज्ञ किया हुआ

पानी पिलाना चाहिये। बीच बीच में रोगी की पीठ की ओर गला से शुरू करके रीढ़ के अन्त तक छूता हुआ * पास देना चाहिये। रीढ़ की कमजोरी या और कोई तकलीफ़ हो तो गाढ़ स्पर्शकृत पास देना उचित है इस रीति से सब तरह के पाकाशय के रोगों में सफलता मिलती है।

मूत्र मंत्र के रोग

(Diseases of the urinary organs)

किडनी (गुर्दों) में या ब्लेडर (मूत्रस्थली) में किसी तरह का मूत्र रोग क्यों न हो नीचे लिखी विधि से इलाज करना चाहिये।

जहाँ तकलीफ है वहाँ बिना छूता हुआ या हो सके तो छूता हुआ पास देना चाहिये। उस जगह बहुत देर तक हथेली रखने से बहुत फायदा होता है। इसके सिवाय रोगी के सारे शरीर में साधारण नियम से पास देकर मेसमेराइज करना चाहिये। लेकिन क्रिया साधक के मन मे उस समय भी ऐसा भाव रहना चाहिये कि जितना ही आरोग्य कारी शक्ति रोगी की देह मे प्रवेश करती है वह सब पीड़ित स्थान की ओर दौड़ कर रोगी की तकलीफ दूर कर देवे। शरीर के भीतर के सभी रोगों मे मेसमेराइज किया हुआ पानी पीने को जरूर देना चाहिये।

आँखों के रोग

(Diseases of the Eye)

आँख के रोग बहुत तरह के होते हैं। दुर्बलता या स्नायविक अवसाद होने के कारण या खूब पतला जाला या सूत की तरह

---

* कपड़े के ऊपर से भी छूता हुआ स्पर्श कृत पास दिया जा सकता है। इससे शक्ति प्रयोग में कुछ हानि नहीं होती।

किसी चीज़ से घिर जाने के कारण दृष्टि शक्ति कम हो गयी हो तो मेसमेरिक इलाज से बहुत जल्द रोग दूर हो जाता है। मोतियाबिन्द, और नजर का धुँधलापन आदि इसी दरजे के रोग हैं। सब तरह के नेत्र रोग नीचे लिखी हुई रीति से अच्छे किये जा सकते हैं—

रीति—एक बरतन मे मेसमेराइज किया हुआ पानी लेकर रोगी की आँख धो देना चाहिये। और अपनी ऊँगलियों को भी उसी पानी मे धोकर साधक को चाहिये कि क्यूरेटिव पास देवे। और अपनी तर्जनी उँगली रोगी की पीड़ित आँख की ओर एक इञ्च के अन्तर पर करके ताने और मेसमेरिक शक्ति प्रयोग न करे। दृष्टि शक्ति थोड़ी सी कम हो तो रोगी की आँख की ओर कुछ देर तक इकटक ताकते रहने से ही अच्छा हो सकता है। कभी कभी माथे के पीछे वाले भाग से ले जाने या कन्धे तक छूता हुआ लम्बा पास देने की जरूरत पड़ती है। मोतियाबिन्द या धुन्ध अथवा फूली हो तो बड़ी सावधानी से उस पर बहुत नरमी से घिसने (Friction) से विशेष फल मिल सकता है। लेकिन खूब सावधानी से काम नही हो तो आँखों में दाह हो सकता है।

साधारण सार्वांगिक रोग

सन्धि बात (Rheumatism)

यह शरीर के किसी अङ्ग मे हो मेसमेरिक इलाज से इसमें अद्भुत लाभ होते देखा गया है। नये रोग मे केवल मेसमेरिक शक्ति के प्रयोग से ही पीड़ा दूर होती है। हाथ पाँव आदि किसी अङ्ग पर इस रोग के होने मे मेसमेरिक पास द्वारा रोग शक्ति को आकर्षण करके उस अङ्ग के प्रान्त भाग (Extremity) से

होकर बाहर कर देना चाहिये। अगर जाग्रदावस्था में प्रक्रिया से विशेष फल न मिले तो रोगी को निद्राभिभूत करके ऊपर लिखे मुताबिक पास देना चाहिये।

देह के भीतर किसी अङ्ग विशेष पर यह रोग होवे तो उष्ण श्वास डालने से बड़ा काम होता है जैसे बात जनित फेफड़े की आवरण झिल्ली के प्रदाह (Rheumatic Pleuricy) होनेपर नीचे लिखी रीति से काम करना चाहिये—एक हाथ रोगी की छाती पर रख कर या दोनों हाथ काँधे पर रख कर दोनों कन्धोके बीच वाले स्थान पर पाँच मिनट तक उष्ण स्वास डाले उसके बाद जहाँ श्वास डाला गया है वहाँ से दोनों कन्धों की ओर क्यूरेटिव पास द्वारा पाँच मिनट तक खींच ले जाना इस तरह तीन बार करना चाहिये। उसके बाद छाती के बीच स्थान से शुरू करके पहले दोनों हाथ की उँगलियों की नोक तक बाद को छाती की हड्डी से चूतड़ की हड्डी तक ले जाकर वहाँ से दो ओर दोनों हाथ करके पाँव की उँगली की नोक तक दस मिनट क्यूरेटिव पास देकर बाहर कर देना चाहिये। अगर जरूरत हो तो इसके बाद सारे अङ्ग में सर्वाङ्ग पास भी दिया जा सकता है। मेसमेराइज करने के समय रोगी के दोनो हाथ या दोनों पाँव १०८ फारेनहेट थर्मामेंटर से अधिक गर्म पानी में डुबा रखने से बहुत जल्द आराम होता है।

पुराने सन्धिवात में भी इसी तरह से इलाज किया जाता है। और पीड़ित स्थान पर गरम सरसों का तेल मालिस करना चाहिये। क्रिया साधक मालिस कर सके तो अच्छा नहीं तो रोगी का कोई अपना आदमी या मित्र यह काम करे तो अच्छा होता है। मेग्नेटाइजफ्लानेल से पीड़ित स्थान बाँध देना

भी बड़ा काम करता है। २४ घंटा से अधिक होने पर या पसीने मे भींग जाने पर उसको बदल देना चाहिये।

कमर में दर्द (Lumbago)

कमर मे बात हो तो वहाँ उष्ण श्वास डालकर गरम (मेसमेराइज) तेल और क्यूरेटिव पास से ही आरोग्य किया जाता है। जरूरत हो तो सर्वाङ्ग पास देना चाहिये।

गठिया (Gout)

इसका इलाज बिलकुल सन्धिपात की तरह होता है। इस रोग में पीड़ित स्थान पर खाली पास देने की अपेक्षा घिसने (Friction) से अधिक काम होता है। अगर इस रोग का परिपाक यंत्र के साथ सम्बन्ध हो तो रोगी के पथ्य पर विशेष ध्यान रखना चाहिये। और उसमें उष्ण श्वास डालकर मेग्नेटाइज कर देना चाहिये। रोज सवेरे नींद से उठने पर अद्धे बोतल का आधा गरम किया हुआ मेसमेराइज पानी पिलाने से और आहार के बाद परिपाक यंत्र के ऊपर उष्ण श्वास डालने से रोग घटने मे बड़ी मदद मिलती है।

गलगण्ड या घेघा

रोज उसी स्थान पर उष्ण श्वास का प्रयोग और घर्षण तथा पास देना चाहिये। और सबेरे और सन्ध्या समय उष्ण (मेसमेरिक) जल से आधे घन्टे तक धोना चाहिये। रोगी के पास थोड़ा मेसमेरिक जल रख देना चाहिये कि धोने के समय गरम जल मे मिला कर धोया करे।

सर्व प्रकार का ज्वर

ज्वर के इलाज मे जो पास देना होता है उसके दो मतलब होते हैं। एक रोगी के मस्तिक और देह के भीतर शरीर यंत्रो से

रोग शक्ति को खींच कर हाथ पाँव आदि अङ्गावयव के प्रान्त भाग से बाहर निकाल देना और दूसरा काम यह कि सारे शरीर के वर्हिभाग में उक्त रोग शक्ति को खींच ले जाकर पसीने के रूप में निकाल देना। एक ही समय एक ही प्रक्रिया द्वारा यह दोनों काम होते हैं।

इलाज—गाढ़ी और बहुत समय तक स्थायी रहने वाली निद्रा लाना चाहिये। रोगी को पीने के लिये मेसमेराइज किया हुआ जल देना चाहिये। जब सिर से पाँव तक क्यूरेटिव लम्बा पास देकर रोग शक्ति को खींच कर रोगी के पाँव से बाहर करते रहना होगा तब उस समय उसके पाँव से कोई छ इञ्च दूरी पर शीतल जल भरा एक बरतन रखना होगा। पास देते देते उसी पात्र के ऊपर तक ले जाना चाहिये। प्रक्रिया खतम होने से दस मिनट पहले वह जल फेंक देना होगा। और फिर साफ पानी उसमे भर कर वहीं रख देना होगा। इस तरह दस बारह पास सिर से पाँव तक लम्बा देकर माथे से उस जल पात्र तक सीधे खींच ले जाकर हर बार पास के अन्त में उस जल पात्र के ऊपर कुछ समय तक हाथ रख कर तो पास समाप्त करना होगा। क्रिया साधक के रोगी को फिर दोबारा देखने आने तक यह जल पात्र वहीं उसी तरह रहने देना चाहिये। उससे साधक के न रहने पर भी रोगी के शरीर से रोग शक्ति को खींच कर पीड़ा कम कर देगा।

शीत पीत्त विसर्प आदि

इस तरह के रोग में सिर से पाँव तक लम्बा पास देना चाहिये। गरम पानी मे तौलिया भिगो कर खूब अच्छी तरह पानी निचोड़ कर प्रदाह स्थल पर प्रयोग करना चाहिये। फिर पीछे गरम मेसमेरिक तेल लगा देना चाहिये। ज्वर होने पर

पसीना निकलने की विशेष कोशिश करना चाहिये। छोटी माता, लाल ज्वर और सब तरह के चेचक मे इसी तरह का इलाज करना चाहिये। संक्रामक जान कर इन रोगों के इलाज मे डरना नहीं चाहिये। सावधानी से साधक बेखटके काम करे।

चर्म्म रोग

दाद, इल्ला, मसा इत्यादि—

इस तरह के रोग में क्यूरेटिव पास देना। पीड़ित स्थान पर उष्ण श्वास डालना, उसके बाद मुँह का लार लेप देना और रात को मेसमेराइज किया हुआ तेल लगाना या मेसमेरिक फ्लानेल बाँध रखना चाहिये।

घिनई रोग

उँगलियों मे घिनई होने पर अगर उसमे पीब होने लगे तो उसमे मेसमेरिक तेल या फ्लानेल न लगा कर मेसमेराइज पानी से पावरोटी का पोल्टिस गरम गरम लगाना चाहिये लेकिन जब पीब हो जाय तब पुल्टिस नहीं लगाना चाहिये।

घाव, फोड़े या सड़ने वाले फोड़े

इस तरह के सब चर्म रोग जब तक जखम मे बदबू न हो तब तक पास देना चाहिये। अगर बदबू हो तो पहले जखम से थोड़ा ऊपर फिर कुछ नीचे उष्ण श्वास देकर क्यूरेटिव पास देना चाहिये। जखम को मेसमेराइज किये हुए गर्म पानी से धोकर खूब सुखा लेना चाहिये और मेसमेराइज तेल में छोटा सा लिंट

खूब भिगो कर लगा देना चाहिये। रोगी अधिक दुर्बल हो तो हर रोज सर्वाङ्ग पास देना चाहिये।

आकस्मिक दुर्घटना

आग से जलने, हड्डी टूटने या खिसकने, मोच खाने इत्यादि में—

इस तरह की तकलीफ में जहाँ कष्ट हो वहाँ उष्ण श्वास का प्रयोग अच्छा फल देता है। मेसमेरिजम द्वारा इन केसों मे रोगी का कष्ट निवारण ही मुख्य उद्देश्य होता है। हड्डी टूटने या खिसक जाने आदि दुर्घटनाओं में जहाँ सर्जिकल अपरेशन दर-कार होता है वहाँ पट्टी बैण्डेज लगाने से पहले मेसमेराइज़ कर लिया जाय तो बहुत अच्छा होता है अगर ऐसा नहीं हो सका तो पट्टी खोल कर मेसमेराइज हरगिज नहीं करना चाहिये। पीड़ित स्थान या उस स्थान के प्रान्त भाग मे आधे घन्टे तक गर्म पानी में भिगा रखने से अगर रक्त बहता हो तो घट जायगा और तकलीफ़ कम हो जायगी। पीड़ित स्थान गरम जल से धोकर उसको अच्छी तरह सुखा लेना फिर मेसमेराइज फिया हुआ गर्म तेल लगा कर क्यूरेटिव घर्षण करना चाहिये।

अग्निदाह मधुमक्खी या बर्रे के डंक पर

जखम पर उष्ण श्वास प्रयोग और क्यूरेटिव पास देना चाहिये। चमड़ा फट गया हो तो मुहँ पर भी लगा सकते हैं बाद को मेसमेराइज किया हुआ तेल लगा कर पट्टी बाँध देना चाहिये।

चोट आदि लगने मे भी इसी तरह करना चाहिये। उसमे लार नहीं लगाना।

मेसमेरिजम से अपरेशन।

मेसमेरिक निद्रा की ऐसी अवस्था भी होती है कि रोगी का शरीर मुर्दासा हो जाता है। उस समय वह बाहर या भीतर कुछ सुख दुःख अनुभव नही कर सकता और क्रिया साधक जो कहे उस को सुनने और उसकी आज्ञानुसार करने में बिलकुल तैयार रहता है। फेंफड़े की क्रिया और रक्त का चलना बन्द नही होता, खाना हजम होने के काम में कुछ रुकावट नही होती शरीर की गर्मी भी ठीक रहती है। वस्तुतः उसकी स्वाभाविक क्रिया में कुछ भी अन्तर नहीं आता बल्कि साधारण अवस्था से उसदशा मे अच्छी गति सब शरीर यन्त्र की रहती है लेकिन पात्र मुर्दे की तरह पड़ा रहता है। मेसमेरिक निद्रा की दशा मे रोगी के बिना जाने ही उस का अङ्गावभव (Amputation) काटना, दाँत उखाड़ना या और कोई अपरेशन किया जा सकता है। यहाँ तक कि लड़का होने ही वाला हो तो उस स्त्री के अनजाने मे सहज ही प्रसव कराया जा सकता है। क्रिया साधक को सर्जरी या जर्राही अथवा धात्री विद्या जानने की कुछ जरूरत नहीं। वह खुद या और शिक्षित सहकारी की मदद से रोगी को मेस-मेरिक निद्रा मे डाले रहे और सर्जन या जर्राही अपरेशन करता जाय कुछ चिन्ता नही।

सिर से पाँव तक लम्बा पास देकर अथवा मेसमेरिक निद्रा लाने की जो रीति बतलायी गयी है उससे किसी पक से पहले रोगी को मेसमेरिक निद्रा मे करके जिस अङ्ग मे अपरेशन करना है उसमे शिथिलता, वा कठिनता (Rigidity) उत्पन्न करना चाहिये। उसको इस परीक्षा के लिये कि पूरे तौर से सुन्न हो गया है या नहीं धीरे धीरे फिर जोर से सूई या तेज छूरी की नोक गड़ाकर देखना चाहिये। अगर रोगी को तनक भी अनुभव शक्ति होगी

तो जरूर वह हिले डुलेगा। और जबतक पूरी तौर से निस्तेज या अवसन्न हो जाय तबतक मेसमेरिजम द्वारा उसके अनुभव शक्ति का लोप कर डालना होगा। जब पात्र बिलकुल सुन्न हो जाय तब अस्त्र प्रयोग करना चाहिये। साथ ही याद रहे कि रोगी को छोड़ कर नहीं जाना चाहिये। जबतक अपरेशन होता रहे तब तक रोगी के पास जरूर हाजिर रहना चाहिये और बराबर इच्छा शक्ति चलाकर क्यूरेटिव पास देकर रोगी को बेसुध रखना चाहिये। खासकर जिस अङ्ग में अपरेशन हो रहा है उसपर या जहाँ काटा चीरा गया है वहाँ मेसमेरिक शक्ति प्रयोग करके उस अङ्ग को बराबर सुन्न बनाये रखना चाहिये।

इस दशा में रोगी कुछ बात कहे तो उसकी बात का जवाब देना साधक का कर्त्तव्य है। रोगी को और विषयों में भुला रखना चाहिये कि वह अपनी बात पर कुछ चिन्ता या सोच नहीं करने पावे। दाँत उखाड़ने या हाड़ बिठाने इत्यादि में साधारण सर्जरी के समय तक रोगी को निद्रा मे रखना चाहिये जिसमे वह होश मे न आ जाय। जब काम पूरा हो जाय तब डी·मेसमेराइज करके छोड़ देना चाहिये। लेकिन काट पीट या सङ्गीन अपरेशन में जब तक रोगी नीरोग न हो जाय तब तक उसे निद्रा में रखना चाहिये। कई दिन और कभी कभी कई सप्ताह तक रोगी को उस दशा में रखना होता है। उस दशा में रोगी का खाना पीना सब जारी रहेगा। उन कामों में कोई विघ्न नहीं पड़ेगा बल्कि वह आरोग्य होता जायगा। कोई तेज चीज या नशे की वस्तु नहीं देना चाहिये। हर रोज सबेरे शाम और जरूरत पड़ने पर और समय भी बार बार उसको मेसमेराइज्ज करना चाहिये और उसको बेहोशी में रखना चाहिये। खाने की चीजें भी मेसमेराइज करके देना चाहिये।

सहज ही बिना कष्ट के प्रसव कराना हो तो प्रसव वेदना अनुभव होने के कुछ पहले ही प्रसूती को मेसमेरिक निद्रा में लाकर छोड़ देना चाहिये और प्रसव के बाद भी कोई बारह घंटे तक उसी दशा में रखना चाहिये। प्रसव के समय किसी नातेदार अनुभवी और दयालु तथा स्थिर स्वभाव की स्त्री प्रसूती के पास रहना चाहिये। प्रसवकाल के एक महीना पहले से बीच बीच में मेसमेराइज्ज करके प्रसूती को सिद्ध अपने आयत्त कर रखे। मेस-मेराइज करते समय कभी कभी प्रसूती जोर से चिल्ला उठे तो इससे डरना हरगिज नहीं चाहिये बल्कि इससे कार्य्य में सहायता होती है।

दूर मेसमेरिजम।

अर्थात्

दूर देश से मेसमेराइज द्वारा रोग निवारण।

इसको बहुत कुछ फेनामिनल अर्थात् अलौकिक कार्य्यों में समझना उचित है लेकिन रोग के इलाज में भी यह अक्सर जरूरत की चीज होती है इस कारण इसका जितना भाग इलाज में दर-कार होता है उसको यहाँ बतला देना उचित समझ कर लिखा जाता है। मान लिया जाय कि साधक बम्बई में है उसी समय उसका एक रोगी तीर्थ करने बनारस मे पड़ा है। तीर्थ धाम से तार आया साधक के पास कि रोगी की तकलीफ़ कल्ह रात को बहुत बढ़ गयी रात भर उसे नींद नहीं आयी। उसी दिन साधक को रोगी को मेसमेराइज्ज करने का अनुरोध हुआ।

उस समय सिद्ध को चाहिये कि एक कौच या पलङ्ग पर या

इसी तरह की सुविधा जनक सेज पर रोगी की प्रति मूर्त्ति कल्पना,* करके उसके ऊपर क्यूरेटिव लम्बा पास देना चाहिये। और इच्छा करना चाहिये कि रोगी को मेसमेरिक निद्रा आवे और उसकी तकलीफ़ दूर हो जाय। कोई कोई मेसमेराइजर कहते हैं कि सिद्ध को आँखें मूँद कर इस ऊपर लिखे पास को देने की बात जरूरी बतलाते हैं। कोई कहते हैं कि सामने एक आईना रख कर उसमें अपने प्रतिविम्ब की आँख पर इकटक देखना चाहिये। तात्पर्य्य यह कि जिनको जिस तरह सुविधा हो वह वैसी ही क्रिया कर सकते हैं। जितनी बार इस तरह से मेसमेराइज्ज किया जायगा उसी एक ही मेज पर पास देना होगा। इसमें कुछ भी किसी तरह का खटका नहीं है। जरूरत पड़ने पर इसी तरह से ही मेस-मेराइज्ज भी कर सकते हैं। यहाँ यह बात याद रखने की है कि जिस रोगी को पहले आयत्त नही कर चुके हैं उसको इस विधि से दूर देश से मेसमेराइज्ज करना बहुत ही दुःसाध्य है।

मन का भाव बदल कर या विश्वास करा कर रोग दूर करना

यह भी फेनामिनल में ही है लेकिन इसकी मदद से अनेक अवसर पर अनेक प्रकार के रोगी अच्छे हो जाते हैं इस कारण रोग चिकित्सा में जितना यह जरूरी है वही यहाँ लिखा जाता है।

जाहिर या अप्रत्यक्ष भाव से आज्ञा या अनुनय द्वारा लिख-कर या प्रलोभन दिखाकर अथवा उदाहरण से रोगी के मन से उसके रोग का भाव चिन्ता या विश्वास एकदम दूर कर देने को मन परिवर्त्तन कहते हैं। इस तरह के मन परिवर्त्तन से बहु-

---

* घर के फर्श (Floor) पर रोगी की प्रतिमूर्त्ति खड़िया मिट्टी से बनाकर उसी पर एकटक देखकर भी काम हो सकता है या रोगी के बाल पर या पहनने के कपड़े का कोई अंश लेकर भी कोई कोई मेसमेराइज करते हैं।

तेरे स्वाभाविक और मानसिक पीड़ा वाले रोगी आरोग्य होते देखे गये हैं। रोगी के मन को आयत्त करके किस तरह परिवर्त्तन किया जाता है यहाँ उदाहरण से बतलाया जाता है।

१—मान लें कि एक आदमी को शराब पीने का बहुत बड़ा अभ्यास है यहाँ तक कि वह उसी में लीन रहता है। ऐसा उदाहरण हमको उस समय मिला था जब हम पच्चीस वर्ष की अवस्था मे एक राजा के यहाँ हिन्दी पत्र सम्पादक का काम करते थे। हमने देखा कि वह दिन भर सोते रहते थे जब सन्ध्या को जागे तब शराब के सिवाय और कुछ नहीं पीना चाहते थे। इसीमे उनकी अन्त मे लकवा से मृत्यु हो गयी लेकिन उनका यह बुरा अभ्यास जीते जी नहीं छूटा। इस बुरे अभ्यास को दूर करने के लिये पहिले रोगी को रोज मेसमेराइज करके आयत्त करना होगा जब रोगी अच्छी तरह आयत्त वा इच्छाधीन हो जाय तब बारी २ से शराब के बदले बीयर, फिर बीयर के बदले लेमनेड, लेमनेड के बदले काफी, काफ़ी के बदले चाय। चाय के बदले दूध और अन्त को दूध के बदले पानी का वादा करा लेना होगा। जब रोगी मेसमेरिक शक्ति में अधीन रहेगा तब तरह २ के दृष्टान्त देकर शराब पीने के दोष उसके मनमे विठाकर इच्छा शक्ति के प्रभाव से उसके मन पर एक अद्भुत क्रिया उत्पन्न कर देना होगा जिससे वह फिर शराब पीवे तो उसमे अति विकट कटु स्वाद अथवा अति असह्य दुर्गन्ध अनुभव करे इसी तरह क्रमशः उसके मन का भाव और साथ ही स्वभाव बदल कर मद्पान की लालसा एक दम दूर हो जायगी।

२—मूर्च्छा—हिस्ट्रिकल, कनवल्षिक अथवा और किसी तरह की सामयिक (Periodical) मूर्च्छा—अगर सुविधा हो तो मूर्च्छा होने के कुछ समय पहिले ही रोगी को मेसमेराज करना

चाहिये और मूर्च्छा का समय बीत जाने तक बल्कि उसके बाद भी एक घंटे तक उसको उसी निद्रा में रहने देना चाहिये। इस तरह करने से रोगी का मूर्च्छाकाल निद्रा में ही बीत जायगा। अगर ऐसा सुयोग नहीं हो तो और किसी समय रोगी को मेसमेरिक निद्रा लाकर उसे बिलकुल आयत्ताधीन करके ऐसा आदेश देना होगा कि वह अपने मूर्च्छा होने के समय से एक घंटा पहले निद्रित होवे और मूर्च्छा भङ्ग होने के समय के एक घंटे बाद तक निद्रित दशा में ही निकल जाय। इतने समय तक निद्रित रहने को आदेश करना होगा। इससे यह लाभ होगा कि रोगी को अब एक घंटा या इतने समय बाद मेरी मूर्च्छा होगी यह भावना करने का अवसर जाता रहेगा। इसका परिणाम यह होगा कि उसका रोग जड़ मूल से दूर हो जायगा।

इसी तरह या जरूरत पड़ने पर और उपायों से रोगी के मन पर यत्न करके वक्रदृष्टि, तोतलाना, स्नायूशूल, मानसिक उत्तेजना जनित मूर्च्छा, अधिक धूम्रपान का अभ्यास, काम में मन न लगाना, सदा रोग की आशंका करना, अतिरिक्त शोक, वा आनन्द तथा नैराश्य वा हिंसा, धन हानि से अशान्ति, अनिद्रा स्वप्न में डरना, इत्यादि बहुतेरे मानसिक और शारीरिक रोग दूर किये जा सकते हैं।

फ्रेनो मेसमेरिजम

Phreno Mesmerism

दूर मेसमेरिजम और मन परिवर्त्तन की तरह यह भी ऊँचे दरजे के मेसमेरिजम का अङ्ग है लेकिन इसमें पारदर्शी होने के लिये मेसमेरिजम के सिवाय और एक विद्या सीखने की जरूरत है उसका नाम है फ्रेनालजी (Phrenology) अर्थात् शिरः सामुद्रिक वा शिरोविज्ञान। मेसमेरिजम और फ्रेनालजी इन दोनों

विद्याओं मे पारदर्शी हुए बिना फ्रेनो मेसमेराइजर नहीं हुआ जा सकता। इस पुस्तक मे फ्रेनालजी की आलोचना प्रसङ्ग बाहर होने पर भी जिनको इस विद्या में अधिकार है उनको रोगों के इलाज में सुविधा होने के विचार से इसका कुछ संक्षेप वर्णन यहाँ दिया जाता है।

फ्रेनालजी विद्या की चर्चा द्वारा मस्तिष्क के भिन्न भिन्न अंशो का परिचय और उनके संस्थान के विषय मे ज्ञान लाभ करके मेसमेरिक शक्ति के प्रभाव से उन अंशो की शक्ति को उद्दी-पन करने का नाम फ्रेनो मेसमेरिजम है। इस प्रक्रिया से बहुतेरे स्नायवीय और मानसिक रोग दूर किये जा सकते हैं। मनुष्य के मस्तिष्कि के एक एक अंश एक एक भाव के आधार स्वरूप हैं और इन भावो का पूर्ण विकाश करना ही इनकी स्वाभाविक शक्ति या कार्य्य है। अतएव इनके किसी एक अंश की शक्ति के घटने बढ़ने से उनसे सम्बन्ध रखने वाले भाव के विकाश में भी कमी बेशी हुआ करती है। यही मनुष्य के रोग हैं। और जरूरत के अनुसार उन भावो के पूर्ण विकाश करने या सामञ्जस्य कर सकने से ही वह रोग दूर होते हैं। जिस भाव या जिस शक्ति का उद्दीपन वा सामञ्जस्य करना है। रोगी के मस्तिष्क के उस निर्दिष्ट अंश पर एक उँगली रखकर या रोगी अधिक अभिभाव्य (अधीन) होते उसको ओर उंगली करके ही अविचलित इच्छा के साथ मेसमेरिक शक्ति चलाना चाहिये। इसी क्रिया द्वारा पात्र के मन में नाना प्रकार के भावोदय और उनके द्वारा उसीके अनुसार कार्य्य सम्पादन कराकर तरह तरह के अलौकिक कार्य किये जा सकते है।

क्रिया के अन्त मे पात्र के माथे और आँखों पर कई बार पास देकर उसको कुछ मिनट के लिये निद्रित करके पीछे दस

बारह क्यूरेटिव पास माथे से छाती तक और दोनों भुजाओं के अन्तिम भाग तक और कुछ सिर से पाँव तक लम्बा पास देकर अन्त को निवर्तक पास देना चाहिये।

दूसरा भाग समाप्त।

मोहिनी विद्या

अर्थात्
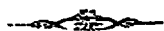
मेसमेरिजम

तीसरा भाग

फेनामिनल मेसमेरिजम

मानसिक और शारीरिक दोनों की एकत्र अथवा अलग अलग क्रिया द्वारा मेसमेरिक शक्ति विकशित होती है।

मानसिक क्रिया द्वारा इच्छाशक्ति का प्रयोग और शारीरिक क्रिया द्वारा जीव देह की तड़ित धारा का प्रवाहित करना तथा दोनो की सम्मिलित क्रिया द्वारा व्यक्त वा अव्यक्त इच्छाशक्ति की सहायता से वशीभूत करने की क्रिया की जाती है। इसी तरह इच्छाशक्ति की सहायता से कोई खास मतलब या निश्चित अभिप्राय पूरा करने के लिये अपने शरीर से बिजली स्रोत बहा कर दूसरे प्राणी को विलकुल वश में कर सकने से ही मेसमेरिक शक्ति का पूर्ण विकाश होता है।

क्रिया साधक अर्थात् सिद्ध को सदा साहस, मन स्थिर करने की विशेष क्षमता और शक्तिवान मेग्नेटिक दृष्टि (Magnetic Gage) होना एक दम जरूरी है। अलौकिक कार्य के वास्ते इनमें से पिछली दो शक्तियाँ तो जरूर ही चाहिये।

मेग्नेटिक दृष्टि साधन की विधि बतला दी गयी है। मेसमेरिक शक्ति बढ़ाने और इस विद्या मे सफलता प्राप्त करने के लिये सब तरह के उत्तेजक वा मादक और रजोगुणी आहार एक दम त्याग देना चाहिये। अनियमित अपरिमित आहार और जल दोनों छोड़ देना होगा। मन को अधिक शोक, दुःख या आनन्द के वश करके चञ्चल होने से बचाना होगा। सदा मन स्थिर और अपने वश में रखना होगा। अपना मन वश में किये बिना कोई दूसरे का मन वश में नहीं कर सकता यह मूल मंत्र मेसमेराइजर को पल भर भी भूलने की वस्तु नहीं है।

अपनी शक्ति पर पूरा भरोसा रखना पहला काम है। इसमे जितना ही सन्देह या अविश्वास मनमें जगह पावेंगे ठीक उसी मात्रा मे मेसमेरिक शक्ति के विकास में हीनता आवेगी। इसको निश्चय जानना चाहिये।

दृष्टि साधना

बहुत देर तक एकाग्र भाव से एक ही चीज पर बिना पलक गिराये टक लगाये ताकने का अभ्यास ही दृष्टि साधना है। सबके सामने अलौकिक कार्य कर दिखाने के लिये पहले दृष्टि साधना करना ही मुख्य और जरूरी है। पहले बतला आये हैं कि किसी को मेसमेराइज करके अपने अधीन करने के लिये उसको मेस-मेरिक निद्रा में लाना होता है। लेकिन साधक की एकाग्र दृष्टि से भी अभिभाव्य प्राणी को उसी तरह मेसमेराइज या आयत्त किया जा सकता है। अद्भुत कार्य्य करने के वास्ते यही उपाय सबसे सुविधा का और सुगमता से करने के योग्य है। और यह शक्ति दृष्टि साधना से ही हो सकती है। इस दृष्टि साधना की विधि यो हैः—

एक सफेद कागज चौकोर जो एक हाथ लम्बा और उतना ही चौड़ा हो लेकर बीच में एक रुपये भर काली स्याही से (ब्लू ब्लाक से नहीं) गोल निशान बनाकर सामने लटका देना चाहिये और ऐसा हो कि हवा से हिले डुले नहीं। एकान्त और शान्त स्थान में खूब सबेरे सोते से उठते ही प्रातः कार्य से निवृत होकर हाथ मुँह धोकर आँख, कनपटी, कन्धा, छाती घुठना और पैर अच्छी तरह निर्मल जल से धौत करके आसन पर बैठ जाना चाहिये। बिना पलक गिराये वह दाग इकटक दृष्टि से बराबर देखना चाहिये। दृष्टि या शरीर का कोई अङ्ग हिलने नही पावे। इसको दो मिनट, पाँच मिनट, दस, पन्द्रह, आधा घंटा और घंटा भर या कुछ अधिक हो सके तो और भी देखने का अभ्यास करना चाहिये। इस साधना से आँख के स्नायु बलवान होंगे। दृष्टि स्थिर होगी, मस्तिष्क का बल भी बढ़ेगा। जिन स्त्रियो को हिस्टिरिया का फिट हुआ करता है उनको इस साधन से बहुत लाभ होगा। और धीरे धीरे यह रोग इस साधन से जड़मूल से दूर हो जायगा।

यह साधन कागज पर के दाग से अथवा काँच की बनो सुन्दर आँख से या कागज पर ही बने हुए सुन्दर नेत्र से भी हो सकता है।*

---

* तंत्र शास्त्र में मेसमेरिजम की बहुतेरी क्रियाओं के उपदेश भरे पड़े हैं लेकिन उनके साथ में मंत्र शक्ति का योग देकर उन्हे और बलवान बना दिया गया है। आजकल की नयी रोशनी के शिक्षित मंत्र की बात सुनते ही मुस्की छोड़ने लगेंगे और कहेंगे कि कुसस्कार का ढोंग अब बताने लगा। लेकिन ठंढे दिल से गम्भीर होकर विचारेंगे तो यह बिलकुल सजेशन ही होता है। जो लोग विशेष रीति से ऐसे सजेशन के कार्य्य और महत्व जानते और

आइने में अपनी आँख के प्रतिबिम्ब पर भी यह साधन किया जा सकता है। लेकिन इस तरह आइने में अभ्यास करने से किसी किसी का अनिष्ट भी हो जाने का खतरा रहता है *

तंत्र शास्त्र में ऐसी दृष्टि साधना के लिये चिराग़ की उज्वल लव पर इकटक ताक कर अभ्यास करने की व्यवस्था है। लेकिन हमारी राय में पहले बतलाये उपाय से आँखों का कुछ अभ्यास हो जाय तब यह उपाय काम में लाना उचित है। क्योंकि पहले ही दीप शिखा की लव पर अभ्यास करने से आँखों के स्वास्थ्य की हानि होना सम्भव है। लेकिन साथ ही यह कह देना जरूर है कि चिराग़ की लव पर नज़र स्थिर करने के अभ्यास से आँखो की जैसी पुष्टि होगी वैसी ऊपर लिखे उपायों से नहीं हो सकती।

इसके सिवाय घरके पले हुए कुत्ते या बिल्ली की आँख पर भी इकटक ताकने का अभ्यास करना अच्छा होता है। लेकिन इसमें एकाग्रता ही मुख्य है।

इस साधन के समय इच्छाशक्ति को बिलकुल पक्केतौर से एकाग्र कर लेना ही सफलता की कुञ्जी है। इस साधना में मुँह

प्रत्यक्ष गुण सत्य से अनुभव करते हैं वह इन बातों पर विश्वास न करना ही कुसंस्कार है ऐसा कहने में हमसे सहमत होंगे।

* मेसमेरिजम की साधना में कुछ आगे बढ़ने पर इसका भेद समझ में आवेगा।

हठयोग शास्त्र में चित्त की एकाग्रता के लिये शक्ति प्राप्त करने की गरज से पूरक कुम्भक, रेचक और बाह्य कुम्भक द्वारा प्राणायाम करने का उपदेश है किन्तु राजयोग शास्त्र के उपदेशानुसार तो चित्त की एकाग्रता के अभ्यास द्वारा आप ही आप श्वास प्रश्वास की अविच्छेद गति निष्पन्न होकर प्राणायाम सिद्ध हुआ करता है।

बन्द रख कर नाक से साँस लेना और छोड़ना होता है। इस साधन में लीन होने पर मालूम भी नहीं होगा कि साँस कहाँ से ली या फेंकी जाती है। इस विषय मे इससे और अधिक नहीं समझाया जा सकता जिनको समझने की क्षमता होगी वह ऊपर दिये अभ्यास से ही बहुत फल प्राप्त कर सकेंगे ठीक बतलाये हुए उपाय से अभ्यास कर सकने पर भी अपनी अपनी प्रकृति के अनुसार न्यूनाधिक अर्थात् जिनमें जिस परिमाण से उन्नति का बीज है उसी परिमाण से उन्नत हो सकते हैं।

इस तरह की साधना द्वारा दृष्टि सिद्धि होने पर साधक अगर इच्छा शक्ति को प्रबल करके किसी अभिभाव्य प्राणी की आँखों पर आँख इकटक लगा कर देखे। अर्थात् दोनों एक दूसरे को परस्पर इकटक दृष्टि से देखें और चेष्टा करके भी पात्र अपनी आँखें न फिरा सके तो उसको आकृष्ट चक्षु कहते हैं। उस तरह जो आकृष्ट चक्षु होता है वह साधक के सम्पूर्ण आयत्त हो जाता है।*

दृष्टि साधना का उज्ज्वल चमत्कार

हम यहाँ दृष्टि साधना का एक उज्ज्वल चमत्कार उदाहरण की भाँति बतलाना चाहते हैं। चिराग पर लव साधन मे बहुत ही शक्ति है हमारे एक मित्र (जो अब संसार में नहीं हैं सन् १९११ ई० मे उनका देहावसान हो गया उन्हो) ने इस का साधन करके अनुपम शक्ति लाभ किया था।

वह अपने एक एकान्त कमरे मे अकेले बैठ कर चिराग की लव पर दृष्टि शक्ति की साधना करते थे। पहले सामने आसन

---

* मेसमेरिजम साधना में सफलता पाकर और आगे बढ़ने पर योगका सन्मुख द्वार लाँघ सकते हैं। "Mesmerism is the key of occult science"

पर बैठ कर उन्होंने चिराग की लव पर टकटकी लगायी और धीरे धीरे बढ़ाते बढ़ाते जब एक घन्टे तक वह बिना पलक गिराये लव पर ताकने में समर्थ हो चुके तब उन्होंने आँखें बन्द कर दीं और देखने लगे।

आखें बन्द करने पर भी उनको चिराग का लव उसी तरह दिखलाई देने लगा। वहीं पर बैठे बैठे वह विचरण करने लगे। पहले दिन अपनी कोठरी के बाहर निकले। वह कोठरी उनकी उनके चार बीघे के फलदार बगीचे के एकान्त स्थान मे थी। बगीचे में शरीफा और अमरूद के पेड़ फल से लदे पड़े थे। दो कूएँ भी बगीचे को सींचने के लिये थे। जिन पर पुरवट चला करती थी। और बहुत से आदमी उनके यहाँ दवा कूटने और तैल्यादि औषधियाँ तैयार करने का काम करते थे।

कोठरी से बाहर बगीचे मे भ्रमण करके जो कुछ उन्होंने आसन पर बैठे देखा उसकी जब सत्यता पायी। तब उनका मन बढ़ा। और बगीचे से बाहर सड़क पर जाने लगे। होते होते। शहर के भीतर पहुँचे। पहली उम्र में वह बड़े रसिया थे जिस समय उन्होंने यह अभ्यास शुरू किया उस समय उनकी अवस्था ५० वर्ष हो चुकी थी। चित्तवृत्ति चञ्चलता छोड़कर शान्त हो चुकी थी। रसियापन से मन भरकर अब उनकी तृप्ति हो गयी थी। लेकिन मन से विनोद की बात नहीं गयी थी। रोज इस तरह आसन पर बैठे बैठे रास्ता चलने का अभ्यास बढ़ाते गये। और होते होते एक दिन चौक तक पहुँचे। जहाँ किसी परिचित रण्डी के कोठे के सामने सड़क पर उनके एक परिचित युवक खड़े कोठे पर की खड़ी वेश्या से बातें कर रहे थे। कल्पना से ही वहाँ पहुँच कर उनकी बातें सुनी और फिर बगीचे को चुपचाप लौट गये।

दूसरे दिन जब वह मित्र मिले और कोठे वाली की बातें साधक मित्र ने पूछी और उनको वार्त्तालाप सुनाया तब युवक मित्र आस्मान से गिरे। अपनी सफलता से साधक मित्र का उत्साह बहुत बढ़ा लेकिन उनका मन इस काम मे सन्मार्ग पर नहीं रहा और जीते जी ही उस साधन से च्युत हो गये थे। अन्त को पाँव मे एक फोड़ा ऐसा हुआ कि कई अपरेशन पर बहुत उपाय करने के पश्चात भी घाव नही भरा और उसीसे उनकी मृत्यु भी हो गयी ।

भाव सञ्चार वा मन की बात कहना ।

(Brains Picture or Thought Readig)

क्रिया साधक मन में जिस वस्तु या घटना की कल्पना करे उसका आयत्ताधीन प्राणी उसी वस्तु वा घटना को वैसा ही दिखा सके तो इस क्षमता को भाव सञ्चार कहते हैं बहुतों को मानसिक नेत्रो से देखने की क्षमता होती है। वह किसी घटना का वर्णन करते समय कहते हैं –अब भी हम आँख के सामने साफ़ देखते हैं। सब घटना सामने नाच रही है। बात यह कि घटना के समय उनके मस्तिष्क मे जो प्रतिबिम्ब पड़ता है। वर्णन करने के समय उसीका पूर्ण विकाश हुआ करता है। अगर उस घटना का कोई अंश उनको भूल जाय तो कुछ सोचने या जरा ख्याल करके चिन्तन करने से उसे याद कर सकते हैं।

पहले कुछ स्थानो का मन मे बार बार ध्यान करना चाहिये। जैसे अपने रहने की जगह बैठक की या मकान की कोई कोठरी या कोई परिचित स्थान इत्यादि। अब उन स्थानो में जहाँ जो चीज है या जहाँ जिस तरह लोग काम काज करते या चलते फिरते हैं वह सब ठीक ठीक मन मे याद करके बाद को सब

जगहों की एक एक वस्तु अलग अलग याद करने की कोशिश करना चाहिये।

इसी तरह जिन जगहों मे सदा जाते आते हैं या विशेष परिचित स्थान जब अच्छी तरह ध्यान में आ जायँ तब ध्यान करने से ही सब आँखों के सामने प्रकट दिखाई देने लगेंगे। उस समय क्रम से उन चीजो का ध्यान करने की चेष्टा करना चाहिये जिनका कम परिचय ध्यान में है उनको देखने लगेंगे। अब इस तरह ज्यों ज्यों आगे बढ़ेंगे त्यों त्यों सब चीजें स्पष्ट दिखाई देने लगेंगी। फिर उन स्थानों मे जो सुख या दुःख का अनुभव किया हो या करते हो उनका ठीक ठीक ध्यान करना चाहिये जैसे किसी जगह से एक तरह की दुर्गन्ध सदा या अक्सर आया करती है उस जगह को मन मे प्रत्यक्ष देखना होगा तब ठीक ऐसी धारणा होना चाहिये कि वही दुर्गन्ध सचमुच नाक मे लग रही है। या कही किसी जगह बँसवार है वहाँ हवा के झोकें से बाँसों की मरमराहट और पत्तों की फरफराहट सुनाई देती है उसको ध्यान में देखते समय वह सब शब्द भी सुनाई देने लगेंगे जो सदा वहाँ हुआ करते हैं। बिलकुल सुनसान जगह में रात के जहाँ चारों ओर अँधेरा ही अँधेरा रहता है और सोते समय जब मस्तिष्क बिलकुल शान्त रहता है ऐसे ही समय इसी दशा मे पहले इसकी साधना करना चाहिये। लेकिन कुछ दिनों तक लगातार इस तरह का अभ्यास करने के बाद फिर तो कैसा ही गड़बड़ और गोलमाल हो वहाँ मनमे ध्यान करते ही वह विषय मूर्त्तिमान होकर मानसिक चक्षु के सामने आ जायगा।

दृष्टि साधना मे निपुणता प्राप्त कर चुकने पर ऊपर बतलायी रीति से ही भाव सञ्चार करने की चेष्टा करके केवल इच्छा शक्ति से अपने मानस पट पर अङ्कित चित्रों को दूसरे की आँखो

के सामने उद्भासित कर सकेंगे। पहले उस चित्र को अपनी आँखो के सामने जीवन्त रूप से उद्भासित करके पीछे जिसके मन में उस चित्र का भाव सञ्चार करने की इच्छा हो उसकी आँखों पर अपनी नजर लगाकर एक कलम पेंसिल या उँगली ही से उस आदमी के मस्तिष्क या आँखों के सामने सञ्चारी पास देना चाहिये* ।

सञ्चारी पास का मतलब है साधक के मन का भाव पात्र की आँखो से अपनी आँखो को इकटक मिलाकर जिह्वा द्वारा जब अपना मनोभाव जाहिर करते रहेंगे तब उसी समय अपने शरीर के निकट स्थान से शुरूकरके पात्र की ओर इस तरह हाथ चलाना चाहिये जैसे कोई पिसी हुई चीज मुट्ठी मुट्ठी लेकर उस पर फेंक रहे हैं। अगर कोई पात्र बहुत दिनो से तुम्हारे प्रभाव के अधीन था तो इसो तरह उसको इसी पास से अब आयत्त किया जा सकता है। ऊपर लिखे नियम से कुछ दिन लगातार अभ्यास करने से साधक अपने मन का भाव और अपनी इच्छा अपने पात्र मे विना मुँह से कहे हुए ठीक ठीक सञ्चारित करके उसीसे अपने अनुरूप कार्य करा कर सबको चमत्कृत कर सकता है।

फेनामिनल पास प्रकरण

Phenomenal Passes

दूसरे भाग मे क्यूरेटिव पास की जो बातें लिखी गयी हैं उनका जैसे रोग दूर करने के लिये व्यवहार होता है वैसे ही जरूरत पड़ने पर अलौकिक प्रदर्शन मे भी हुआ करता है। उनके

---

* जब कोई आदमी कोई बात विशेष रूप से किसी के दिल में बिठाना चाहता है तब बहुधा अपनी नावाकफियत में इसी तरह क्रिया करता है।

सिवाय और जो कुछ पास केवल अलौकिक कार्य्यों के प्रदर्शन में आवश्यक होते हैं केवल उन्हीं का यहाँ वर्णन करते हैं—

ड्राइङ्ग वा आकर्षणी पास

Drawing Pass

पात्र को अपनी ओर आकर्षित करने वा खींच लाने के लिये इन पासों का व्यवहार होता है। इसका अभ्यास दृष्टि साधना के साथ ही होता है।

जैसे सामने क्रिया पात्र खड़ा है हम उसकी ओर इकटक देख रहे हैं। जिस समय इस तरह इकटक देख रहे हैं उसी समय दृढ़ इच्छा करना चाहिये कि वह इसी टकटकी से हमारे पास चला आवे। यही भाव करके इसको कर डालने की हमारी इच्छा होना चाहिये। हथेली पात्र की ओर करके दोनों हाथ लम्बा करके पहले दाहना फिर बायाँ हाथ धीरे धीरे और दृढ़ता के साथ अपने कन्धे तक उठा ले जाना चाहिये। इस तरह करते समय हथेली कुछ आकुञ्चित करना और बायाँ हाथ उठाने के समय दहना हाथ (जो पहले ही उठा था) उसी तरह धीरे धीरे नीचे उतार लाना चाहिये।

कुछ समय तक ऐसा ही पास देकर जब देखा जाय कि पात्र धीरे धीरे हमारी ओर आ रहा है तब हमको थोड़ा थोड़ा पीछे हटना और दूर ही से अपनी क्रिया करते जाना हमारा कर्त्तव्य है। कोई कोई पात्र बड़ी तेजी से साधक की ओर दौड़ते हैं ऐसा होवे तो पात्र के पाँव पर कई निवर्त्तक तिरछे पास देकर उसकी गतिमन्द कर देना चाहिये जिस पात्र को पहले आयत्त किया जा चुका है। वैसे ही पात्र से यह क्रिया उत्तमता से हो सकती है।

विकर्षणी पास (Repelling Pass)

पात्र को पीछे ठेल देने के लिये इस पास का व्यवहार होता है। यह आकर्षणी पास का उलटा है। पात्र के सामने खड़े होकर उसकी ओर उसके पेट से कुछ ऊपर की ओर एक मुट्ठी आटा लेकर फेकने में हाथ जिस तरह चलता है वैसा ही करना चाहिये ऐसा करते समय इच्छा शक्ति को खूब प्रबल रखकर मन में दृढ़ धारना करना होगी कि हम मानो उसको पीछे ढकेल रहे हैं। और इस काम को करने के लिये सामने की ओर जब दो एक कदम आगे बढ़ेंगे तुरत पात्र भी दो एक कदम अपने पीछे को हट जायगा। पात्र एक बार आयत्त हो जाने पर इस तरह का पास उसके सामने और पीछे दोनो तरफ से दिया जा सकता है। और पात्र अभिभाव्य (खूब अधीन) हो तो उसके अनजाने भी उसकी साधारण जाग्रदावस्था में दूर से भी यह पास काम करता है।

शक्ति सञ्चारिणी पास (Direct Pass)

यह पास पात्र के शरीर के किसी अंश पर अधिक परिमाण में मेसमेरिक शक्ति सञ्चालित करने के लिये व्यवहार किया जाता है। ऐसा पास माथे पर देने से उसको हेड पास (Head Pass) कहते हैं।

अपने लम्बमान हाथ वृत्ताकार उठाकर पात्र के जिस अङ्गपर शक्ति प्रयोग करेंगे उसी अङ्ग के समान करना होगा। और उँग-लियो को उसी की ओर फैला कर प्रगाढ़ इच्छा के साथ तड़ित शक्ति चलाते रहना होगा। तड़ित धारा स्वभावतः निम्नगामी है इस कारण पात्र के जिस अङ्ग में तड़ित प्रवाहित करना होगा। उसी से कुछ ऊपर क्रिया साधक का हाथ रहना जरूरी है।

उच्च आसन पर से साधक नीचे फर्श पर बैठे हुए तमाशा-ईयों में से किसी पात्र को इस पास से वश में करना चाहे तो उसके माथे पर पास (Head Pass) देना ही सुविधा जनक होगा। लेकिन उस अवसर पर उँगलियों को बिलकुल सीधा पात्र की ओर पसार कर नहीं कुछ टेढ़े और अलग अलग कर रखना होगा। इसी तरह शक्ति चलाकर आकर्षणी पास से उस पात्र को अपनी ओर खींच लिया जाता है।

माथे पर ऐसी शक्ति का सञ्चार करने में यह अच्छी तरह याद रखना चाहिये कि पात्र के मस्तिष्क का कोई अंश विशेष रूप से उत्तेजित नहीं होने पावे। इस अधिक उत्तेजना से आफत हो सकती है।

पात्र के जिस अङ्ग में तड़ित प्रवाहित किया जाय उस अङ्ग पर मेग्नेटिक दृष्टि रखना चाहिये और इसका बराबर ध्यान रखना चाहिये कि साधक तड़ित प्रवाह ठीक निश्चित स्थान ही पर पहुँचाता है। स्थान भ्रष्ट नहीं होता। क्योंकि वैसा होने से अभि-लषित क्रिया ही उत्पन्न करने में साधक असमर्थ नहीं होगा। बल्कि उससे क्रिया पात्र का अनिष्ट हो सकता है।

लिफटिङ्ग (Lifting) वा उत्तोलन पास।

पात्र का शरीर सुन्न या काठ बनाकर किसी अङ्ग विशेष को आकर्षणी शक्ति से उठाने में इस पास का व्यवहार होता है। मान लिया कि पात्र एक दम लकड़ी हो करके फर्श पर पड़ा है। या उसका शरीर कठिन (काठ) करके उसे दो कुर्सियों पर सुला दिया गया है और साधक उसके शरीर का एक भाग या मध्य-भाग बिना छूए हुए केवल पास द्वारा उठाना चाहता है।

पात्र का जो अङ्ग उठाना है उससे चौथाई इञ्च अन्दाज दूर

होकर अर्थात् खूब निकट साधक को एक हाथ या दोनों ले जाकर धीरे धीरे ऊपर और नीचे करना चाहिये। कई बार ऐसा करने से थोड़ी ही देर पीछे पात्र का वह अङ्ग भी ऊपर उठता और नीचे होता है। साधक का हाथ जिस तरह धीरे धीरे या तेजी से ऊपर नीचे होगा ठीक उसी तरह पात्र का शरीर भी चलेगा। ऐसा करते समय मनमे ऐसा दृढ़ भाव होना चाहिये कि इच्छा शक्ति से एक मकड़ी का जाल उठता और नीचे जाता है।

निवर्त्तक पास

(De-magnetising Pass)

निवतक पास कई तरह का होता है। उनमे से दो तो दूसरे भाग मे बतला आये हैं। यहाँ दो और बतलाते हैं।

१—पात्र के सामने खड़े होकर उसके दोनों हाथो की अनामिका और कनिष्ठिका के बीच का भाग साधक को अपने दोनों हाथो के अँगूठे से दबा रखना होगा। उसके बाद माथे के दो ओर दोनो हाथों से ऐसा करना होगा कि साधक के दोनो अँगूठे पात्र के ललाट पर भवों से थोड़ा ऊपर* अलग अलग रहें और वहाँ से दोनो अंगूठे दोनों भवो के बीच स्थान और वहाँ से क्रमशः भवों के ठीक ऊपर से होकर दोनो ओर‡ धीरे धीरे खींच ले जाकर

---

* शिरोविज्ञान के मत से वही मस्तिष्क के सूक्ष्मानुसन्धानकारी गुण (Individuality) का आधार स्थान है।

‡ शिरो विज्ञान के मत से यह मस्तिष्क के गठनज्ञान, परिमाण, निपुणता, भार निर्णय शक्ति, वर्णाभिज्ञता और प्रकृति ज्ञान (Form, size, weight colour and ordr) इन कई गुणों का आधार स्थान है। अङ्गरेजी में इन सबको Erceptive or Ans कहते हैं।

क्यूरेटिव पास देने पीछे जैसे हाथ झाड़ना होता है वैसे ही झाड़ डालना चाहिये। इस तरह तीन चार बार करके बाद को मुँह के ऊपर उलटा पास देना चाहिये। पास खींच कर माथे के ऊपर तक ले जाना चाहिये। फिर मेग्नेटिक स्वर * में गम्भीरता से पात्र को कहना होगा—"अब नींद टूट गयी तुम अब भले चङ्गे हो गये हो।" उसके बाद थोड़े से आपाद मस्तक उलटा पास देकर छोड़ देना होगा।

२—आपाद मस्तक उलटा पास अर्थात् पाँव से माथे तक उलटा पास देकर भी यह प्रक्रिया की जाती है यह पास इस तरह से होता है—

जैसे—साधक नीचे मुँह करके हथेली ऊपर या अपनी ओर और हथेली की पीठ नीचे या पात्र की ओर रख कर पात्र के पाँव से शुरू करके क्रमशः ऊपर को घुठने तक खींच ले जाना फिर घुठने से कमर, कमर से सिर के ऊपर तक ले जाना चाहिये। और हर बार पास समाप्त होने पर दोनों हाथ पंखे की तरह चला कर दो ओर को झाड़ देना चाहिये। यह सञ्चालन क्रिया पात्र के पीछे वाले भाग से करना अच्छा होता है। नहीं तो ठीक माथे की चाँद के सामने से करना चाहिये। कभी मस्तक के ऊपर से नहीं करना चाहिये। इस क्रिया से सञ्चित तड़ित शक्ति विस्तृत कर दी जाती है।

तमाशा और परीक्षा।

पात्र को निद्राभिभूत या आयत्त न करके उसके सहज ही

---

* मेग्नेमेटिक स्वर (Magnetic voice) नाभि से निकालना होता है। कंठ से जो स्वास निकलता है उससे यह अधिक काम करता है। साधना से इसका थोड़े ही दिनों में अभ्यास हो सकता है।

जाग्रदाअवस्था मे जो तमाशे दिखाये जाते है जो परीक्षा की जाती है नीचे उन्हीं के कुछ दृष्टान्त दिये जाते हैं:—

नवसिखुओ के लिये यह उपयोगी हैं और आगे मेसमेरिजम विद्या मे निपुण होने पर आप ही इसका गूढ़ भेद मालूम हो जा सकता है।

उदाहरण नं० १

किसी पात्र पर शक्ति काम करेगी या नही इसकी जाँच करना हो तो उसको दो पाँव एकत्र करके दोनो हाथ लम्बा पसार कर खड़े होने को कहना और उसके पीछे आप खड़े होकर अपने दोनो हाथ पात्र के कंधे पर कई मिनट रख कर नीचे को कमर तक पास देना। इस पास के देते समय पात्र की रीढ़ पर अपनी मेसमेरिक शक्ति को पूरे तौर से चलाना। इस तरह कई बार पास देने पर पात्र की पीठ पर, हाथ के पहुँचा के सामने, मेरुदण्ड पर उँगलियों की नोक से धीरे धीरे छू कर आकर्षणी पास द्वारा उसको आकर्षण करते रहना होगा या साधक अपने दोनो हाथ पात्र के कन्धों पर ऐसा रखे कि दोनों अंगूठे पात्र की रीढ़ के ऊपर ठीक सीध में रहें और इच्छा करना चाहिये कि पात्र साधक की ओर आकर्षित होवे अगर पात्र साधक की ओर हाथ के साथ ही साथ आकर्षित हो तो जानना चाहिये कि वह पात्र उत्तम अभिभाव्य है। उसको मेसमेराइज करके तरह तरह के तमाशे दिखाये जा सकते हैं।

उदाहरण नं० २

किसी आदमी को पहले उदाहरण के समान खड़ा कराकर अपनी हथेली के नीचे उसकी हथेली रखना चाहिये। अपनी हथेली के नीचे पात्र की हथेली बिलकुल ठीक सटा मिलाकर

रखना चाहिये। इसके बाद दृढ़ इच्छा करना चाहिये कि साधक की हथेली से पात्र की हथेली ऐसा सट कर जुड़ जाय कि पात्र कोशिश करके भी हटा न सके। इस तरह सब क्रिया ठीक करके गम्भीर मेग्नेटिक स्वर में कहना चाहिये—"अब आप अपना हाथ हटा नहीं सकते!" पात्र तरह तरह की कोशिश करके भी सफल नहीं हो सकेगा। देखने वाले यह शक्ति देखकर आनन्दित होंगे। इसको फैसिनेशन वा मुग्धकरण कहते हैं।

उदाहरण नं० ३

किसी आदमी को इसी तरह खड़ा कराकर उसका दाहिना हाथ अपने बायें हाथ के ऊपर रखना चाहिये। और परस्पर हाथ सट जाने के लिये उसकी बाँह और उङ्गलियों तक कुछ पास देना चाहिये। बाद अपने दाहने हाथ से पात्र के सामने की ओर घुठने तक कुछ पास देकर उसके शरीर और दोनों पाँव को मेसमेरिक शक्ति से अभिभूत करना चाहिये। इसके बाद वह घुठने टेक कर बैठ जाय ऐसी इच्छा करके पात्र के घुठने के निकट आकर्षणी पास देने पर ही देखने वालों को हँसाकर पात्र घुठने गड़ा कर (नील डाउन) बैठ जायगा। और खुद पात्र भी बहुत हँसेगा।

उदाहरण नं० ४

किसी पात्र को एक कुर्सी पर बिठा कर उसका एक पाँव (बायाँ या दाहना) सामने एक और कुर्सी के ऊपर रखना। कुर्सी वाले पाँव पर कई पास देकर मेसमेरिक शक्ति द्वारा उसे आयत्त करके आकर्षणी पास से ऊपर उठा लेना। एक बार जब पाँव ऊपर उठ जायगा तब जब तक साधक उसकी जाँघ से पादाग्र भाग तक धीरे धीरे करतलाघात करके—"अब तुम अपना पाँव

नीचे उतार सकते हो।" ऐसा हुक्म नहीं देगा तब तक वह हजार कोशिश करके भी पाँव नीचे नहीं उतार सकेगा।

हिप्नोटिजम।

मेसमेरिजम मे पात्र को पास देकर निद्रागत किया जाता है लेकिन हिप्नोटिजम मे सब चमत्कार दृढ़ इच्छाशक्ति के द्वारा होते हैं लेकिन हिप्नोटिजम तभी सफल होता है जब मनुष्य अपने ऊपर पूरा प्रभुत्व कर लेता है। अर्थात् आत्म विश्वास जिसको सोलहो आने हो जाता है वही हिप्नोटिजम का अधिकारी होता है।

पहला साधन

पात्र को आज्ञा देकर सुलाना है तो उसे एक चौकी पर बिठा कर कहना चाहिये कि वह अपने मन से सब चिन्ता दूर कर दे। साथ ही कोई दूसरा विचार उसके भीतर न रहे। केवल उसको यही भावना और चिन्ता उस समय होना चाहिये कि उसको नींद आ रही है और वह तुरत सो जायगा।

ऐसा करके दृढ़ इच्छा साधक की हो तो कुछ मिनटो में ही उसकी पलकें नीचे ढुलकने लगेंगी और नींद उस पर चढ़ बैठेगी। इतनी निद्रा सवार हो जायगी कि वह बहुत कोशिश करके भी अपनी आँखें नही खोल सकेगा।

जब पात्र की यह दशा हो जाय तब उससे पूछना चाहिये कि तुमको बुलबुल का चहकना सुनाई देता है। तुम चिड़ियाखाने मे पहुँच गये हो। उसको साधक की बातों पर पूरा विश्वास हो जाता है इस कारण हाँ कह कर ही जवाब देगा। इतना ही नही चाहे जितने सवाल साधक उससे करे सब साधक की इच्छानुसार ही जवाब देगा।

साधक उससे पूछे कि तुम नरक में गिर पड़े हो तो वह हाँ कहेगा तुम बमपुलिस में हो तो हाँ कहेगा तुम्हारी नाक में दुर्गंध भर गई है पूछने पर भी वह हाँ कहेगा उसके हाथ में कलम देकर. साधक कहे तुम्हारे हाथ में बिल्ली का बच्चा है तो वह जवाब में हाँ कहेगा। इस तरह वह हिप्नोटाइज हो चुका है कि साधक जो कहे उसी में हाँ कहता रहेगा। जब उसको "अच्छा अब हो चुका—एक दो तीन उठो! जागो और आँखें खोलो" कहोगे तब जाग उठेगा।

दूसरा साधन

पात्र को एक चौड़े बेञ्च पर बिठाकर आँख से आँख मिलाना। इस तरह कि एक की दृष्टि दूसरे की आँखों में गड़ जाय। अब दस मिनट पर अपने हाथ से उसकी आँखें साधक बन्द कर दे। और कहे कि आँखें बन्द किये ही नीचे को देखता रहे।

जब इस तरह दस मिनट और बीत जाय तब धीरे से लेकिन साफ़ साधक कहने लगे—"अब तुम्हारी आँखें बन्द हो चुकी हैं। इन्हें कोशिश करके भी तुम खोल नहीं सकते। अब वह बिलकुल बन्द हो गयी हैं तुम चाहे जितनी कोशिश करो खुलने की नहीं!"

इसके बाद वह कितना ही करे आँखें खोल नहीं सकेगा। जब यह हो चुके तब पात्र के माथे पर हाथ रखकर कहना चाहिये—"अब तुम्हारी आँख खुलेगी। कोशिश करके देख लो।" इतना कहकर साधक अपना हाथ हटा ले और उंगलियों को चटकावे और फिर कहे—"अब खबरदार हो जाव! आँखें खोलो जल्दी करो।" अब पात्र इच्छा करते ही आँखें खोल सकेगा।

तीसरा साधन

पात्र की ज़बान बन्द करना ।

पात्र को इस तरह खड़ा करना चाहिये कि उसकी पीठ दर्शकों की ओर हो और मुँह साधक की ओर ! अब उसकी दोनों कनपटी पर साधक को अपने दोनों हाथ रखकर अपना सिर उसके सिर के निकट ले जाना उसकी आँखो से अपनी आँखें मिलाना और कहना कि अपना पूरा ध्यान उस की ओर लगाये ।

जब यह सब ठीक हो जाय तब साधक मेग्नेटिक स्वर में कहे—"अब तुम्हारी जबान बन्द हो गयी । कितनाही करो अब जीभ नहीं खोल सकते । तुमको अब अपना नाम भी याद नहीं आवेगा । अब तुम अपना नाम भी नहीं बतला सकते न बोल सकते हो ।" यही कहकर साधक दोनों हाथ कनपटी पर से हटा लेवे । फिर कितनाही कहा जाय अथवा नाम बतलाने को हुक्म दिया जाय । वह बहुत कोशिश करके थक जायगा लेकिन बोल नहीं सकेगा न नाम बतला सकेगा ।

जब वह इस तरह बोलने और नाम बतलाने में असमर्थ हो जाय तब साधक अपना हाथ पात्र के मस्तक पर रखकर कहे—"अब तुम्हारी जबान खुल गयी । नाम भी याद आ गया ।" यही कहकर साधक अपना हाथ हटा लेवे और कहे—"खबरदार हो जाव ! जबान खोलो । अपना नाम बतलाओ ।"

इतना सुनते ही वह सावधान होकर जबान खोलेगा और अपना नाम बतलाने लगेगा ।

चिराग़ बुझाना

यह साधन रात के शान्त समय में करना चाहिये । एकान्त

कोठरी में चिराग़ जलाकर उससे सवा हाथ के अन्तर पर बैठना और अपनी आँखों की टकटकी से उसे बुझाने की चेष्टा करना चाहिये। इसकी सिद्धि सात दिन के साधन में होगी अगर हर रोज पाव घंटे तक इस साधन को एकाग्र होकर किया जाय तो जरूर सातवें दिन पूरा हो जायगा और चिराग़ बुझ जायगा।

जिसकी दृष्टि इस तरह चिराग़ बुझाने मे समर्थ हो चुकी वह जहाँ पर डाली जाय अपना मनोर्थ पूरा करके छोड़ती है। इसी श्रेणी की शक्ति वाले नेत्र के अधिकारी वह अमेरिकन थे जो हमारे मित्र जादूगर प्रोफेसर शर्मा को मिले थे।

इस दृष्टि से बड़े बड़े काम हो सकते हैं। मालिक अधिकारियों से इच्छानुसार काम लिया जा सकता है। बड़े बड़े बहादुर और पहलवानो पर अपना प्रभाव डाला जा सकता है। शत्रुओं को ताककर ही भगाया जा सकता है।

जादू का आईना

इसको करामाती शीशा, त्रिकालज्ञ आईना, जादू की अङ्गूठी आदि नामों से विज्ञापन देकर लोग रुपयो में बेचते हैं। इसको हम भी उन्हीं की तरह जादू का आईना कहकर बनाने की विधि बतला रहे हैं। चुम्बक पत्थर और लाह बराबर भाग लेकर पहले चपड़ा किसी बर्त्तन (लोहे के सिवाय और धातु) मे आग पर गरम करे उसमे पिसा हुआ चुम्बक पत्थर मिला देवे। जब दोनों अच्छी तरह एक दिल हो जायँ तब थोड़ा सा (सरसों के तेल से तैयार किया हुआ) कालिख मिलाकर किसी गोल डिब्बी में जो लोहे की न हो जर्मन सिलवर या पीतल आदि की हो उसे ढाल देना उस डिब्बी की गहराई चौथाई या तिहाई इञ्च होवे। उसमें भरकर ऊपर चिकनी चीज या आईने से बराबर कर देना। बस वह आईना तैयार हो गया।

अब इसका व्यवहार कई तरह से किया जाता है।

नभ मण्डल स्वच्छ निवद्र हो, जहाँ अन्धेरा हो न बहुत प्रकाश हो। कुछ खमखम या कोलाहल न हो वहाँ स्नान करके सावधान और शान्त चित्त से आसन पर बैठ जाना। उस आईने पर दो एक बूँद गुलरोगन या चमेली का तेल टपका कर फैला देवे पीछे उसमे टक लगा कर देखने लगना चाहिये। याद रहे कि आँखें झपें नही। बिना पलक गिराये इकटक देखते रहे।

जब इकटक देखने लगना तब समझना कि मेरा चेहरा जो पहले उसमे दिखाई देता था वह लोप हुआ जाता है। कई मिनट तक इसी तरह देखने के बाद कोई पाँच मिनट पर अजीब नजारा दिखलाई देगा।

मालूम होगा कि देखने वाला एक सुगन्धित फूलो से भरी पुष्प वाटिका मे है और चहुँ ओर से मनमोहक सुगन्धि आ रही है। बीच में सुन्दर सङ्गमर्मर का बड़ा महल है। उसके साथ ही एक बड़ा दालान है। उसमे दरबार का समां है। सामने नजर बाग पर छिड़काव हो रहा है पानी छिड़कने वाला छिड़क कर चला जायगा तब फर्राश दरी फर्श चाँदनी बिछावेगा उसके बाद आत्माओ के महाराज अपने परिषद वर्ग सहित विराजमान दीख पड़ेंगे उनको सादर नमस्कार करना चाहिये और जो कुछ पूछना हो पूछ लेवे सब सही सही उत्तर मिलेगा। जिसकी इच्छा शक्ति दृढ़ और बलवान नही जो अनस्थिर और चञ्चल स्वभाव का मनुष्य है वह इस काम को हरगिज़ न करे।

पहले यदि एक दो वा तीन बार सफलता न मिले तो निराश नहीं होना। लगातार परिश्रम और पूरी आशा सहित साधना करते जाना अन्त को अवश्य सफलता मिलेगी निश्चय है।

इससे मन का भाव मालूम होगा, चोरी या गुम हुए माल का

पता लगेगा। गतात्माओं से बातचित, परीक्षा और सिद्धि के अङ्कादि मनोर्थ पूरे होंगे। महात्माओं के दर्शन होंगे। गुप्त भेद मिलेगा। साधक की इच्छा पूरी होगी।

बालों की करामात

मनुष्य के शरीर का हाल जितना उसके बालों से मिल सकता है उतना और से नहीं मिल सकता। लेकिन याद रखना जरूरी है कि बाल अपनी वर्त्तमान अवस्था में जितना बयान अपने स्थान वाले मनुष्य का कर सकते हैं उससे बहुत अधिक काम वह अपनी असली हालत में पहुँच कर करते और मेसमेराइज्र के हाथ का प्रभावशाली अस्त्र हो जाते हैं।

विलायत के डाक्टर ग्रेगरी बीसवीं सदी के प्रसिद्ध रिकार्ड वाले मेसमेराइजर या जादूगर कहलाते हैं उन्होंने परीक्षा करके सफलता पाकर अपना अनुभव प्रकट किया है। वह हम यहाँ लिखते हैं—

बालों के विषय में उस दिन परीक्षा करके मैंने एक नया आविष्कार किया है। उस परीक्षा के परिणाम से मुझे बड़ा विस्मय और बड़ा हर्ष हुआ है। इन बालों से मनुष्य जीवन की सब बातें जानी जा सकती हैं। मैंने बालों को एक पवित्रात्मा पुरुष के हाथ मे देकर कहा—"जिसके बाल हैं उसके आचार व्यवहार का ठीक ठीक परिचय दरकार है। साथ ही उसकी आयू क्या है यह भी जानना चाहता हूँ।"

जवाब में उन्होंने बतलाया—वह स्त्री बीस वर्ष नव महीने की है। गाने बजाने में बड़ा प्रेम रखती है। सोसाइटी या मण्डली से घृणा करती है। उसके आचरण पवित्र और शुद्ध हैं व्यवहार की सच्ची है।"

इस जवाब के बाद फिर पूछा—"इतना बतला गये लेकिन नाम नहीं कहा।"

उसने जवाब दिया—"उसका नाम मिस नेली है। वह एच० डी० हेडसन साहब की बहन की बेटी है।" इसके सिवाय और भी अनेक प्रश्नों के ठीक ठीक उत्तर उन्होंने दे दिये।

यह बात हमारे गुरू श्री सूफ़ी पृथ्वी सिंह जी साहब ने बहुत ठीक कही है कि वह दिन दूर नही है जब कि बालोंके द्वारा हरएक आदमी के भीतरी भेद और विचार मालूम किये जा सकेंगे। पति अपनी पत्नी के आचार की परीक्षा कर सकेगा। स्वामी अपने भृत्य की असल हालत जान लेगा। न्यायाधीश अपराधी का अपराध या निर्दोषन पन इस रीति से प्रकट करके न्याय बुद्धि सार्थक कर सकेगा। गवाहो की आवश्यकता नहीं रहेगी न बाल की बाल खीच कर गुमराह करने वालो के भँवर में पड़ कर भ्रम से अन्याय पथ पर जाने की किसी न्यायाधीश को आशङ्का रह जायगी। हमारे गुरुवर सूफ़ी पृथ्वी सिंह साहव और कहते हैं—

"इन बालों मे मनुष्य की सब अवस्थायें भरी पड़ी हैं। जैसे किसी सिर दर्द वाले रोगी के सिर से कुछ बाल मूँड़ कर नीरोग आदमी के सिर में बाँध दिया जाय और नीरोग आदमी के सिर का मूँड़ा हुआ बाल रोगी के सिर पर सटा कर बाँध दिया जाय तो कुछ देर मे नीरोगी का सिर दर्द करने लगेगा और सिर दर्द करने वाले की तकलीफ़ छू मन्तर हो जायगी।

इस कारण बाल को अपना हथियार बनाने में पहले बालों का संशोधन कर लेना चाहिये।

बालों को शुद्ध करना

किसी के सिर का बाल खौलते पानी मे दस मिनट तक डाल देना और बाद को ठंठा करके ज़मीन मे गाड़ देना। लेकिन ऐसी जगह गाड़ना कि वहाँ पानी नहीं पहुँचने पावे।

जिस समय दस मिनट तक खौलते पानी से बाल निकाले जायँ उसी दम ठंढा करके ज़मीन में गाड़े जायँ और पूरे सत्ताईस दिन बाद निकालकर साबुन से खूब धो दिये जायँ। जब उनमे चिकनाहट नहीं रहे और पहले का रङ्ग भी जाता रहे। तब वह व्यवहार करने लायक हो चुके समझना चाहिये।

अब इन बालों से बहुत काम हो सकते हैं। बिना दवा दारू के इन बालों से इलाज किया जा सकता है। डाक्टर ग्रेगरी का कहना है इन बालों से बहुतेरों के दिल की बात बताकर आदमी अन्तर्य्यामी कहला सकता है।

बालों पर प्रभाव डालना

बाल जब अपनी अवस्था छोड़कर यूनीवर्सल (ऊपर लिखी विधि से) हो जायें तब वह प्रभाव डालने योग्य हो जाते हैं। एक चौकी पर उन्हें रेशमी कपड़े में रखकर नजर, श्वास और फूंक द्वारा उनपर प्रभाव डाला जा सकता है।

मन में यही भावना करके उनपर इकटक नजर लगाना कि जिस रोगी के सिर पर यह बाल रखे जायँगे या जिसका शरीर छूवेंगे उसको स्वास्थ्य प्राप्त होने लगेगा। और इसी से वह पूर्ण स्वस्थ हो जायगा। यह साधन कम से कम एक घंटा और अधिक से अधिक जबतक चाहे करना चाहिये। प्रभाव डालना नजर से हो। या पास देकर हाथ से हो या श्वास डालकर हो जब बाल प्रभावापन्न हो जायँ तब उसी रेशमी कपड़े मे ऐसी मजबूती से बाँधे जावें कि उनमे हवा नही लगे। न किसीका हाथ उन बालों मे लगे। न वह ज़मीन पर रखे जावें न लोहा से छू जावें। रोगी खुद अपने हाथों से शरीर पर ऐसा बाँधे कि वह उसे छूते रहें और ऊपर से उसी रेशमी कपड़े को लपेट देना चाहिये अगर

रोग सिर से पॉव तक हो तो कई वार उन बातों को मालिश करके बग़ल मे बॉध दे। आराम हो जायगा।

स्वरोदय।

स्वर ज्ञान

संसार के प्राणी मात्र की श्वास क्रिया और उसकी अद्भुत शक्ति मनुष्य मात्र के लिये दुर्बोध ही नही बिलकुल अगम्य है। इसी कारण इसको अज्ञातशक्ति कहा जाता है। जाहिरा यह पञ्च भूत तत्व जो जगत के चराचर पदार्थों मे अस्ति से नास्ति पर्यन्त अर्थात उत्पत्ति से नाश तक यूनीवर्सल इंटेलिजेंस (Universal Intelligence) के रूप मे काम कर रहे हैं इन्ही की चैतन्य शक्ति इस जगत में जन्म, स्थिति और लय का कारण है। यही अनन्त सर्वोपरि सत्ताधारी, सबल चैतन्य पञ्चभूत तत्वो का बना हुआ है और उसका परिचालन प्राणी मात्र की श्वास प्रश्वास क्रिया से ही हुआ करता है। जो अभोक्ता आत्म स्वरूप से शरीर मे वर्त्तमान है यह पञ्चभूत तत्व आकाश, वायु, तेज, जल और पृथ्वी रूप में है यह अभोक्ता आत्मा भी उन्ही तत्वों का बना है और जगत मे जैसे और परमाणुओ के नियम से पञ्चभूत तत्व कार्य करके जगत की रचना मे चलायमान हैं। यह अभोक्ता आत्मा शरीर की रचना मे खुद पॉच ज्ञानेन्द्रियो द्वारा भोग्यता भोग कर रहा है इसके तीन भाग हैं सात्विक, राजस और तामस और इन तीनों के अलग अलग शरीर मे गुण मौजूद हैं।

जलचारी जन्तुओं को जैसे दो गलफड़े होते हैं थलचारियो के दहने और बायें दो फेफड़े होते हैं इन्ही दो फेंफड़ों से मनुष्य मात्र

हवा खींचकर भीतर लेते हैं। उसका असर नाक की राह मस्तिष्क पर पहुँचता है। और हर ,स्वास से, मस्तिष्क में तीन तीन नये विचार उपजते हैं। हर मिनट में ४८ से ५४ तक नये विचार मनुष्य के विचार मण्डल से बाहर आते हैं। इस तरह जगत में पंचभूत तत्व मनुष्य के श्वास रूप मे भीतर जाकर और पंचभूत उत्पन्न करते हैं जिनसे शारीरिक संसार और मनुष्य की शारीरिक दुनियाँ का सब काम होता रहता है। और इस सिद्धान्त से यह प्रमाणित होता है कि हर एक सांसारिक पदार्थ पञ्चभूत का ही है। (One in all and all in one) नाक के दाहने नथने से जो श्वास भीतर जाती और बाहर आती उसको नाड़ी का नाम पिगला है और बायें नथने से जिस नाड़ी द्वारा श्वास भीतर ली जाती और बाहर छोड़ी जाती है उसको ईड़ा कहते हैं। और दोनों नथनों से जब श्वास एक सी भीतर जाती और बाहर आती रहती है उसको सुषुम्ना कहते है।

इन श्वासों का चलना प्राणी मात्र का समान नहीं रहता। स्वास्थ्य अथवा दुःख, सुख, शोक, आह्लादादि के अवसर पर थकावट, विश्राम या दौड़ धूप के समय उनकी गति में बड़ा अन्तर होता है।

इस स्वर ज्ञान के आचार्य्यों ने हर एक श्वास की अलग अलग,संज्ञा करके उनके शुभाशुभ का निर्देश किया है जो सबके समझने और परीक्षा से सन्तोष लाभ करने के लिये हम यहाँ देकर पुस्तक को समाप्त करेंगे।

याद रखना चाहिये कि श्वास दोनों नथनों से अलग अलग चलते रहते हैं। श्वास स्वर दाहना चलता हो तो उसको सूर्य्य स्वर और बाँया चलता होय तो चन्द्रस्वर कहते हैं।

स्वरतत्व जानना ।

स्वर चलते समय किस तत्व का अधिकार है यह जानना हो तो उसके लिये नीचे उपाय बतलाते हैं:—

एक स्वच्छ काच लेकर उसकी पीठ पर काजल और पारा मिला हुआ लगाकर मुँह देखने का दर्पण बनाना चाहिये और उसको काठ या टीन या सुविधानुसार किसी फ्रेम में जड़ कर रख देना चाहिये ।

अब उसी आइने पर अपना स्वर निकालना चाहिये । जब सबेरे स्वर चले तब उसी आइने को कुछ देर नाक के सामने रखना । इतनी देर तक कि स्वास का आकार उसपर खिंच आवे । अब उसी आकार से पहचान की जाती है अगर आईने पर लकीर (रेखा) सी पड़ जाय तो वायुतत्व जानना चाहिये । अगर निशान अर्द्धचन्द्र अर्थात् चापाकार हो तो जलतत्व, चतुर्भुज के आकार का होवे तो पृथ्वी तत्व । गोल वृत्ताकार होवे तो आकाश तत्व, त्रिभुज के आकार होवे तो अग्नि तत्व, समझना चाहिये । इन आकृतियों के समझने में पहले कुछ कठिनाई होगी लेकिन समझदार बुद्धिमान आदमी अभ्यास बढ़ाकर उन्हे सहजही समझ सकता है ।

आध्यात्मिक विद्या का जिनको ज्ञान नहीं है या अनुभव भी जिनसे बहुत दूर रह गया है और मूढ़ ग्राह पर ही जिनकी समझदारी की गाड़ी बेरोक चली जाती है वह बिना प्रयोग अभ्यास या वाकिफकारी के इस विद्या की वारीकियो को ढोंग कहकर खिल्ली उड़ाया करते हैं उन निठल्लों से बात बहस या तर्क वितर्क करना हमारा अभिप्राय नहीं है । लेकिन उनसे भी इतना निवेदन कर देना है कि केवल तर्क की तलवार लेकर सबकी गर्दन रेतना ही कुम्हार के डोरे के समान अपना कर्त्तव्य न रखकर सच्चे

और ठंढे दिल से कुछ अभ्यास करके देखेंगे तो अपने मन में अपने उतावले;स्वभाव के तर्कों के लिये अवश्य पछतावेंगे।

ऊपर जो स्वर चलने की बात कह आये हैं उसके अच्छे अर्थात् शुभ और अशुभ का यहाँ कुछ विवेचन कर देना उचित समझते हैं।

स्वर चलने के जैसे तोन स्थान हैं मनुष्य की दशा भी तीन होती है जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्त। जाग्रत में सूर्य्य और चन्द्र दोनों स्वर चला करते हैं उन्हीं दो के गुण और फेर बदल की विधि और उचित अनुचित का विचार यहाँ हम विस्तार से देते हैं।

साधारणतः स्वर दाहना चलता है या बायाँ अर्थात् इस समय सूर्य्यसुर है या चन्द्र यह जिसको पहचानना हो वह अपनी नाक से साँस हथेली पर फेंककर देखना चाहिये। स्वास तो दोनों नथनो से बाहर होगी लेकिन एक मे जोर की दूसरे मे कमजोर। जिसमे से जोर की हवा हथेली पर पड़े वही स्वर चलता है कहा जायगा। इन स्वरो में दिन को सूर्य्य स्वर और रात को चन्द्र स्वर चलना कल्याणकारी है। स्वभावतः जो स्वर चल रहा है उसी की परीक्षा और उसका शुभ अशुभ भोगना हर भोक्ता का कर्त्तव्य है लेकिन लेखकों ने अपनी आवश्यकतानुसार स्वर बदलने अर्थात् सूर्य्य स्वर है तो चन्द्र कर देने और चन्द्र है तो सूर्य्य कर देनेका विधि कही हैं। वह विधि यही कि दाहना स्वर चलता है तो दाहना करवट सोने से बायाँ स्वर चलने लगेगा और बायाँ चलता हो तो बायें करवट सोने से दाहना चलने लगेगा। या रूई नथनों में रखने से भी स्वर बदल सकते हैं। यह सब ठीक वैसे ही हैं जैसे बहुतेरे लोग अपनी यात्रा सफल करने के मतलब से पानी भरा पात्र लिये किसी आदमी को चलने के समय सामने खड़ा कर देते हैं या सम्मुख आयेउ दधि अरु मीना।

कर पुस्तक हुई विप्र प्रवीना के सगुण पूर्ण करने को मछली वाली को द्वार पर रोक रखते हैं या दहने बायें द्वार पर दो ब्राह्मण सारस्वत और लघु कौमुदी बगल मे या हाथ मे लिये खड़े होते 'हैं। हमारे दयार्द्र हृदय, दानी मानी महाराज विलासपुर मान्यवर महाराजा सर विजय चन्द बहादुर के० सी० आई० ई० जब कहीं यात्रा में जाते तब यह आज्ञा होती कि कोई ब्राह्मण उस समय द्वार पर अपना मुँह पहले न दिखलाये। जब मुझे इस गुप्त हुक्म की खबर लगी तब मैंने पूछा कि बात असल में क्या है। महाराजा बहादुर ने स्वयम् अपने मुँह से कहा—"बाबू जी बात ऐसी है कि महारानी साहबा को एक समय प्रसव पीड़ा हो रही थी। ब्राह्मणो ने कहा कि सरकार इस समय लड़का होगा तो महा अनर्थ हो जायगा। लग्न बहुत ही खराब है। अमुक समय तक प्रसव रोक दिया जायगा तो बड़ा प्रभावशाली श्रीमान् का प्रभुता वान उत्तराधिकारी सन्तान पैदा होगा। उन लोगो ने साथही उस समय महारानी साहबा को बरफ में डुबो रखकर प्रसव रोकने का प्रबन्ध किया" लेकिन कई घंटो की यातना पर जो सन्तान और माता की गति हुई वह लिखते कलेजा फटता है। मैं नही कह सकता कि उन पंडितो को कैसे यह सब देखा गया। महाराजा साहब का तो उनपर इतना विश्वास था कि वहाँ अपनी बुद्धि से कुछ भी काम लेना उचित ही नही समझा जिसका परिणाम दोनों की मृत्यु सामने आयो। उसी दिन से श्रीमान् सरकार ने ब्राह्मणो का मुँह न देखने की प्रतिज्ञा करली बहुत अनुनय विनय पर दयावान महाराजा बहादुर ने ब्राह्मणों की वृत्तियो को बरकरार रखा। सब धर्म्म कर्म जारी ही रहा। उनसे सब काम कराने लगे लेकिन यात्रा के समय ब्राह्मणों का मुँह न दिखाने की सख्त मनाही थी। यह आज्ञा रियासत के ब्राह्मणो के लिये ही थी। इसी कारण जब

महाराजा साहब कहीं यात्रा को निकलते थे तब वहाँ के उपस्थित ब्राह्मण मानो मुँह छिपाकर गुप्त हो रहते थे ।

कहने का तात्पर्य यह कि जबरदस्ती स्वभाव विरुद्ध प्रकृति के विरुद्ध अपनी शक्ति से शकुन देखकर कार्य्य करना कुछ फलदायक नहीं हो सकता । साथही उसका फल चाहे जो हो इतना तो प्रत्यक्ष फल मिल जायगा कि स्वर के इस तरह बदलने से स्वास्थ्य पर धक्का लग सकता है । क्योंकि जो अज्ञात शक्ति शरीर में काम कर रही है जिसको अभोक्ता, अजर, अमर, आत्मा कहते है उसकी गति जब हम नहीं जानते उसका मर्म नहीं समझते तब उसके रोकने और रोककर मङ्गल का विफल प्रयास महा हानिकर है इसमें कुछ भी सन्देह नहीं है ।

इतनी बात याद रखने की है कि सूर्य्य स्वर से चन्द्र स्वर का रात के चलना मङ्गलकारी है । कहावतो में तो यह है कि—"खा के मूते सूते बाम काहे को वैद बसावे गाम ।" लेकिन सौ वर्ष जीने के नुसखे जो प्राकृतिक शक्ति के जानकार बतलाते हैं उनमें यह है कि दाहने करवट सदा सोने से आदमी सौ वर्ष तक जरूर जीवित रहता है इसका अर्थ यही है कि सदा सोते मे चन्द्र स्वर चलना मङ्गलकारी है ।

अगर सोते से उठते ही आदमी अपना सुर देखले और जो स्वर जारी हो उस ओर का हाथ चुम्बन करके उसी ओर का पाँव पहले पहल धरती पर धरे तो सारा दिन सुख से बीतेगा ।

जब शोक और दुःख से चित्त डाँवाडोल हो तो आदमी अपना चन्द्र स्वर चलावे सब शोक दुःख हवा हो जायँगे ।

जिस किसी बड़े आदमी से कुछ मतलब साधना हो या न्यायाधिकारी को समझाना हो या उसके पास प्रार्थना पत्र लेकर जाना हो तो देखना चाहिये कि अपना कौन स्वर चलता

है। वह चलता स्वर उस आदमी की ओर करके खड़े हो या बिनती करो तो वह कृपा पूर्ण व्यवहार करेगा प्रार्थना विफल नहीं जायगी।

कार्य सिद्धि

जिस कार्य्य के लिये प्रार्थना करना है चलते समय देखना चाहिये कि कौन स्वर चलता है। यदि सूर्य्य स्वर है तो पहले दाहना कदम उठा कर तीन कदम चलने के बाद ठहर जाना। फिर थोड़ी ही देर पर उसी कदम को उठा कर चलना चाहिये अवश्य कार्य्यसिद्धि होगी।

कुस्ती, पञ्जा लड़ाना, काव्य पढ़ कर प्रतियोगिता करना आदि में विरोधी को पराजित करना है तो सूर्य्य सुर में चलना चाहिये निश्चय सफलता मिलेगी। चन्द्र सुर में सफलता मुँह छिपा कर भाग जायगी।

पत्नी वशीकरण

शुक्ल पक्ष की नवमी को जब उस दिन रविवार हो जब पति का स्वर सूर्य्य जारी रहे और पत्नी का चन्द्र स्वर तब सम्भोग होने से पत्नी सदा सहानुगामिनी रहेगी।

पुत्र वा कन्या इच्छानुसार

संसर्ग के समय पुरुष का सूर्य्य और स्त्री का चन्द्रमा स्वर चलता हो तो सुन्दर बालक पैदा होगा। अगर संसर्ग काल मे स्त्री पुरुष दोनों का स्वर दाहना चलता हो तो दीर्घजीवी पुत्र जन्म लेता है अगर दोनों का स्वर बायाँ चलता होवे तो आयुष्यमती कन्या जन्म लेती है। अगर पुरुष का बायाँ और स्त्री का दाहना स्वर हो तो कम उम्र वाली कन्या जन्म लेती है।

जल तत्व में गर्भ धारण होने से नसीववान पुत्र होता है।

पृथ्वी तत्व में गर्भ धारण होने से नसीबवती कन्या का जन्म होता है। वायु तत्व मे गर्भ रहने से विकलाङ्ग सन्तान का जन्म होता है। अग्नि तत्व मे गर्भ धारण होने से सन्तान के जन्म लेते ही मा मर जाती है। अगर आकाश तत्व मे गर्भ धारण होवे तो बालक गर्भ में ही मरे। अगर बाहर आवे तो बालक और माता दोनो मर जाते हैं। सुषुम्ना स्वर चलते में गर्भ रहे तो जौआँ सन्तान पैदा होवे।

यदि किसी रोगी का स्वर सूर्य्य चल रहा है तो उसका चन्द्र स्वर हो जाय तो रोग दूर हुआ जानना चाहिये। चन्द्र स्वर स्वास्थ्य का चिन्ह है। अगर रोग तरुण है उसी के वास्ते यह विधि है।

रोगी का सम्बन्धी अगर कोई रोगी के विषय में प्रश्न करे तो प्रश्न कर्त्ता बन्द स्वर की ओर से चलते स्वर की ओर बैठकर अथवा प्रश्न करने वाला और साधक एकही स्वर में हों तो रोगी शीघ्र स्वास्थ्य लाभ करेगा।

यात्री के प्रश्न

अगर किसी यात्री के विषय में कोई प्रश्न करने आये तो देखना चाहिये कि साधक और प्रश्न कर्त्ता दोनों का दाहना स्वर चलता है तो यात्री बहुत जल्द लौट आवेगा। अगर दोनों का बायाँ स्वर चलता है तो बहुत देर पर लौटेगा। अगर दोनों के विरोधी स्वर हों तो यात्री यात्रा में ही बहुत भुगतेगा।

अगर प्रश्न करने वाला चलते स्वर से आकर बन्द स्वर में बैठकर पूछता है तो उसका काम हरगिज सिद्ध नहीं होगा। बना बनाया काम बिगड़ जाना सम्भव है। अगर प्रश्न करने वाला बन्द स्वर की ओर से आकर चलते स्वर मे पूछे तो उस काम में चाहे जितनी निराशा हो वह जरूर सिद्ध होगा।

गर्भ प्रश्न

अगर प्रश्नकर्त्ता किसी के गर्भ के विषय मे पूछता है तो वह स्वर की ओर बैठ कर पूछने से गर्भ ठहरेगा नही तो गिर जायगा।

अगर प्रश्न के समय साधक का बाँया स्वर चलता है तो लड़की होगी और दाहना स्वर चलता है लड़का होगा।

लाभ वा हानि

अगर प्रश्न करने वाला नफा होगा या नुकसान सवाल करे तो देखना चाहिये कि साधक का चन्द्रमा स्वर चलता है और पूछने वाले का भी बायाँ ही स्वर है तो जरूर उस काम मे लाभ धरा हुआ है। अगर प्रश्नकर्त्ता का चन्द्र स्वर और साधक का सूर्य है तो अन्त मे लाभ होगा पहले हानि होने पर अगर वह धीरज धर कर आगे बढ़ता जायगा तो परिणाम में लाभ पावेगा।

विवाह प्रश्न

अगर प्रश्नकर्त्ता दाहिनी ओर बैठ कर प्रश्न करता है और साधक का सूर्य्य स्वर जारी है तो ब्याह बहुत जल्दी होगा।

प्रेमी से मिलान

अगर प्रश्नकर्त्ता चलते स्वर की ओर बैठ कर पूछता है कि प्रेम पात्र से मिलान होगा या नही तो जरूर मिलान होगा और इसके सिवाय प्रश्न होने पर मिलान नही होगा।

अगर प्रश्न कर्त्ता और साधक दोनो का चन्द्रमा स्वर चलता है तो मिलान मे बड़ी कठिनता बड़े बड़े विघ्न है।

चोरी गया माल

अगर प्रश्न के समय साधक का चन्द्रमा स्वर है तो मिलेगा नही तो नही मिलेगा।

वृष्टि प्रश्न

अगर प्रश्न हुआ कि पानी बरसेगा या नहीं तो साधक को ठीक देख लेना चाहिये पूछने वाले ने चन्द्र स्वर में पूछा है तो वर्षा जरूर होगी। अगर सूर्य स्वर में पूछा है तो नहीं होगी।

अगर पूछने वाले और साधक दोनों के चन्द्र स्वर हैं तो वर्षा बहुत जल्द होगी।

अवशिष्ट भाग।

अब हम मेसमेरिजम को इस पुस्तक के अवशिष्ट भाग में हिप-नोटिजम की कुछ बातें कह कर मोहिनी विद्या को समाप्त करेंगे।

पहले हम बतला आये हैं कि मेसमेरिजम और हिप्नोटिजम में क्या भेद है। वस्तुतः हिप्नोटिजम ही मोहिनी विद्या कहने के योग्य है। इस हिप्नोटिजम मे मेसमेरिजम से बहुत अधिक सामर्थ्य है। मेसमेरिजम मे नजर डालकर और हाथों से पास करके काम किया जाता है। छूकर भी प्रभाव डाला जाता है लेकिन हिप्नो-टिजम का बल इतना है कि शब्दों में उसका वर्णन नहीं हो सकता। आँखो देखने और अनुभव करने से ही उसके बल का पता चलता है। जब आदमी हिप्नोटाइज हो जाता है उस पर मोह का अर्थात् मोहिनी विद्या का जो असर होता है उससे बड़े बड़े काम होते हैं। इसमे अर्थ और अनर्थ दोनो होते हैं यहाँ इसके तीन दृष्टान्त देकर हम इस भाग को समाप्त करते हुए मोहिनी विद्या पुस्तक की इति करेंगे।

पहला दृष्टान्त पुराना है और आजकल की नई रोशनी के लोगो मे वह हँसी की दृष्टि से देखे जाने के योग्य है। तौ भी उपदेश प्रद होने के कारण हम कह देना चाहते हैं:—

एक मेढ़क और एक साँप मे यह विवाद हुआ कि किसका विष बढ़कर है इसकी परीक्षा की जाय। अन्त मे यही बात ठहरा

कर साँप पानी में गया कि किसी आदमी को वह काटे और काटते ही पानी पर मेढ़क तैर जाय दूसरी बार मेढ़क काटे और साँप तैर जाय तब देखा जाय कि किस का विष अधिक चढ़ता है।

एक आदमी घाट पर स्नान कर रहा था। उसको जल में साँप ने काट खाया। उसी समय जब ऊपर आकर चारों ओर देखने लगा कि किसने पानी में हमको काटा है एक मेढ़क पानी पर उतरा गया। लोगों ने यही समझा कि इसी मेढ़क ने काटा था। थोड़ी देर पर जो रक्त बह रहा था धोकर आदमी फिर नहाने लगा। इस बार मेढ़क ने दूसरे को काटा और साँप पानी पर उतरा गया। लोगों को यह खयाल हुआ कि साँप ने काटा है। वह आदमी पानी से ऊपर आते ही बेहोश होने लगा। लहर आने लगी। झाड़ फूँक होने लगी। लेकिन उसके मन मे आया कि साँप का काटा आदमी तो बचता ही नहीं। दवा और उपचार खूब होता रहा। अन्त को वह मर ही गया।

एक दूसरी घटना बिलकुल सच्ची और हमारी आँखों देखी हुई यह है कि हमारे गाँव में एक सुनार रहता था। जिसका नाम गौरी शंकर था। वह एक क्षत्रिय के घर कोयला खरीदने गया। हमारा घर गहमर गाँव में है वहाँ कोयले की कोई दूकान नहीं है। गृहस्थी मे लकड़ी जलाने से घर घर चूल्हे में जो कोयला निकलता है उसीको पानी से बुझाकर कुछ लोग रख देते हैं। इकट्ठा करके वही सुनारों को बेच डालते है। इसी तरह के कोयले खरीदने गौरी शंकर गया था। दाम दे चुकने पर कोयला जब अपने बोरे मे उठाने लगा तब हाथ से खींच खींच कर भरने लगा। भरते समय जल्दी से उसने उँगली खींच ली और चौंक कर हाथ झाड़ता हुआ बोला—"अरे यार इसमें अभी तक आग है कोई लुत्ती पड़ी है

क्या ! हमारी तो उँगली ही जल गयी।" गृहस्थ जो पैसा गिनकर रख रहे थे हँसते हुए बोले —"नहीं भाई पानी इतना बरस गया है अबतक इसमें आग ही बनी है।"

अब लापरवाही से सुनार फिर कोयला बोरे में भरने लगा और मनमें समझा कि कोई चिनगारी जरूर रह गई होगी जिससे उङ्गली जली है। जब बहुत सा कोयला उठाकर पेंदे का निकालने लगा। तब देखा तो वहाँ एक काला बिच्छू पड़ा है। अब उसे देखते ही गौरी शङ्कर को बिच्छू का विष चढ़ा और उङ्गली झाड़ कर छटपटाने लगा। इतनी देर तक वह उङ्गली में आग की चिनगारी लगी समझ कर जो भूला हुआ था। अब उसे बिच्छू का डङ्क समझ कर उसका पूरा पूरा विष अनुभव करने लगा। बिच्छू का डङ्क झाड़ने वाले पहुँचे लेकिन वह उतरा नही तब व्याकुल होकर हमारे यहाँ पहुँचा। उस गाँव मे जब हम रहते थे तब बरसात के दिनो में बिच्छू के डंक से तड़पते हुए रोगी बहुत आराम करते थे उनको मैं जब दवा लगा या खिला देता था तब प्रसन्न होकर खुशी से चले जाते थे। जो बड़ी वेदना से चारपायी पर लादकर आते थे उनको भी दवा से लाभ होतो और बाद को पैदल घर जाते थे। गॉव मे इस बात की शोहरत थी। उसीके अनुसार गौरीशंकर भी पहुँचे उनको दवा खिलायी जब उनका विष उतर गया तब अपना बीता सब दुःख हमसे कह गये थे।

तात्पर्य्य यह कि सामने जब तक नही देखा तबतक वह हिप्नोटाइज नही हुए थे जब देखा तब हिप्नोटाइज ऐसे हुए कि पूरा असर हो गया।

अब तीसरी परीक्षित और ताजी घटना कहकर हम यह अन्तिम अध्याय समाप्त करेंगे वह यो है:—

काशी के हिप्नोटिजम वाले एक सुविख्यात साधक के पास

एक दिन दो सज्जन आकर बड़े तपाक से कहने लगेः—देखो महराज अब आपकी शुहरत हो चुकी। हम दोनों आपकी परीक्षा लेकर उस शोहरत को खूब बढ़ाने या नेस्तनाबूद करने के वास्ते ही आये हैं। अगर आप में कुछ विद्या है तो हम लोगों को अपनी प्रत्यक्ष करामात दिखा दीजिये फिर हमलोग चारों ओर आपका सुयश फैलाने मे और पायनियर बन जायेंगे। और घर घर आपके महत्व की डुग्गी पीटते फिरेंगे। अगर नहीं दिखला सकते तो ठीक इसके उलटा होकर आपको देश भर मे ढोंगी होने का बिगुल बजाने लगेंगे। और पुराना ठग कह कर परिचय देंगे। उन दोनों मे से एक तो बीस बरस का गरम खून वाला युवा था दूसरा था अड़तीस बरस का अकड़बेग।

हिप्नोटिजम वाले ने सलाह से यही कहा कि अगले सोमवार को आपलोग तीसरे पहर के बाद से आवें। यही राय हुई कि अकड़बेग को हिप्नोटाइज करके मेसमेरिक महाशय अपनी विद्या की सत्यता का प्रमाण देंगे।

उस सोमवार को सबेरे ही साधक महाशय बीस बरस के युवक से मिले और अपने साथ चलकर एक घंटा अपना समय देने के वास्ते कहा, युवक देवता मिजाज के बड़े गरम होने पर भी सत्य के बड़े पक्के खोजी थे। उनको सच्ची हकीकत जानने की इतनी उतावली थी कि अपने यारों के साथ मौज मारने का सब लोभ छोड़कर साधक के साथ चल दिये।

साधक देवता युवक को साथ लिये नारियल बाजार में गये और श्री सीताराम की दूकान से एक अच्छा नारियल चुन कर खरीदा। युवक को देकर साथ हो लिये जब अपने घर को चले तब आठबज चुके थे। वहाँ से सीधे दशाश्वमेध घाट जाकर महाराजा बहादुर जम्बू की रणवीर छात्रावास वाली कोठी के फाटक पर

पाव भर असल काश्मीरी शहत बोतल में खरीद कर युवक के हाथ मे दिया। दोनों महाशय नारियल और शहत लिये हुए अपने घर विक्टोरिया पार्क मे पहुँचे तब नव बज गया। पसीना चल रहा था। बैठके मे पहुँच कर हाथ मे काच के दो गिलास दिये और नारियल तोड़ कर उस गिलास मे फल का पानी रखने को कहा।

युवक ने आज्ञानुसार काम किया और अपने हाथ से नारियल का पानी निकाल कर काच के गिलास मे रख दिया। उसको अब शहत मे मिलाकर एक दिल करने का काम भी साधक के कहे अनुसार युवक ने किया।

और एक बहुत बड़े बोतल मे उसे भरकर काच का कार्क जकड़ कर ऊपर से सील मुहर कर दी।

एक बक्स मे उसे बन्द करके चाभी भी उसकी साधकने युवक को दे दी और कह दिया कि ठीक समय पर तीसरे पहर आवें। जिस समय आने को अकड़बेग भी कह गये हैं। उसीके अनुसार काम हुआ। युवक देवता घर चले गये।

ठीक समय पर अकड़बेग मेसमेरिष्ट के यहाँ पहुँचे। देखते ही साधक मेसमेरिष्ट ने कहा—"आज मैंने आपके वास्ते बहुत बढ़िया अंगूरी शराब* मँगाकर रखी है। मै जब महाराज प्रताप सिंह बहादुर का दर्शन करने उस समय काश्मीर गया था जब वहाँ के रेजीडेंट साहब को खून करने के लिये महाराजा बहादुर पर कलंक लगा था। वही से शराब लाकर रखा था वही आज आपको भेंट करेंगे।" साथ ही आलमारी मे से बोतल शील मुहरबन्द निकाल कर दिखाया। युवक ने झट उठा लिया लेकिन अकड़बेग

* अकड़बेग देवता शराब पीने वाले काशी के पियक्कड़ों में इतने ही सुयशवान थे। जितने हास्यरस की कविता में गौड़ जी हैं।

कहाँ मानने वाले थे। उन्होंने युवक को जोश में दबोच लिया और जबरदस्ती बोतल छीनकर चारों ओर ताकने लगे। साधक ने उसको खोलने का उपाय कर देते हैं घबराइये नहीं कहकर खोल दिया और एक गिलास में आधपाव देकर बाकी ठीक उसी तरह बन्द करके आलमारी में रखकर चाभी युवक मित्र के हवाले कर दी।

अकड़बेग गट गट करके पी गये। और रूमाल से मुँह का पानी पोंछते हुए बोले—"अरे यार शराब काहे को यह तो शरबत है। लेकिन बड़ी लज्जत है इसमें कुछ सन्देह नहीं।"

साधक ने कहा—"यही तो इसमे बहादुरी है फिर अङ्गूरी चीज है पीने में इतना मधुर लेकिन थोड़ी ही देर में आटा दाल का भाव मालूम हो जायगा। घबराते क्यो हैं?

यही सुनकर पीने वाले लघुशंका के लिये बाहर चले साधक भी यह कहते हुए साथ हुए कि कहीं नशे में गिर न पड़ो यार नहीं तो बड़ी आफत होगी। उलटे लेने के देने पड़ेगें। फिर लौटते ही अकड़बेग ने बड़ा गरम है भाई कहकर कपड़े उतार फेंके। साधक ने तुरत गाजीपुर के ढोंढा साहु का गुलाब जल नम्बर १ वाला बोतल उठाकर उनके कपार पर यह कहते हुए डाल दिया— "अंगूरी शराब का नशा है भैया हँसी खेल नही है।"

अकड़बेग मन में कहने लगे—"नहीं जी एक्सा नम्बर वन के बोतल हमने कितने ही खाली कर डाले। जानसन नेपियर की ह्विस्की पचा डाली इस शरबती की बिसात क्या है। लेकिन यह कहते हैं पचास बरस का रखा हुआ काश्मीरी शराब है। इटालियन वाइन वगैरः तो पुराने होने ही की वजह से महँगे और नशे वाले हुआ करते हैं।

अब साधक और युवक बन्धु दोनों अकड़बेग को खुशी खुशी

ठंढे मे घर जाने को अनुरोध करने लगे। और कहा—"यार नशा बहुत गहरा है टम टम बड़ी खबरदारी से हाँक कर जाना भला!"

अकड़बेग के साथ उनका कोचवान मुँह लगा भोदू सिंह भी साथ ही आया था। उसने सब सुन लिया इस वास्ते बड़ी खबरदारी से जाने लगा। अकड़बेग गाड़ी हाँकते हुए गुदौलिया के रास्ते चले जाते थे। सत्यनारायण के मोड़ पर चढ़ते समय कोने के बिजली वाले खम्भे से गाड़ी ज़रा टकरा गयी। भोदू ने कहा—"आपको नसा बहुत हो गया है मालिक! रास हमको दीजिये।"

अकड़बेग ने लगाम भोदू के हाथ मे दे दी घर पहुँचने पर अकड़बेग बिछौना देखते ही भहरा पड़े। उनकी यह दशा देखकर मालकिन बोली—"आज फिर उसी तरह ढारि आये हो देखती हूँ।"

अकड़बेग पर सोलहो आने नशा सवार हो गया। होली पर जैसे आस्मान मे उड़ जाते थे वैसी ही दशा हो गयी। किसी तरह रात कटी और उनके पियक्कड़ पने का भी बिहान हो गया। दिन उगने पर जब अकड़बेग जागे तब सीधे साधक के पास पहुँचे उस समय युवक मित्र भी वहीं बतकूचन कर रहे थे। देखते ही बोले—"यार कल्ह तो अंगूरी ने तुम्हारे ऊपर गजब ढा दिया था। मालूम होता है तुमको अंगूरी से जैसा नशा होता है वैसा और किसी से नहीं होगा।"

इस व्यङ्ग पर अकड़बेग तो चीरे चार बघारे पाँच हो गये आँखें कपार पर चढ़ाकर बोले—"अरे यार पूछो मत यह मेसमेराइजर तो हैं ही ऊपर से जानलेवा नशा करने वाले माल भी रखते हैं। न जानें कहाँ का अंगूर काश्मीरी लाकर पिला दिया। हम बोतलें ब्राण्डी की कितनी ही खाली कर चुके ह्विस्कियाँ हमसे हैरान हो चुकीं लेकिन यह अंगूरी तो ग़ज़ब की अंगूरी निकली।"

इतना सुनने पर साधक और युवक दोनों ठहाका मार कर हँसने लगे। अब कुछ दाल में काला समझ कर अकड़बेग बोले "क्यों यार यह बे मौके की सहनाई कैसी ? क्या मतलब है तुम लोगों के इतना हँसने का।" "अरे यार यह जो चीज तुम्हें दी गयी इसमें तो नशा का नाम ही नहीं शहत का शरबत था"

अकड़बेग ने इसपर विश्वास ही नहीं किया कहा—"वाह बातें ऐसी क्यों करते हो यार उसके नशे से मैं रात भर परेशान रहा और तुम ऐसी बे पते की कहने लगे इसको कम से कम हम कहाँ मान सकते हैं।"

साधक की बात पर जब सरसो भर भी विश्वास अकड़बेग का नहीं हुआ तब बोतल का बचा हुआ माल निकाला गया और सामने पहली रीति से चीज बनाकर दिखायी गयी तब अकड़बेग के मन का भ्रम दूर हुआ।

अब अकड़बेग ने पूछा—"तो इतनी गर्मी और इतना नशा के मारे हम परेशान क्यों हुए ?"

साधक ने कहा—"यह सब सजेशन (Saggestion) का ही प्रभाव है इसीको (Saggestive Science) अर्थात् Hypn otism) हिप्नोटिजम कहते हैं।

हिप्नोटिजम ही वस्तुतः मोहिनी विद्या या सम्मोहन शास्त्र है। यह इच्छा शक्ति से ही होता है। इसमें दृष्टि शक्ति या पास देने आदि का कुछ काम नही लेकिन पहले मेसमेरिजम मे पार दर्शिता होने पर ही यह शक्ति इच्छा शक्ति के अभ्यास से प्राप्त होती है।

पुस्तकें मिलने का पता।

राजस्थान भारती पुस्तकालय, ब्यावर (राजपूताना).